कुपात्रो को दान न देवे सुपात्रो को देवे.

ACCEPTED HERE

Scan & Pay Using PhonePe App

keshrinandan jha

आपके दान की हमे अत्यंत आवश्यकता हे.

ओ३म्

भारत में भयंकर-
ईसाई षड़यंत्र

लेखक—

श्री ओमप्रकाश जी [illegible]

प्रधान सेनापति
सार्वदेशिक आर्यवीर दल, देहली

प्रकाशकः—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
श्रद्धानन्द बलिदान भवन,
श्रद्धानन्द बाजार देहली ६

[illegible] बार [illegible]०००
विक्रमी २०११
मूल्य =)

॥ ओ३म् ॥

हमारे पतन-काल की एक झांकी

आर्य जाति के नवयुवको ! क्या आपने अपने इतिहास के पन्नों में कभी यह भी खोजने का कष्ट किया है कि संसार में चक्रवर्ती राज्य करने वाली जाति का ऐसा अधःपतन क्यों हुआ कि वह अपने उन पवित्र स्थानोंकी भी रक्षा न कर सकी कि जहां एक दिन उसके पूर्वजों ने वेद-शास्त्रों के ईश्वरीय ज्ञान का प्रकाश कर मानव जगत् का कल्याण किया। क्या मिश्र की नील नदी की घाटी में बसे नगरों, पहाड़ों, झीलों आदि के नामों, ईरान, अफगानिस्तान, टर्की, ब्रह्मा, जावा-सुमात्रा, स्याम आदि देशों के इतिहासों ने कभी आपके कानों में यह भी कहा है कि वहां भी कभी आपके पूर्वज रहते थे ? यदि विश्वास न हो तो आज भी जावा सुमात्रा के घरों में रामायण तथा महाभारत की कथायें आप जाकर सुन सकते हैं।

क्या भूत पर दृष्टि-पात किये बिना ही आगे बढ़ने का विचार है या यूं कहूं कि क्या इसी प्रकार आत्म-घात करते हुये गंगा यमुना की गोद में विलीन हो जाने का पागलपन सिर पर सवार है ? एक बार नहीं सैंकड़ों बार ठोकर खाने के पश्चात् भी पुनः ठोकर खाने में क्या आप अपनी वर्तमान बुद्धिमत्ता पर विश्वास करने का साहस कर रहे हैं ? याद रहे यह आपकी तन्द्रा आपको कहीं का न छोड़ेगी और आपको यहूदियों एवं पारसियों के रूप में दर-दर का भिखारी बना देगी कि जिनका न अपना घर है न राष्ट्र।

हम रण क्षेत्र में कभी नहीं हारे

जीवात्मा को अमर समझने वाले तथा पुनर्जन्म में विश्वास करने वाले आर्य नवयुवकों को कभी मृत्यु ने भयभीत नहीं किया। युद्ध-क्षेत्र में पीठ दिखलाने को यह सदैव अपना अपमान समझते रहे हैं। तलवार बन्दूकें इनका सिर कभी नीचा न कर सकीं; परन्तु जब कभी इन्हें पराजय स्वीकार करनी पड़ी तो उसका कारण इनके ही घर की फूट, सामाजिक कुरीतियां अन्ध-विश्वास, राजनैतिक अदूरदर्शिता आदि बातें रहीं। उदाहरणार्थ मुसलमान भारत में विजयी होने के पश्चात् सदियों तक यहां राज्य कर गये; परन्तु आर्य जाति ने कभी उनकी तलवार के आगे सिर नहीं झुकाया और अन्त में उनको परास्त कर अपना झण्डा खड़ा कर दिया; परन्तु इसके विपरीत इसकी सामाजिक भूलों ने बाहर से आये मुट्ठी भर मुसलमानों को नौ करोड़ बना यहां अपने ही हाथों अपने देश को खण्डित कर संसार का सबसे बड़ा मुस्लिम राज्य बना दिया।

महान् आश्चर्य

आश्चर्य तो इस बात का है कि विदेशी दासता से मुक्त हो जाने के पश्चात् भी आज हमारे घर में आग लगाई जा रही है; और हमारी स्वतन्त्रता को उसमें भस्मीभूत करने के षड़यन्त्र रचे जा रहे हैं; और हम और हमारी सरकार उस ओर ऐसी उपेक्षा प्रदर्शित कर रहे हैं कि जिसके कुपरिणामों का अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता है। कम्युनिष्ट, मुसलमान तथा ईसाई तीनों आज हमारी स्वतन्त्रता को ही नहीं अपितु हमारी सत्ता तक को ही समाप्त करने पर तुले बैठे हैं। तीनों को ही विदेशों से अपार धन-राशि इस कुकृत्य के निमित्त प्राप्त हो रही है। सारांश में ! हमारी आंखों के सामने ही हमारे घर में बारूद बिछाई जा रही है और हम इसके विरोध में केवल

समाचार-पत्रों के यदा-कदा कुछ कालम काले कर देने में ही इतिश्री अर्थात् अपना कर्तव्य-पालन समझ बैठे हैं। आत्म हत्या की कैसी होगी यह करुणा-कहानी कि जिसकी रचना आज हमारी मूर्खता तथा अदूर-दर्शिता कर रही है।

स्थिति की भयंकरता

जयचन्द आदि कुछ देश-द्रोहियों की काली करतूतों का परिणाम तो हमारी सदियों की दासता, बहिनों का अपहरण, हमारे असंख्य धन जन की हानि, हमारे धर्म, संस्कृति, भाषा, साहित्य तथा इतिहास का बिनाश तथा मातृ भूमि का विभाजन हमारे उज्ज्वल इतिहास में कालिमा बन हमारे स्वाभिमान को प्रत्येक क्षण ठेस पहुँचा रहा है; परन्तु आज देश में एक जयचन्द नहीं अपितु करोड़ों ऐसे जयचन्द भरे पड़े हैं जो खाते, पीते, सोते यहां हैं और उनके हृदय तथा मस्तिष्क अन्य देशों के हित में बेचैन रहते हैं। इन की संख्या जिस गति से बढ़ रही है वह अनुमान से परे है। मुख्यतः ईसाई पादरियों ने स्वतन्त्रता की प्राप्ति के पश्चात् यहां जो जाल बिछाना प्रारम्भ किया है वह हमारी सरकार, हमारे समाज, हमारे धर्म तथा हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा को सीधी चुनौती है। इनकी गतिविधियों से प्रतीत होता है कि भारत में मुसलमानों की पाकिस्तान के रूप में विजय को देख कर इनके मुख में भी पानी भर आया है, और इन्होंने भी जिन्नासाहब के पद-चिन्हों पर चलने का दृढ़ निश्चय कर लिया है।

परन्तु शोक कि आज देश की आम जनता को इनकी कुचालों का आभास तक नहीं है। अतः डंक मारने की सामर्थ्य प्राप्त करने से पूर्व ही नाग के बच्चे को ठिकाने लगा दिया जाय—इस उद्देश्य को सन्मुख रखकर मैं समय, सामर्थ्य तथा साधनों के सीमित होते हुये भी इन साँप के बच्चों को प्रकाश में लाना अपना कर्तव्य समझता हूँ। इस छोटी सी पुस्तिका में इनके षडयन्त्रों के प्रति केवल संकेत मात्र ही मैं

कर सकूंगा; परन्तु दृढ़ विश्वास है कि समय के थपेड़ों से सचेत आर्य नवयुवक अब इशारे मात्र पर अपने कर्तव्य-पालन के निमित्त दृढ़ प्रतिज्ञ हो जायेंगे।

ईसाईयों का असली स्वरूप

भारत में ईसाइयों की भोली आकृति, मीठी वाणी, सेवा भाव, आकर्षक व्यवहारिकता तथा अहिंसात्मक उपदेश शैली को देख कर यहां के निवासियों के हृदयों में इनके प्रति एक विचित्र ही भ्रान्त धारणा उत्पन्न हो गई है। यहां तक कि हमारे बहुत से अबोध व्यक्ति इनकी सेवाओं की प्रशंसा में न जाने क्या २ कह जाते है। उन्हें ज्ञात नहीं कि जिस प्रकार एक चीता अपने शिकार अथवा शत्रु को देख कर उसके प्रति उपेक्षा तथा भोली मनोवृत्ति तब तक ही प्रकट करता है जब तक कि उसे आक्रमण करने का सुअवसर प्राप्त न हो जाय। ठीक इसी प्रकार लम्बे २ चोगों के अन्दर हाथ में माला लिये तथा नीची दृष्टि किये ये बगुला भगत पादरी लोग कितना भयंकर, निर्दयी तथा कठोर हृदय लिये फिरते हैं इसका परिचय तभी मिल पाता है कि जब इन्हें खुलकर खेलने का अवसर प्राप्त होता है। उस समय ये अपने से भिन्न धर्मावलम्बियों को अपने चंगुल में लाने के निमित्त जिन साधनों का सहारा लेते हैं उन्हें देखकर पशुता भी लज्जावश सिर नीचा कर लेती है।

ईसाइयत का सही चित्रण इटली, फ्रांस, स्पेन, जर्मनी, ब्रिटेन, अफ्रीका आदि देशों के इतिहास में देखने को मिलता है कि जहां इसने राज्य सत्ता का सहारा पाकर विधर्मियों पर हृदय विदारक अत्याचार किये। विरोधियों के स्त्री बच्चों तक को इसने भूखे शेरों के सामने धकेलने में लेशमात्र भी संकोच नहीं किया। और उनके चीत्कार पर यह कहकहा लगा कर हंसती रही। रोम के पुराने खण्डरात आज भी इस पिशाचनी के कुकर्मों की साक्षी दे रहे हैं। कितने असंख्य नर-नारियों

को जीते जी इसने अग्नि की भेंट चढ़ाया, कितनों को घोड़ों की पूंछ में बंधवा कर इसने तड़फा २ कर मारा, तथा कितनों को जहर के प्याले पीने पर विवश किया इसके स्मरण मात्र से रोमांच हो उठता है।

ईसाई धर्म यूरुप, अमेरिका तथा अफ्रीका में किस प्रकार फैला इसके कुछ उदाहरण निम्न प्रकार हैं—

रोमन साम्राज्य की गद्दी पर पदार्पण करने के पश्चात् ही ईसाइयत देवी ने अपने असली स्वरूप को प्रकट किया। यूरोपियन इतिहास बतलाता है कि इसके जीवन में कभी कोई ऐसा समय नहीं आया जब कि इसके हाथ में तलवार तथा मुख में विधर्मियों अथवा मूर्तिपूजकों की बोटियां न रही हों। प्रमाण स्वरूप सन् ३५३ ई०में कान्सटैन्टीयस ने रोम की गद्दी पर बैठते ही अपने राज्य भर में यह आदेश जारी कर दिया कि राज्य के समस्त मन्दिर बन्द कर दिये जांय और जो उनमें जाने का साहस करें या उनके लिए पशु आदि का बलिदान करें उन्हें मृत्यु के घाट उतार दिया जाय, और उनकी सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया जाय तथा जो अधिकारी गवर्नर इस राजाज्ञा का सही २ पालन न करे उनको भी मार दिया जाय।

इंग्लैंड में प्रारम्भिक गिरजाघर आयरलैण्ड के प्रभाव से बने। तत्पश्चात् औगस्टाइन के राज्य काल में वहां रोमन चर्च भी बनाये गए। दोनों में इतनी शत्रुता थी कि औगस्टाइन की मृत्यु के पश्चात् दोनों में झगड़ा हुआ और परिणाम स्वरूप पुराने गिरजाघरों के बारह सौ पादरी बैन्गौर में एक ही लड़ाई के अन्दर समाप्त कर दिए गए। सन् १६१४ ई०. में जब आयर्लैंण्ड के लोग रोमन पोप के धर्म को छोड़ कर प्रोटेस्टेन्ट बनने लगे तो पोप ने आदेश निकाला कि उन लोगों को जो कि प्रोटेस्टेन्ट बन गये हैं मार डाला जाय। परिणाम स्वरूप १८०८ ई० तक ३ लाख ४१ हजार २१ मनुष्यों का वध कर डाला गया, जिनमें लगभग ३२ हजार जीवित जलाए गए और शेष को भयंकर यन्त्रणायें देकर मार डाला गया।

सन् ७२०-४९ ई० में बोनीफेस नामक एक अंग्रेज ने उत्तर जर्मनी में ईसाई धर्म का प्रचार किया और एक वर्ष के अन्दर एक लाख ईसाई बनाए और रोमन चर्च के विरोधी विचार वाले पादरियों को सैंकड़ों की संख्या में समाप्त कर दिया। तलवार को छोड़ जहां इस महापुरुष ने वाणी द्वारा लोगों को ईसाई बनाने का प्रयत्न किया वहां लोगों को यह कहा कि "आज संसार में सबसे अधिक संख्या तथा राज्य ईसाइयों का है। इनके पास सब से अच्छी भूमि है, जहां शराब तथा तेल अपार मात्रा में उत्पन्न होता है।" ये थे सत्यवादी पूर्वज इन भोले दिखाई देने वाले पादरियों के और ये थे इनके हथकण्डे।

बाल्टिक राज्य तथा थूरिंगिया व हैस की सीमाओं के पास चारली मैंगने के आधीन ईसाई पादरियों ने अपनी पशुता में मुसलमानों को भी मात कर दिया। वहां के निवासियों ने जब ईसाई बनना अस्वीकार कर दिया तो उन समस्त लोगों को जो कि गौस्पिल स्वीकार न करें समाप्त कर देने की घोषणा हुई। लगातार तीस साल तक यह कत्ले-आम चलता रहा। इसमें की गई हत्याओं की संख्या का पाठकगण स्वयं अनुमान लगाने का कष्ट करें।

स्कैण्डीनेवियन देशों में तो ईसाई धर्म का प्रचार वहां के निवासियों के लिए जीवन-मृत्यु का संग्राम बन गया था और सन् ८२० से १०७९ ई० तक लगभग २५० वर्ष यह युद्ध चलता रहा। दोनों में से जिस किसी को भी अवसर मिलता था वही दूसरे का कत्लेआम कर देता था।

लाइवोनिया तथा प्रूसिया में जब मौखिक प्रचार से काम न चला तो पोप ने तलवार का सहारा लेने की आज्ञा दी और ६० वर्ष तक यह पैशाचिक युद्ध चलता रहा।

यदि स्पेनिश पादरियों की मैक्सिको तथा पीरू की विजयों का वर्णन यहां करने लग जाऊं तो एक बड़ी मोटी पुस्तक तैयार हो जाए।

पादरी लास कैसास के शब्दों में ही सुनिए कि वहां की विजयों में लगभग बारह लाख विधर्मियों की हत्यायें की गईं। इनमें वे संख्यायें सम्मिलित नहीं हैं जो कि अपने अधिकार में आए प्रदेश में पादरियों ने कराई होंगी।

ईसाई धर्म के प्रचार में एक दो अपवाद भी हैं अर्थात् कुछ घटनायें ऐसी भी हैं जहां अहिंसात्मक प्रचार से भी काम लिया गया जैसे सन् ६८० ई० में जब रूस के बादशाह विलाडीमार ईसाई बन गये तो उन्होंने राज्य के समस्त मन्दिरों, तथा मूर्तियों को तुड़वा दिया; परन्तु बाद में उनकी धर्मपत्नी ने उन पर प्रभाव डाल कर उन्हें अहिंसात्मक बना दिया और ग्रीक मिशनरियों द्वारा वहां स्कूल तथा चर्च बनवाए गए। इस प्रकार बिना खून बहाये तीन पीढ़ियों में इन पादरियों ने वहां के समस्त निवासियों को ईसाई बना दिया। ठीक इसी मार्ग का अवलम्बन कर अंगरेजों ने भारत के निवासियों को ईसाई बनाने का षडयन्त्र रचा था।

सारांश में ईसाई धर्म-प्रचार की यह शैली रही है कि छल, कपट, त्याग व प्रेम में से किसी एक का सहारा लेकर या किसी अन्य ईसाई राजा के सहयोग से अमुक देश के राजा को प्रथम ईसाई बनाना और बाद में उसकी तलवार की छत्र-छाया में वहां की जनता को पशुओं की भांति झुण्ड के झुण्ड में ईसाई बनाना। रोम इस षडयन्त्र का प्रधान केन्द्र था, जहां से प्रत्येक प्रकार का सहयोग उन्हें प्राप्त होता था और जहां से संसार भर के गुनहगारों को स्वर्ग के टिकिट बांटे जाते थे।

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या ? आज सदियों से ईसाई धर्म के यूरोपीय तथा अमेरिकन अनुयायी संसार में जिस शोषण, लूट तथा हिंसा का प्रदर्शन कर रहे हैं, उसको देखते हुए इनके शान्ति तथा अहिंसा के उपदेश क्या ढोंग मात्र नहीं हैं ? क्या केनिया कोलोनी, दक्षिण अफ्रीका

तथा इण्डोचाइना में असंख्य नर-संहार ईसा के ही नाम पर नहीं हो रहा है ? यदि नहीं तो फिर भारत में, जो कि जन्म से ही शांति प्रेमी है, ये पादरी लोग क्यों अपना समय नष्ट कर रहे हैं ? ये लोग अपने इन आकाओंको ही क्यों नहीं जाकर ईसा का उपदेश देते हैं ताकि वे ठीक मार्ग का अनुकरण करें, परन्तु करें भी कैसे ? ये स्वयं भी तो उन्हीं के टुकड़ों पर जीवित हैं और उन्हीं की योजनानुसार ये भारत में पधारे हैं।

पादरी लोग राजाओं के पचमांगी दस्ते हैं

संसार का इतिहास साक्षी है कि ये पादरी लोग जहाँ भी जिस देशमें गरीबों बीमारों तथा अपढ़ लोगों के उद्धार का बहाना लेकर गए वहां ही इन्होंने उनकी असहायता तथा विवशता का लाभ उठा कर उन्हें ईसाई अवश्य बनाया है; और साथ ही जिस देश से इन पादरियों का सम्बन्ध होता है उसी का साम्राज्य स्थापित करने अर्थात् उस गरीब निःसहाय जनता को उसका दास बनाने तथा उनका शोषण कराने में इनका पूर्ण हाथ रहता रहा है। आज तक एक भी उदाहरण ऐसा नहीं है कि जहां इन्होंने ऐसा नहीं किया हो। फौजों द्वारा रौंदे, लूटे तथा पराजित हुये देश पुनः उठ खड़े हुए—इन उदाहरणों से मानव जाति का इतिहास भरा पड़ा है, परन्तु इन पादरियों के जाल में फंसे राष्ट्र रसातल को ही पहुँच गए अर्थात् समाप्त ही हो गए। क्योंकि जब इनके द्वारा उनकी राष्ट्रीयता ही समाप्त कर दी जाती है तो फिर उनके पुनः जीवित होने का प्रश्न ही समाप्त हो जाता है। इसी लक्ष्य को सन्मुख रखकर इन्होंने भारत में आगमन किया है और करोड़ों रुपया आज इन्हें विदेशों से इसी उद्देश्य के निमित्त प्राप्त हो रहा है।

भारत में ईसाई इतिहास की झांकी

भारत में ईसाइयों की एक बड़ी ही विचित्र तथा लम्बी कहानी है. जिसका पूर्ण विवरण देना तो यहां कठिन है; परन्तु उसके संक्षिप्त विवरण से ही पाठकों को इनकी पूरी करतूतों का अनुमान लगाना होगा। इनके इतिहास को चार भागों में विभाजित किया जा सकता है—(१) सर थामस रो का काल (२) पूर्तगीज़ काल (३) अंग्रेजी काल (४) स्वतन्त्रता के पश्चात् -

सर थामस रो

सीरियन ईसाई इस बात का दावा करते हैं कि प्रथम शताब्दी के अन्त में भारत में सर्व प्रथम संत थामस ने ईसाइयत का प्रचार किया। इनका प्रचार क्षेत्र दक्षिण भारत मुख्यतः केरल (मालाबार) प्रान्त था। इनके सम्बन्ध में बड़ी ही विचित्र कहानियां प्रसिद्ध हैं कि जिनसे इनके पूरे षड्यन्त्र का पता चल जाता है। इनके भक्तों का कहना है कि इन्होंने यहां बड़े चमत्कार दिखलाये अर्थात् इन्होंने अपने तपोबल से मुर्दों में जान डालदी, बीमारों की बीमारियों को देखते २ दूर कर दिया, अनेकों भविष्य वाणियां कीं तथा बहुत सी इसी प्रकार की जादू भरी घटनायें कीं। इनके द्वारा मलियापुर में बनाया गिर्जाघर भी एक विचित्र कहानी रखता है। सर थामस ने बहुत से माघी लोगों को ईसाई बनाया; परन्तु अधिक सफलता नहीं मिली। प्रचार करते २ ही उनकी मृत्यु होगई और मद्रास में आपकी समाधि "Sr. Thomas mount" के नाम से प्रसिद्ध है।

सर थामस के इतिहास से ज्ञात होता है कि इन्होंने मालाबार की अपढ़ माघी जाति को अपनी बुद्धिमत्ता तर्क तथा ईसाई धर्म की विशेषताओं के बल पर इन्हें ईसाई नहीं बनाया अपितु अपनी जादूगरी के

बल पर उन्हें धोखा दिया। जादू-टोनों में कहां तक सत्यता है और इनका सहारा कौन लेता है ? यह सर्वविदित है।

इस प्रकार पहिली शताब्दी से भारत में ईसाई धर्म का प्रचार प्रारम्भ हुआ और धीरे २ यह दक्षिण भारत में फैलता रहा; परन्तु इसे अधिक सफलता प्राप्त नहीं हुई। आगे की शताब्दियों में भी यह क्रम चालू रहा। इसका संकेत उस समय मिलता है जब कि बादशाह कोन्स्टेन्टाइन ने चौथी शताब्दी के प्रारम्भ में ईसाई धर्म को रोमन साम्राज्य की गद्दी पर आसीन किया। उस समय नीस में समस्त देशों के पादरियों की एक सभा हुई थी, जिसमें जोहन्स नामक पादरी ने अपना परिचय देते हुये कहा था कि वह पर्सिया (ईरान) तथा भारत का प्रधान पादरी है।

पुर्तगीज़ काल

ईसाई धर्म के दूसरे युग का प्रारम्भ तब होता है जब कि पूर्वी समुद्रों का बादशाह बनकर वास्कोडिगामा सन् १४९८ ई० में भारत पधारा। आपके चरण कमल गोआ में पड़े। आप के साथ या आपके पश्चात् पुर्तगाल से जो महापुरुष भारत में पधारे उनके काले कारनामों को सुनकर आज ईसाई लोगों के भी लज्जा से सिर नीचे हो जाते हैं। प्रसिद्ध लेखक मैफिन्स ने बड़ी गम्भीरता से स्वीकार किया है कि उस समय के पुर्तगीजों का जीवन अति ही अपवित्र तथा ईसाइयत पर कलंक था। पुर्तगीज वायसराय एल्बुकर्क ने तो उस नीचता को चार चांद लगा दिये थे। धर्म परिवर्तन को उसने अपने राज्य की प्रधान नीति बनाया। उसने भारत में पुर्तगीज राज्य को स्थाई तथा सुरक्षित बनाने के निमित्त गोआ राज्य की महिलाओं को बलात् पकड़वाकर अपने फौजी सिपाहियों में बांट दिया और उन्हें यहां स्थाई मकान बनाकर रहने की आज्ञा प्रदान करदी। ऐसा करने में उसके दो उद्देश्य थे—भारत में अपनी सजातीय बस्तियों की स्थापना

तथा अपनी फौजों के लिये सिपाही पुर्तगाल से न मंगाकर यहीं से प्राप्त करना। इस उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त इसकी फौजों ने गोआ निवासियों के साथ जो अत्याचार किये वे अवर्णनीय हैं। बलात्कार तथा धर्मपरिवर्तन उस समय साधारण घटनायें बन गई थीं। अनेकों हिन्दू परिवार उनके भय से पलायन कर गये और अनेकों स्वतः ही ईसाई बनगये।

तत्पश्चात् फ्रांसिस एक्सैवीयर गोआ पधारे! आपके सम्बन्ध में बड़ी प्रशंसा के पुल बांधे जाते हैं और कहा जाता है कि आपने लगभग सात लाख भारतीयों को ईसाई बनाया। परन्तु इनके पश्चात् पादरी रोबर्ट नोबीलीबस (Robert nobilibus) पधारे, जिनके कारनामों से आज भी ईसाइयत अपना सिर ऊँचा करने में लजाती है। जो कुकर्म ईसा के नाम पर इन भोली सूरत वाले तथा लम्बे चोगों वालों ने यहां उस समय किये उन्होंने वास्तव में स्वयं ईसामसीह तथा उसके सिद्धान्तों की कबर खोद दी थी।

आज भी गोआ की पचास प्रतिशत ईसाई जनता तथा गांव २ में बने गिरजाघर उनकी करुण कहानियों की याद दिला रहे हैं। गोआ में पधारने वाले को एक वार तो यह भ्रम हुये बिना नहीं रहता कि वह यूरुप में है। वहां का रहन सहन, होटल, नाचघर, शराब, मांसाहार, गिरजा तथा पुर्तगालियों से उत्पन्न सन्तानें, भारतीय जीवन के सर्वथा विपरीत वातावरण उपस्थित करती हैं। मुझे स्वयं वहां जाने का अवसर प्राप्त हुआ है। वहां की स्थिति को देखकर मुझे अपने समाज, अपनी सरकार तथा अन्य धार्मिक संस्थाओं की अकर्मण्यता पर हार्दिक खेद हुआ। एक स्वाभिमानी राष्ट्र किस प्रकार बदनामी की इन यादगारों को सहन कर रहा है यह मेरी समझ में नहीं आया। आश्चर्य तो इस बात का हुआ कि आज भी वह भारत विरोधी प्रचार का भयंकर अड्डा बना हुआ है, और वहां की हिन्दू जनता इस प्रकार भयभीत वातावरण में रह रही है जैसे की कसाईखाने में गाय।

अंग्रेजी काल

भारतीय राजाओं के आपसी मत-भेदों, तथा संघर्षों का लाभ उठाकर जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अंग्रेज व्यापारियों ने यहां अपना राज्य स्थापित कर लिया, तो उन्होंने अपने राज्य को स्थायी बनाने के निमित्त जो षड्यन्त्र रचे, उनमें यहां के निवासियों मुख्यतः आर्यों को ईसाई बनाना भी सम्मिलित था। चूंकि अंग्रेज लोग इस बात से भली भांति परिचित थे कि आर्य जाति के लोग अन्य किसी भी प्रकार के आघात को भले ही सहन करलें या उसकी उपेक्षा करदें; परन्तु वे अपने धर्म पर किसी भी प्रकार के आघात को किसी भी अवस्था में सहन करने को तैयार नहीं होते, चाहे इसमें उन्हें अपने सर्वस्व की ही बाजी क्यों न लगानी पड़ जाय। भारत में मुस्लिम राज्य की हिन्दू धर्म विरोधी नीति का ही कुपरिणाम उसके पतन के रूप में उनके सामने था; और जो कुछ भ्रान्ति उनके मस्तिष्क में शेष रह गई थी वह सन् ५७ ई० की क्रान्ति में पूर्णतः स्पष्ट होगई।

परन्तु सन् ५७ ई० की क्रान्ति में इन्हें अपने मार्ग-प्रदर्शन की एक रूप रेखा भी दिखलाई पड़ी—वह यह कि जिस समय भारत के क्रान्तिकारी अंग्रेजों को प्रत्येक स्थान पर पराजित करते चले जा रहे थे उस समय एक जर्मन मिशन ने जो कि यहां के कोल लोगों में कार्य कर रहा था, १० हजार कोल ईसाई और एक दूसरे अमेरिकन मिशन ने जो कि ब्रह्मा में कार्य कर रहा था विद्रोहियों से लड़ने के निमित्त ईस्ट इण्डिया कम्पनी को तीन हजार ईसाई पेश किये थे। कम्पनी ने इस सहायता को अंगीकार इसलिये नहीं किया था; क्योंकि उस क्रांति का उद्भव इस विश्वास में से ही हुआ था कि अंग्रेज लोग हिन्दू और मुसलमान दोनों को ईसाई बनाना चाहते थे।

परन्तु इस सहयोग की प्रार्थना से उन्हें यह बात सिद्ध होगई कि भारत में अपना सुरक्षित तथा सुदृढ़ राज्य बनाने के निमित्त उन्हें यहां

के अधिक से अधिक लोगों को ईसाई बनाना होगा; और इसी अवस्था में यहां के निवासी उनके सच्चे भक्त तथा समर्थक बन सकते हैं। अतः उन्होंने अपनी इस भावना को गुप्त रख, ठीक इसके विपरीत महारानी विक्टोरिया से घोषणा कराई कि भविष्य में वे यहां की धर्म सम्बन्धी बातों में कोई हस्ताक्षेप नहीं करेंगे; परन्तु उसी समय उन्होंने लार्ड मैकाले की योजना के रूप में ऐसी योजनाओं का निर्माण किया, जो कि यहां की धार्मिक तथा सांस्कृतिक भावनाओं की कब्र खोदने वाली थीं। उनकी योजना के निम्न प्रधान अङ्ग थे—

(१) यहां की वेश भूषा, भाषा, साहित्य, इतिहास के स्थान पर अंग्रेजी पहिनावा, भाषा, साहित्य तथा इतिहास को स्थापित किया जाय।

(२) यहां के लोगों को अपने धर्म का ज्ञान न होने दिया जाय।

(३) संस्कृत भाषा की, कि जिसमें यहां के धर्म ग्रन्थ लिखे हैं सर्वथा उपेक्षा करदी जाय अर्थात् राज्य की ओर से इसे किसी भी प्रकार का प्रोत्साहन न दिया जाय।

(४) यहां के धर्म ग्रन्थों की निःसारता प्रकट की जाय।

(५) धर्म के ठेकेदार ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा को अधिक से अधिक ठेस पहुँचाई जाय, ताकि उनके धार्मिक प्रवचनों का प्रभाव समाप्त हो जाय।

(६) यहां के देशी राजाओं को ईसाई बनाने के निमित्त उनका यूरोपियन महिलाओं के साथ सम्पर्क बढ़ाया जाय और यथासम्भव उनके साथ विवाह कराया जाय ताकि 'यथा राजा तथा प्रजा' के सिद्धांतानुसार उन्हें यहां की जनता का सामूहिक धर्म परिवर्तन करने में सरलता हो।

(७) यहां के लोगों को ईसाई बनाने के निमित्त यहां पादरियों तथा गिरजाघरों का जाल बिछाया जाय। इनका उपयोग ठीक २ किया जासके इसके लिये इनका पूर्ण नियन्त्रण उन्होंने सीधा इंगलैण्ड

से रक्खा, जो कि अंग्रेजों के चले जाने के पश्चात् भी आज तक ज्यों का त्यों बना है।

(८) गिरजाघरों तथा मिशन के प्रचार के लिये नगर के सुन्दरतम् स्थानों पर जगह दिलाने का प्रबन्ध अंग्रेज पदाधिकारी पादरियों की इच्छानुसार करें।

(९) ईसाइयों को सरकारी नौकरियों के देने में उदारता बरती जाय।

(१०) पादरियों की शिकायतों पर ध्यान दिया जाय और उनकी सम्मति तथा सिफारिशों का मान किया जाय।

(११) ईसाइयों द्वारा चालित स्कूलों, अनाथालयों तथा औषधालयों को यथेष्ट सरकारी सहायता प्रदान की जाय।

(१२) अस्पतालों, दुर्भिक्षों, बाढ़ों में ग्रस्त अनाथ बच्चे को ईसाई अनाथालयों को प्रदान किये जायं।

उपरिलिखित योजना को देखकर, एक साधारण व्यक्ति भी अनुमान लगा सकता है कि किस प्रकार अंग्रेजों ने हमें धर्मशून्य बनाकर हमारे सर्वनाश के निमित्त इन पादरी भेड़ियों को खुली छूट दी। इस योजना के पीछे कितनी घृणित भावना छिपी थी इन गोरी चमड़ी वालों के कलुषित हृदयों में, यह इस योजना के प्रधान निर्माता लार्ड मैकाले के उस पत्र से स्पष्ट होजाती है जो कि उसने अपनी योजना की सफलता पर कलकत्ते से अपने पिता को सन् १८३६ ई० में लिखा था। पत्र का एक अंश निम्न प्रकार है :—

"It is my own belief that ig our plans of education are followed up, there will not be a single idolator, among the respectable classes in Bengal, thirty years hence."

"अर्थात् मेरा अपना विश्वास है कि यदि शिक्षा सम्बन्धी हमारी योजनाओं को चालू रक्खा गया तो तीस वर्ष के पश्चात् बंगाल की

से रक्खा, जो कि अंग्रेजों के चले जाने के पश्चात् भी आज तक ज्यों का त्यों बना है।

(८) गिरजाघरों तथा मिशन के प्रचार के लिये नगर के सुन्दरतम् स्थानों पर जगह दिलाने का प्रबन्ध अंग्रेज पदाधिकारी पादरियों की इच्छानुसार करें।

(९) ईसाइयों को सरकारी नौकरियों के देने में उदारता बरती जाय।

(१०) पादरियों की शिकायतों पर ध्यान दिया जाय और उनकी सम्मति तथा सिफारिशों का मान किया जाय।

(११) ईसाइयों द्वारा चालित स्कूलों, अनाथालयों तथा औषधालयों को यथेष्ट सरकारी सहायता प्रदान की जाय।

(१२) अस्पतालों, दुर्भिक्षों, बाढ़ों में ग्रस्त अनाथ बच्चे को ईसाई अनाथालयों को प्रदान किये जायं।

उपरिलिखित योजना को देखकर, एक साधारण व्यक्ति भी अनुमान लगा सकता है कि किस प्रकार अंग्रेजों ने हमें धर्मशून्य बनाकर हमारे सर्वनाश के निमित्त इन पादरी भेड़ियों को खुली छूट दी। इस योजना के पीछे कितनी घृणित भावना छिपी थी इन गोरी चमड़ी वालों के कलुषित हृदयों में, यह इस योजना के प्रधान निर्माता लार्ड मैकाले के उस पत्र से स्पष्ट होजाती है जो कि उसने अपनी योजना की सफलता पर कलकत्ते से अपने पिता को सन् १८३६ ई० में लिखा था। पत्र का एक अंश निम्न प्रकार है :—

"It is my own belief that ig our plans of education are followed up, there will not be a single idolator, among the respectable classes in Bengal, thirty years hence."

"अर्थात् मेरा अपना विश्वास है कि यदि शिक्षा सम्बन्धी हमारी योजनाओं को चालू रक्खा गया तो तीस वर्ष के पश्चात् बंगाल की

प्रतिष्ठित जातियों में एक भी मूर्ति पूजक (हिन्दू) नहीं रह जायगा।"

उत्तर भारत में ईसाई-धर्म

अब तक ईसाई धर्म मुख्यतः दक्षिण भारत तथा कलकत्ता तक ही सीमित था और असफलता के साथ इधर-उधर फैलने की चेष्टा कर रहा था; परन्तु अंग्रेजों की विजयों के साथ २ इसने भी उत्तर भारत में प्रवेश किया और देखते-देखते प्रत्येक तीर्थ-स्थान तथा प्रसिद्ध नगरों में इसके बड़े २ गिरजाघर बनकर खड़े होगये। नगरों से फिर इसने गांवों में जाना प्रारम्भ किया। गांवों में प्रचार करने में ईसाई पादरियों को उन अंग्रेज व्यापारियों से अधिक सहयोग मिला कि जिन्होंने नील का व्यापार करने के निमित्त यहां स्थान २ पर नील बनाने की कोठियां बना ली थीं।

प्रचार शैली

ईसाई धर्म के प्रचारार्थ इन्होंने स्कूलों, कालेजों, तीर्थ स्थानों, सवर्ण हिन्दुओं तथा महिलाओं में प्रचार करने के निमित्त भिन्न२ शैली अपनाई। स्कूल-कालेज के उन अबोध बालकों में, जो अपने धर्म से सर्वथा अपरिचित जान बूझकर रक्खे गये थे, इनके बड़े २ पादरी जाते थे और ईसा मसीह के गुण गान करते थे। पौराणिक गाथाओं को आधार बना ये हमारे देवताओं, अवतारों तथा धर्म की खिल्लियां उड़ाते थे। तीर्थस्थानों, पर्वों तथा मेलों पर इनके प्रचारक खड़े होकर मसीह के गीत गाते और अपने धर्म-सम्बन्धी छोटी-छोटी पुस्तिकायें फ्री बांटते थे। सवर्ण हिन्दुओं को अपनी ओर खींचने के लिये इन्होंने शास्त्रार्थों का भी सहारा पकड़ा और काशी के अद्वितीय विद्वान् नीलकंठ शास्त्री जैसे व्यक्ति को उनके आधार पर ईसाई बनाने में समर्थ होगये। पौराणिक बुद्धि विरोधी अप्राकृतिक तथा ऊट-पटांग गाथायें ही इनके शास्त्रार्थ का मूलाधार होती थीं; परन्तु यह सफलता

उनकी एक दो व्यक्ति तक ही सीमित रही। भारतीय महिलाओं में प्रचारार्थ इनकी यूरोपियन महिलायें यहां के भले घरों में जाती थीं और अपनी टूटी-फूटी भाषा में उन्हें अपने धर्म में स्त्री जाति की स्वतन्त्रता तथा अधिकारों का वर्णन कर उनकी दयनीय अवस्था का उन्हें भान कराती थीं। परन्तु विदेशी महिलाओं को पता नहीं था कि भारतीय महिला जितनी अपने धार्मिक विश्वासों में अडिग होती हैं, उतने पुरुष नहीं। जिस स्वतन्त्रता की ओर वे संकेत करती थी वह उनकी दृष्टि में बेशर्मी, बेहयायी तथा वेश्या वृति की परिचायिक थी। उनकी दृष्टि में वे स्वयं वेश्याओं से कम नहीं प्रतीत होती थीं। यह बात ध्रुव-सत्य है कि इस विदेशी षड्यन्त्र को असफल बनाने में हमारी मातृ-शक्ति का बहुत बड़ा हाथ रहा है। पुरुषों ने भले ही अपनी वेश-भूषा, भाषा, धर्म, संस्कृति से मुंह मोड़ लिया; परन्तु जब वे घर में घुसते थे तो ये मातायें एक क्षण भी उनकी इन बातों को सहन नहीं करती थीं और स्कूल-कालेजों, दफ्तरों, होटलों, अस्पतालों आदि स्थानों पर जो गन्द उनके मस्तिष्कों पर पादरियों या अन्य ईसाई अधिकारियों द्वारा उत्पन्न की जाती थी वह घर पहुँचते ही अपनी स्त्री, बहिन, माता आदि की दृष्टि मात्र से धुल जाती थी। यही कारण है कि लाखों करोड़ों वर्षों से चली आरही हमारी परम्परायें आज भी सुरक्षित हैं—चाहे अज्ञानता के कारण उनका स्वरूप भले ही कुछ बिगड़ गया हो।

जब नौकरी की तलाश में भटके या चरित्रहीनता के वशीभूत महिलाओं के सम्पर्क में आने के इच्छुक कुछ पागल नवयुवक या गरीबी तथा सामाजिक बहिष्कार से तंग आये कुछ व्यक्तियों को छोड़ इन मिशनरियों के चंगुल में अधिक व्यक्ति नहीं आये, तो इन्होंने तुरन्त अपनी प्रचार शैली में घृणित उपायों का सहारा लिया। इन्होंने लोगों को धोखा देने के लिये साधुओं-सन्यासियों का वेश धारण किया और जादू टौने के आधार पर लोगों के कष्टों तथा बीमारियों को दूर करने का ढोंग किया। इनसे इन्हें इतना लाभ अवश्य हुआ कि जहां पहिले लोग

इनसे बात करने में ही घृणा करते थे वहां अब सैंकड़ों की संख्यामें इनके पास जमा होने लगे। इस स्थिति से इन्होंने अवश्य लाभ उठाया; और बहुतों को इन्होने अपने जाल में फांसा। परन्तु इसमें भी इन्हें अधिक सफलता नहीं मिल सकी।

हरिजनों में प्रचार

आरम्भ में पादरियों ने सर्वत्र ही यहां के उच्च वर्ण वाले लोगों को ईसाई बनाने का इसलिये प्रयत्न किया कि इनके ईसाई बनजाने पर इनकी दया पर जीवित रहने वाले अछूत लोग फिर स्वतः ही ईसाई बन जायंगे अर्थात् इन्होंने एक तीर से दो शिकार मारने की बात सोची; परन्तु जिस देश की मिट्टी से भी उच्च कोटि के आध्यात्मवाद की सुगन्ध निकलती हो, और जहां के साधारण अपढ व्यक्ति भी जीवात्मा, ईश्वर, प्रकृति जैसे जटिल विषयों पर घंटों बोलने को क्षमता रखते हों, वहां के धर्माचार्य ब्राह्मणों में ईसा मसीह सम्बन्धी बुद्धि विरोधी बातों का प्रचार करना केवल अपने को धोखा देना मात्र था। जिन्हें शौच, स्नान, दातुन, भोजन आदि यम-नियम सम्बन्धी साधारण बातों का ज्ञान तक नहीं वह भला यहां के सवर्ण लोगों को अपनी ओर कैसे आकर्षित कर सकते थे।

अन्त में इन्होंने अपनी भूल स्वीकार कर अपने प्रचार-क्षेत्र को बदला और यहां की पद-दलित, बहिष्कृत, अछूत तथा निर्धन हरिजन जाति को अपना कार्य-क्षेत्र बनाया। इस कार्य में इन्हें अद्वितीय सफलता मिली। हरिजनों में जाकर इन्होंने प्रचार के स्थान पर सेवा भाव को अपनाया। इन्होंने उनके घरों में जाकर उनके गन्दे बच्चों के मुखों को अपने हाथों से साबुन द्वारा धोया, उन्हें अच्छे वस्त्र पहिनाये और बीमारों को फ्री दवाइयां बांटीं। जिन व्यक्तियों को अपने पर मनुष्य होने का ही सन्देह हो या जिन्हें स्वप्न में भी यह ध्यान न हो कि उनके घरों में भी कोई भला व्यक्ति आ सका है और उनके साथ बैठ कर

उनके सुख-दुख की बात पूछ सकता है तथा जिन्हें अपने बच्चों को गुलाब के फूलों की भांति खिलते हुए देखने का कभी सुअवसर प्राप्त न हुआ हो, उनके लिये तो यह दृश्य अलौकिक था। उन्होंने इन्हें भगवान के दूत समझा, इनका हार्दिक स्वागत किया और जब इन्होंने उनके कान में यह कहा कि ईसाई बन जाने पर उनके ऊपर कोई अत्याचार न कर सकेगा और सवर्ण हिन्दुओं की भांति सार्वजनिक कुआं आदि सभी स्थानों पर जाने-आने का पूर्ण अधिकार उन्हें होगा, तो उनकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। बस फिर क्या था हजारों की संख्या में नित्य हरिजन लोग ईसाई बनने लगे। ईसाई बनने के पश्चात् जहां कहीं भी सवर्ण लोगों ने इनके ऊपर अत्याचार किया या इन्हें अपने कुओं पर चढ़ने से रोका तो तुरन्त उस जिले के कलक्टर आदि अंग्रेज पदाधिकारियों ने उनको कड़ा दण्ड दिया। इस प्रकार ईसाई धर्म का छकड़ा अब हवाई जहाज बन आर्य जाति पर बम्बारी करने लगा। उनके प्रचार की गति से ऐसा प्रतीत होता था कि मानो अब ग्यारह-बारह करोड़ के लगभग हरिजन देखते २ ईसाई बन जायेंगे।

ईसाई तथा मुस्लिम धर्म प्रचार में भेद

यहां यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि ईसाइयों के समकक्ष मुसलमान यहां सवर्ण लोगों को मुसलमान बनाने में क्यों सफल हो गये और उनकी संख्या देखते २ इतनी क्यों बढ़ गई? इसका मूल कारण यह था कि ईसाई मुसलमानों की अपेक्षा अधिक सभ्य थे और साथ ही जिस अंग्रेजी सरकार की छत्रछाया में ये कार्य कर रहे थे उसे सन् ५७ की पुनरावृत्ति होने का भय था और यहां की जनतामें अपने शासनकी सचाई,ईमान्दारी तथा अपनी सभ्यता की धाक जमाकर यह सिद्ध करना था, कि उसके अंग्रेज शासक मुसलमान तथा अन्य शासकों से कहीं अच्छे थे; और वे हृदय से उनका कल्याण चाहते थे। इसी कारण उन्होंने यहां के ईसाई

प्रचारकों को बेलगाम हो, उन्हें सभ्यताकी सीमाको नहीं लांघने दिया। जबकि मुसलमानों ने साम, दाम, दण्ड भेद सभी नीतियों से हिन्दुओं को मुसलमान बनाया। यहां तक कि उन्होंने हिन्दु नारियों को भगाने के निमित्त नियमित रूप से संगठन बनाये, जिनके पीछे करोड़ों रुपया खर्च किया जाता था और मौलाना हजरत निजामी जैसे चतुर मुसलमान उनका नेतृत्व करते थे।

राजा राम मोहन राय का विरोध

ईसाई कुचक्र को देखकर बंगाल के प्रतिभाशाली तथा सुधारक नेता श्री राजा राममोहनराय ईसाई धर्म के प्रेमी होते हुए भी तड़फ उठे। उन्होंने ईसाई मिशनों का विरोध निम्न शब्दों में किया—

"यह सच है कि ईसा मसीह के चेले भिन्न २ देशों के निवासियों को ईसाई धर्म की उच्चता की शिक्षा दिया करते थे। परन्तु हमें याद रखना चाहिये कि वे चेले उन देशों में जहां वे उपदेश दिया करते थे शासक नहीं थे। यदि वे मिशनरी लोग उन देशों में जो अंग्रेजों द्वारा विजित नहीं थे, जैसे टर्की, फारस इत्यादि, जो कि इंग्लैण्ड के अधिक समीप हैं—उपदेश देते और किताबें बांटते तो निश्चय ही वे बड़े सम्माननीय व्यक्ति और ईसाई धर्म के संस्थापकों के पद चिन्हों का अनुसरण करते हुए उत्साही कार्य-कर्ता समझे जाते। परन्तु बंगाल में जहां अंग्रेज सर्वेसर्वा हैं और जहां अंग्रेजों का केवल नाम ही लोगों को भयभीत करने के लिये पर्याप्त है, वहां के गरीब, भीरू और नम्र-निवासियों के अधिकारों तथा धर्म में हस्ताक्षेप परमात्मा तथा जनता की दृष्टि में युक्त कार्य नहीं समझा जा सकता है।"

इतना ही नहीं श्री राममोहनराय जी ने "ईसाई जनता से अपील" नामक तीन बड़ी पुस्तकें लिखीं। उनमें जनता से इस बात की अपील की कि वे ऐसा मिशनरी काम न करने दें जो भारतियों के धर्मों का

अपमान और दुरुपयोग पूर्वक एक नये धर्म को जन्म और दीक्षित हुए व्यक्तियों को सांसारिक प्रलोभन देते हुए किया जा रहा था। परन्तु शोक कि इस नेता के वक्तव्य तथा अपील कोई प्रभाव न डाल सकीं। अपितु यहां ईसाई षडयन्त्र में और तीव्रता आ गई। इस तीव्रता का अनुमान उस समय यहां कार्य कर रहे भारतीय तथा विदेशी ईसाई मिशनरियों के निम्न आंकड़ों द्वारा लगाया जा सकता है:—

भारत में ईसाई धर्म प्रचार में लगे भारतीय तथा विदेशी प्रचारकों की संख्या तथा अनुपात

क.सं.	प्रान्त	धर्म प्रचार में संलग्न	शिक्षा द्वारा धर्म प्रचार में संलग्न	अनुपात
१	आसाम	८०८	२६०२	१:३.२
२	बंगाल	१०८०	१९१०	१:१.८
३	मैसूर	१८७	३२५	१:१.७
४	मद्रास	७१३४	११५०८	१:१.६
५	देहली	७४	१०१	१:१.५
६	बड़ौदा	५०	६५	१:१.३
७	ग्वालियर	२६	२९	१:१.११
८	कुर्ग	२	२	१:१
९	सिक्किम	१०	११	१:१
१०	राजपूताना	२२३	२१८	१:.९७
११	बिहार और उड़ीसा	१३२०	११३४	१:.८५
१२	काश्मीर	१७	१५	१:.८५
१३	बम्बई	१८३१	१२४१	१:.६७
१४	हैदराबाद	१२०२	७५२	१:.६२
१५	पंजाब	१६६७	१०१७	१:.६१
१६	मध्य भारत	११८	६६	१:.५
१७	संयुक्त प्रान्त	३०७३	१५५९	१:.५
१८	मध्य प्रान्त	१६३३	८१५	१:.५
		२०४४५	२६३८०	

जन संख्या के अनुपात से विदेशी ईसाई प्रचारकों की संख्या सन् १९२२-२४ ई०

प्रान्त	विदेशी प्रचारकों की संख्या प्रति १०००,००० पर	एक कार्य-कर्त्ता के अन्तर्गत जन संख्या
१. देहली	९२	८, १३६
२. सिकिम	७३	१३, ६२०
३. मैसूर	२७	३७, १३९
४. मध्य भारत	२५.५	३९, १६५
५. मद्रास	२४.५	४०, ९०७
६. आसाम	२०.७	४८, १४०
७. पंजाब	२०.०	४९, ९०२
८. उत्तर प्रदेश	१५.०	६७, ११५
९. हैदराबाद	१३.०	७३, ९६३
१०. सेन्ट्रलइण्डियाऐजेन्सी	१३.०	७६, ८८४
११. बंगाल	१२.७	७८, ६९५
१२. बम्बई प्रदेश	११.३	८२, १२२
१३. बड़ोदा	१०.३	९६, ६६०
१४. बिहार उड़ीसा	७.०	११४, ०००
१५. काश्मीर	८.४	११८, ५८९
१६. राजपूताना	७.७	१४७, ७०९
१७. ग्वालियर	६.५	१५१, ७१८
कुल अनुपात	१७.६	५६, ५५४

नोटः— यह स्मरण रखना चाहिये कि ऊपर लिखित अनुपात भारत की कुल जन संख्या के साथ है जब कि आर्य समाज के प्रभाव से उस समय ईसाई लोगों का क्षेत्र केवल हरिजन तथा आदि वासी ही रह गये थे। अतः यदि उनकी संख्या के साथ अनुपात लगाया जाय तो यह अनुपात बहुत अधिक बैठेगा।

भिन्न २ ईसाई संस्थाओं में काम कर रहे भारतीय ईसाई प्रचारकों का मान-चित्र सन् १९२२-२४ ई०

प्रान्त	भारतीय ईसाई प्रचारक								
	पुरुष प्रचारक संख्या निम्न कार्यों में—				महिला प्रचारक संख्या निम्न कार्यों में—				
							मैडीकल		
	धर्म-प्रचार	शिक्षा	मैडीकल	अन्य संस्थायें	धर्म-प्रचार	शिक्षा	डाक्टर	नर्स	अन्य संस्थायें
१. आसाम	७३१	२३८९	६२	४२	९६	१७६	७	२२	१
२. बड़ौदा	७६	२१	२	१	३१	२२	०	७	
३. बंगाल	६१७	९०३	५९	१०१	२४१	८८४	६	३४	३
४. बिहार उड़ीसा	९०२	९६७	५०	५६	२५९	३६८	३१	०	२
५. कुर्ग	५	१०	०	०	०	१	०	०	
६. बम्बई	९३३	१०४५	७६	१४५	५४०	७३१	७४	२२	१४
७. सैन्ट्रल इण्डिया	८९	४७	१३	१३	१६	६०	१२	३१	१
८. सैन्ट्रल प्राविंस	७६०	५५२	५२	१३६	८१३	४०५	२२	८३	६८
९. देहली	३६	४९	०	३	२४	३६	२	१२	
१०. ग्वालियर	१४	५	८	२	६	१८	१	२	
११. हैदराबाद	७३६	३१३	२८	३७८	४०८	४०४	१६	१८	३८
१२. काश्मीर	१०	९	४	०	२	२	०	३	
१३. मदरास	५७२३	७९८२	१४१	४८३	१०७३	३३०७	९	२३८	१७
१४. मैसूर	१०३	१३६	१२	२१	३५	१६५	३	४१	७
१५. पंजाब	९८१	५६२	२८	९१	५०८	३२४	१९	११५	२
१६. राजपूताना	११९	१०७	७	९	८४	९६	३	४८	
१७. सिक्किम	१०	१०	५	०	०	१	०	०	
१८. उत्तर प्रदेश	१६७२	६०७	३२	४९	११०४	७०६	४१	६७	१
कुल जोड़	१३५२३	१५४९९	५७१	१५३०	५२५८	७७४०	२४६	६८३	९७

भिन्न २ ईसाई संस्थाओं में काम कर रहे विदेशी ईसाई प्रचारकों का मान-चित्र सन् १६२२-२४ ई०

(नर्स)	(अन्य संस्थायें)	विदेशी प्रचारक — पुरुष प्रचारक संख्या निम्न कार्यों में—				महिला प्रचारक संख्या निम्न कार्यों में					स्कूल तथा कालेज की कुल संख्या
		धर्म-प्रचार	शिक्षा	मैडीकल	अन्य संस्थायें	धर्म-प्रचार	शिक्षा	मैडीकल — डाक्टर	मैडीकल — नर्स	अन्य संस्थायें	
२२	१	१४	१०	५	३	११	२७	२	६	३२	१००६
७		१	२	०	०	२	४	२	१	३	५८
३४	[illegible]	११८	४२	९	३०	१०४	८१	१३	५	९७	९२५
०	[illegible]	८३	२१	३	१०	५८	४९	१७	०	२९	६९४
०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	६
२२	[illegible]	१८७	४३	१४	२५	१७३	१२२	३९	१५	१२७	११०७
३१	[illegible]	१७	४	२	०	६	५	३	४	१७	३३
८३	६८	८९	२५	४	२०	१०४	५३	१४	१३	८४	४०९
१२	[illegible]	६	८	०	२	९	८	३	६	६	४७
२	[illegible]	१	२	२	०	१	४	४	१	४	७
१८	[illegible]	४२	५	३	५	१७	३१	७	१३	४०	८५८
३	[illegible]	४	३	४	०	२	१	३	४	८	१९
[illegible]	[illegible]	२१४	७३	२१	१९	१२६	१४७	२८	३५	१८०	६७१४
[illegible]	[illegible]	३३	१०	४	१	१६	२०	५	१२	१७	३१६
[illegible]	[illegible]	६	७९	१०	१४	९२	५२	२८	२५	१००	५०१
[illegible]	[illegible]	१०	३	३	१	११	१३	७	५	१६	११७
०	[illegible]	०	०	०	०	०	०	०	०	०	११
	१९	१०५	९९	७	३६	१९२	१४७	१६	१४	१०४	९०३

९७४ १०३० ४२६ ९५ १६६ ९३३ ७६४ १९१ १५९ ८६४ १३५८१

महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज

संसार में चक्रवर्ती राज्य करने वाली आर्य जाति की जब दिन दहाड़े मुसलमानों तथा ईसाइयों द्वारा लूट हो रही थी और उन्हें टोकने तक का साहस किसी में नहीं था तो गुरु विरजानन्द जी की कुटिया से एक वैदिक ज्योति का प्रकाश हुआ, जिसने भारत ही नहीं अपितु सारे विश्व के धार्मिक तथा राजनैतिक लुटेरों, तथा अन्ध विश्वासियों, रूढ़िवादियों, ढोंगी तथा पाखण्डियों को चकाचौंध कर दिया। अज्ञानान्धकार में विचरने वाले मौलवी तथा पादरियों को इस विद्युत के सामने अपनी वाणी तो दूर अपनी आंखें तक खोलने का साहस न हुआ। हिन्दुओं की लूट के स्थान पर उन्हें स्वयं अपना अस्तित्व मृत्योन्मुख दिखाई पड़ने लगा।

अपने सुनहरी स्वप्नों को इस प्रकार विलीन होते देख पादरियों तथा मौलवियों ने मिलकर चान्दापुर के धार्मिक मेले में जो कि रुहेलखण्ड जि० शाहजहांपुर में है इस विशाल चट्टान के सन्मुख टकराने का दुःसाहस किया। पादरी स्काट साहब, पादरी नोबिल साहब, पादरी पार्कर साहब, पादरी जान्सन, मौलवी कासम साहब, तथा मौलवी सैयद अब्दुल मंसूर मिलकर इस अखाड़े में महर्षि दयानन्द के विरुद्ध उतरे और निम्न प्रश्नों पर शास्त्रार्थ किया—

(१) सृष्टि को परमेश्वर ने किस चीज़ से किस समय और किस लिये बनाया?

(२) ईश्वर सब में व्यापक है या नहीं?

(३) ईश्वर न्यायकारी तथा दयालु किस प्रकार है?

(४) वेद, बाइबिल तथा कुरान के ईश्वरोक्त होने में क्या प्रमाण हैं।

(५) मुक्ति क्या है और किस प्रकार मिल सकती है?

दुर्भाग्यवश सिर मुड़ाते ही ओले पड़ गये अथवा 'मियां तो गये नमाज से पीछा छुड़ाने, परन्तु रोजे गले पड़ गये।' शास्त्रार्थ प्रारम्भ होते ही पहले प्रश्न पर पादरी तथा मौलवियों को अपनी अज्ञानता का भान हो गया और वे किसी प्रकार अपना पीछा छुड़ाने की चिन्ता में पड़ गये। परन्तु कम्बल के भुलावे में जब रीछ को पकड़ बैठे तब फिर उससे अलग होने की बात अपने हाथ में कहां रही। आखिर सीमित समय ने उनकी प्राण-रक्षा की; और फिर जीवन पर्यन्त भूल कर भी किसी पादरी तथा मौलवी ने महर्षि के सन्मुख आने का साहस नहीं किया। परन्तु महर्षि इस प्रकार सरलता से कब पीछा छोड़ने वाले थे। उन्होंने इन पाखण्डों को भारत भूमि से समूल नष्ट कर देने का दृढ़ निश्चय कर सन् १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना करदी और उसके मार्ग-प्रदर्शनार्थ सत्यार्थप्रकाश की रचना कर डाली।

फिर क्या था महर्षि की कृपा से देश का वातावरण ही बदल गया। निराशा की काली घटा छिन्न-भिन्न हो आशा का सूर्य चमक उठा। पांच हजार वर्ष से सोये आर्य नवयुवक अंगड़ाई लेकर उठ खड़े हुए और उनका स्वाभिमान पुनः जाग उठा। स्वराज्य, चक्रवर्ती साम्राज्य, कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के नारे लगाने के लिये उनके होठ फड़-फड़ाने लगे और भगवान राम तथा कृष्ण की याद उनकी दयनीय दशा पर उन्हें धिक्कारने लगी। भूखे शेरों की भांति जब इन्होंने अपने लक्ष्य की ओर देखा तो शत्रु शिविर में हाहाकार मच गया, परन्तु शोक कि इन आर्य शेरों के पैरों में इन्ही के पौराणिक भाइयों ने बेड़ियां डालदीं अन्यथा उनकी एक ही दहाड़ में भारत पवित्र हो जाता; और मातृ-भूमि को खण्डित करने वालों तथा इसे अपने चंगुल में फंसाने वालों का यहां चिन्ह तक देखने को न मिलता। परन्तु "इस घर को आग लग गई घर के चिराग से" वाली कहावत की यहां पुनः पुनरावृत्ति हुई और अपने ही लोगों ने उस प्रकाशस्तम्भ को जहर देकर विरोधियों के घर में घी के दीपक जलवा दिये।

ईसाइयों को क्षेत्र बदलना ही पड़ा

महर्षि के अलग हो जाने पर भी आर्य समाज ने उनकी ज्योति को बुझने नहीं दिया और अपने गुरुकुलों, स्कूल-कालेजों, प्रचारकों, शास्त्रार्थों तथा उत्सवों द्वारा उसके प्रकाश को भारत के कोने २ में फैलाने की चेष्टा की। परिणाम स्वरूप ईसाइयों को अपना प्रचार करना असम्भव हो गया। उनके बड़े २ प्रचार केन्द्र उजड़ गये। उनके स्कूलों तथा अस्पतालों से सहायता पाकर भी लोग उलटे उनके साथ ही शास्त्रार्थ करने पर उतारू हो गये। यहां तक कि ईसाई समाज हरिजनों की भांति घृणित तथा हेय समझा जाने लगा, जिससे उच्च वर्ण के लोग इनसे बात तक करने में अपना अपमान समझने लगे। फल यह हुआ कि भारत के जिस स्थान पर आर्य समाज की स्थापना मात्र हो गई वहां से इन्हें अपना बिस्तरा बोरिया बांधना ही पड़ा।

अन्त में विवश होकर इन्होंने उन स्थानों को अपना प्रचार-केन्द्र बनाया जो कि आर्य समाज की दृष्टि से ओझल थे, और जहां के समाचार भी उसके कानों तक पहुँचना दुर्लभ थे अर्थात् पहाड़ों तथा सघन जंगलों में बसने वाली अपढ़ तथा निर्धन जातियों को इन्होंने अपना लक्ष्य बनाया। यूरोपियन नवयुवक तथा नवयुवतियों ने उन जंगली लोगों की भाषा तथा वेश-भूषा से परिचित हो उन पर्वतों में जाकर तपस्वियों का सा जीवन व्यतीत किया और शिक्षा तथा दवाइयों के द्वारा उनकी मूक सेवा करनी प्रारम्भ कर दी। इस प्रकार मध्य भारत के भीलों, मध्य प्रदेश के गोंडों, सन्थाल परगना तथा छोटा नागपुर के सन्थालों, गढ़वाल के शिल्पकारों, आसाम के खसिया, जैन्तिया नागाओं तथा दक्षिण भारत के कैवर्त्त, परिय, प्रलय, एड्वा आदि अछूत कहे जाने वाली जातियों में इन्होंने अपने बड़े २ मिशन स्थापित किये।

ब्रिटिश सरकार का सहयोग

अपने मिशनरियों की असफलता पर अंग्रेज शासक मन ही मन खीज रहे थे और उन्हें सफल बनाने के निमित्त अति ही चिन्तित थे। अन्त में उन्होंने एक भयंकर षडयन्त्र की रचना कर यहां की आर्य जाति की पीठ में ऐसा छुरा भोंका कि जिसके घाव को यह जीवन पर्यन्त न भर सकेगी। उन्होंने आर्य जाति का जन्म-स्थान मध्य एशिया सिद्ध कर उसे भारत में विदेशी आक्रान्ता के रूप में लाकर खड़ा कर दिया, और यहां के द्राविड़ों तथा पर्वतीय लोगों को आदिवासी का नाम दे उन्हें सदैव के लिये इनसे अलग करनेकी चेष्टा की। आदिवासी कही जाने वाली जातियों को इन्होंने सन् १९४१ ई० की जनगणना में हिन्दुओं से सर्वथा प्रथक् कर दिया, जब कि सन् १९३१ ई० की जनगणना में ये हिन्दुओं में ही लिखे गये थे। इतना ही नहीं इस लूट की मात्रा को भी यथासम्भव खूब बढ़ाया गया। इन आदिवासी कही जाने वाली जातियों की संख्या जहां सन् १९२१ ई० में ७६,११,८०२ थी वहां सन् १९४१ ई० में इनकी संख्या २,४४१४९९ बना दी गई।

इस षडयन्त्र की यहीं समाप्ति नहीं हुई अपितु पादरियों के मार्ग को निष्कंटक तथा निर्विरोध बनाने के हेतु इन जातियों के क्षेत्रों को "पार्शली एक्सक्ल्यूडेड" अथवा "आंशिक बहिर्गत क्षेत्र" घोषित कर दिया और इन्हें सीधे गवर्नरों की संरक्षता में रख दिया, ताकि कोई भी आर्य समाजादि संस्था वहां गवर्नर की आज्ञा के बिना प्रवेश ही न कर सके। इस प्रकार अंग्रेज सरकार ने लगभग ढाई करोड़ हिन्दुओं को इन पादरी भेड़ियों के सम्मुख इस ढङ्ग से डाल दिया कि उनके चीत्कार को भी कोई न सुन सके। यह है इन गोरी चमड़ी वाले देवताओं की गन्दी मनोवृत्ति जिसे ये सभ्यता की ओट में छिपाये फिरते हैं।

ईसाई मिशनरियों को एक सुरक्षित क्षेत्र निर्धारित कर अंग्रेज सरकार ने एक विभाग Ecclesiastical Department का निर्माण किया जिसके द्वारा भारत में बनी ईसाई कब्रों के प्रबन्ध तथा ईसाई प्रचारकों की सहायतार्थ लाखों रुपया प्रति वर्ष दिया जाने लगा। इसके अतिरिक्त प्रत्येक प्रान्तीय अंग्रेज अधिकारी ने वहां की ईसाई संस्थाओं को अपनी प्रांतीय सरकारों, डिस्ट्रिक्ट बोर्डों तथा म्युनिसिपल कमेटियों से अपार धन-राशि दिलवाई अर्थात् 'हमारी जूती और हमारा ही सिर' वाली कहावत इन्होंने यहां चरितार्थ की।

पादरियों की काली करतूतें

अंग्रेजों की छत्रछाया में ईसाई मिशनरियों ने यहां की आदिवासी कही जाने वाली जातियों के साथ किस प्रकार का क्रूर व्यवहार कर उन्हें बलात् ईसाई बनने पर विवश किया इसकी कहानी इन्हीं के एक प्रतिष्ठित तथा सुयोग्य व्यक्ति मि० एलबिन के मुख से ही सुनिये, जो कि इंग्लैण्ड की आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के डी. एस. सी. तथा प्राणी शास्त्र के विशेषज्ञ हैं। आप स्वयं एक दिन भारत में पादरी बनकर आये थे, किन्तु बाद में आपको यह कार्य रुचिकर नहीं लगा और आप फादर एलबिन से मि० वेरियर एलबिन बन गये और वर्षों से मध्य प्रदेश में माण्डला जिले के पाटनगढ़ स्थान में "भूमि जन सेवा मण्डल" स्थापित करके वहां के मूल निवासियों में बड़ा प्रशंनीय सेवा कार्य कर रहे हैं। आपने एक गोंड स्त्री से विवाह किया है जिससे एक पुत्र भी है। आपको ईसाई लोगों की कुचालों से इतनी घृणा हुई, कि आपने अपनी धर्मपत्नी सौःकोसी बाई तथा पुत्र जवाहर उर्फ कुमार को भी आज तक ईसाई नहीं बनाया। आपने ही सर्व प्रथम गवर्नरों द्वारा संचालित इन लोह आवरणों के अन्दर घटने वाली काली करतूतों का भण्डा-फोड़ किया जिन्हें सुन कर सारा देश भौंचक्का रह गया। आपका कहना है कि :—

"इन प्रदेशों में सरकारी अफसरों के करने के बहुत से कार्य खुद मिशनरी ही करते हैं। अदालतों के काम में तथा स्थानीय अधिकारियों के काम-काज में वे हस्तक्षेप करते हैं और वहां के गोंडों पर यह प्रभाव डालते हैं कि वास्तविक सरकार वे ही हैं। मूल निवासियों में व्यापक रूप से यह आतङ्क छाया हुआ हैं और यह बिल्कुल ठीक है—कि मिशनरी लोग उन्हें पीटेंगे या फादर लोग उनके घरों में घुस कर उनकी स्त्रियों को घसीटेंगे—दुराचार के लिये नहीं कि बल्कि यह पता लगाने के लिये कि उनका विवाह कानूनी तौर पर हुआ है या नहीं (जो ऐसी धमकी है कि बड़े २ सुसंस्कृत लोगों को भी परेशानी में डाल सकती है)। इसके अलावा रुपया उधार देकर भी लोगों को बस में करने की तरकीब भी इन लोगों के द्वारा धर्म परिवर्तन के लिये काम में लाई जाती है। मूल निवासी गोंड ऐसी अवस्था में इनके चक्कर में न पड़ें तो क्या करें।" आपने बड़े ही कड़े शब्दों में कहा कि 'बहिर्गत क्षेत्र' बनाने का यह तात्पर्य कदापि नहीं कि माण्डला जिले को डच उपनिवेश बना दिया जाय और गोंडों तथा बैगों को धर्म-भ्रष्ट होने के लिये विवश किया जाय।"

आपने प्रमाण देते हुए कहा कि "डिंडौरी तहसील के मूल निवासियों के पास से जिला माण्डला के डिप्टी कमिश्नर के दफ्तर में सैकड़ों अर्जियां आ रही हैं जिनमें यह लिखा रहता है कि मूल निवासी लोग अपने हिन्दू धर्म से पूर्ववत प्रेम करते हैं, और यह प्रार्थना करते हैं कि इनके गांव में ईसाई मिशनरियों को स्कूल आदि न खोलने दिये जायं, क्योंकि वहां सैकड़ों मूल निवासियों को चकमा देकर, धमकी देकर या रुपये से खरीद कर ईसाई बना डाला गया है; और उनका समूचा समाज बिल्कुल समाप्त हो जाने के खतरे में है।

सीधे-सादे और भोले देहातियों को अपनी शक्ति के अन्दर लाने के निमित्त मिशनरियों के तरीके बहुत सीधे तथा जोरदार हैं। पहले तो वे कसम खाते हैं कि उनका इरादा उन्हें धर्म-भ्रष्ट करने का नहीं

है, परन्तु कुछ ही मास के पश्चात् देहाती लोग 'सीता राम' 'जय राम जी' के स्थान पर 'जय यीशु' का अभिवादन करने लग जाते हैं और जो आदमी 'जय यीशु' नहीं कहता उससे वे बात भी नहीं करते। अब तो वे बहुत से हिन्दुओं को भी अध्यापक बनाने लगे हैं। वेतन के लिये वे उन्हें निश्चित रूप से शनिवार को ही बुलाते हैं ताकि दूसरे दिन रविवार को उन्हें गिरजाघर में जाने को भी विवश किया जा सके। एक हिन्दू शिक्षक ने मुझ से कहा कि जब वह कैथोलिक मिशन के केन्द्र में पहुँचा तो उसको लाचार किया गया कि वह घुटना टेके, अपना क्रास बनावे और "जय यीशु" का उच्चारण करे।

"मिशनरी लोग भोले-भाले गोंडों के अंगूठे के निशान ले लिया करते हैं और बाद में धमकाते हैं कि ईसाइयों के धर्म का समर्थन न करने पर उन पर फौज़दारी मुक़दमा चलाया जायगा। गोंडों में आम तौर से ऐसा आतंक छाया हुआ है कि मिशनरी लोग उन्हें अवश्य पीटेंगे। एक मिशनरी प्रचारक ने मेरे एक कार्य-कर्ता से इतना तक कह डाला कि यदि उस अभागे ने ईसाइयों से किंचित् मात्र भी विरोध का साहस किया तो फादर खुद अपनी बन्दूक लाकर उसे खतम कर डालेंगे।"

यह है भारत के विशाल पर्वतीय क्षेत्र के केवल एक छोटे से जिले का वर्णन जो कि देश के मध्य में स्थित है। यह भी सौभाग्य से उन्हीं के एक सदस्य से ज्ञात हो गया, अन्यथा उस लोह पर्दा के अन्दर कहां-कहां क्या क्या हो रहा था इसे कौन जान सकता था। ज़रा उन क्षेत्रों की स्थिति का तो अनुमान लगाइये जो कि देश के दूरस्थ कोनों में स्थित हैं और जहां पहुँचना अति ही दुर्लभ है। इस पर भी वहां जाने के लिये गवर्नर बहादुर को विशेष आज्ञा प्राप्त करना अनिवार्य था।

इसके अतिरिक्त यह केवल डच मिशन के षडयन्त्र का एक अंश मात्र था। भारत में इससे कहीं अधिक शक्तिशाली मिशन इटली, स्पेन

आस्ट्रेलिया, इंगलैण्ड, अमेरिका, कैनेडा, फ्रांस, पुर्तगाल आदि समृद्ध शाली देशों से सम्बन्धित यहां कार्य कर रहे हैं और चाल बाजियों, धूर्तता तथा षडयन्त्र-रचना में ये इसके गुरु हैं।

लोह आवरण का चमत्कार

लोह आवरण के अन्दर इन ईसाई मिशनों ने अपना साम, दाम, दण्ड, तथा भेद नीति के आधार पर जो चमत्कार किया उसका मैदानों के विशाल नगरों में चैन की वंशी बजाने वाले बाबू लोगों द्वारा अनुमान भी लगाना असम्भव है। इसे तो वे ही लोग जान सकते हैं जिन्हें कभी ट्रावनकोर, कोचीन, छोटा नागपुर, आसाम, गोआ आदि की ईसाई बस्तियों में जाने का अवसर प्राप्त हुआ हो। मुझे स्वयं इनमें से अधिकांश भागों में जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। वहां पहुँचने पर मुझे बहुधा रुक २ कर यह सन्देह होता था कि मैं भारतमें हूं या किसी यूरोपियन देश में। किसी भी जगह उनके वेश, खान-पान, रहन-सहन, भाषा, विचार आदि बातों में, जो कि किसी भी देश की राष्ट्रीयता के मूलाधार होते हैं, मुझे भारतीयता के दर्शन नहीं हुए। यहां तक कि आसाम प्रान्त के दूरस्थ जंगलों में जब मुझे वहां खसिया जाति के सम्पर्क में आने का अवसर मिला तो मुझे उनके साथ हिन्दी में नहीं अंग्रेजी में बातें करनी पड़ीं। जब कभी मुझे वहां की गलियां तथा सड़कों पर जाते हुए उनके घरों में बज रहे रेडियो को सुनने का मौका मिला तो एक भी अवसर ऐसा न हुआ कि जब मैंने उन पर किसी भी भारतीय रेडियो-स्टेशन के गाने तथा समाचार सुने हों अन्यथा उन पर सदैव विदेशी तान तथा राग सुनने को मिले। मुझे वह दृश्य आज तक भूले नहीं भुलाता जब कि आसाम की राजधानी शिलाङ्ग में ईसाइयों की एक अपार भीड़ में वहां के गवर्नर श्री माननीय दौलतराम जी अपना अंग्रेजी में भाषण दे रहे थे और दूर पहाड़ियों से आये ईसाई लोग

बड़े प्रेम के साथ उसको सुन रहे थे और दूसरी तरफ सैकड़ों विदेशी पादरी तथा पादरी महिलायें अपना २ शानदार चोगा पहिने अपनी विजय पर मन ही मन मुस्करा रहे थे। मैं एक कोने में खड़ा अपनी जाति के ह्रास तथा इसके कर्णधारों की अकर्मण्यता तथा अदूरदर्शिता पर मन ही मन रो रहा था।

सारांश यह है कि इन बहिर्गत क्षेत्रों में कुछ ही वर्षों के अन्दर आर्य जाति के लाखों लाख ईसाई धर्म के पेट में समा गये और हमें उनके लिये दो आंसू तक बहाने का अवकाश न मिला। आदिवासियों की कई जातियां तो पूर्णतः ईसाई बन गईं और बहुत सी मृतप्राय हो गईं अर्थात् उनके अधिकांश व्यक्ति ईसाई बन गये, और जो शेष बच गये वे अछूतों जैसा घृणित जीवन व्यतीत करने लगे। उदाहरणार्थ आसाम की लुशाई जाति लगभग पूरी ईसाई बनाली गई और खसिया जाति का चौथाई से अधिक भाग ईसाई बन गया। नागा जाति ७५०/० के लगभग ईसाई बन गई। छोटा नागपुर के झारखण्ड में भी वहां की अधिकांश जंगली जातियां मिशन के चंगुल में फंस गईं। छोटा नागपुर की सफलता पर भारत में पधारे साइमन कमीशन ने भी सन्तोष प्रकट करते हुए अपनी रिपोर्ट में कहा था कि वहां १० वर्ष पूर्व ही १ लाख के लगभग आदि वासी ईसाई बन गये थे।

सब से बड़ी सफलता ईसाइयों को ट्रावनकोर, कोचीन तथा मैसूर में मिली जहां ईसाइयों का प्रबल गढ़ बन गया। वहां एक २ मील पर चर्च बन गये, स्थान २ पर मिशन के स्कूल, कालेज, हस्पताल, नर्सिंग होम परिचर्या भवन, अनाथालय और वनिताश्रम खुल गये। ट्रावनकोर की ६० लाख जनगणना में से २० लाख, ईसाई बना दिये गये और इसी प्रकार कोचीन की हिन्दू रियासत में भी आबादी का एक तिहाई हिस्सा मिशन के चक्कर में आ गया। इसी अनुपात से भारत के प्रत्येक पर्वतीय भागों में ईसाइयों को सफलता मिली। इस

प्रकार भारत के एक करोड़ आर्य भगवान राम और कृष्ण की गोद से खींच कर ईसा की भेड़ों में डाल दिये गये। दक्षिण की महान् सफलता के सम्बन्ध में एक प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि वह भाग 'बहिर्गत भाग' न होते हुए भी ईसाइयों के चंगुल में कैसे फंस गया। इसका एक मात्र उत्तर वहां की ब्राह्मण तथा अब्राह्मण समस्या ही इनकी सफलता का प्रधान कारण रही है। अर्थात् ब्राह्मणों के दुर्व्यवहार के प्रतिशोध स्वरूप वहां के अब्राह्मण लोग मिशन की शरण में चले गये।

ब्लन्ट साहब द्वारा स्वीकृत

श्रीयुत ब्लन्ट आई० सी० एस० ने सन् १९०१ ई० में हुई उत्तर प्रदेश की जनगणना की रिपोर्ट में इस सत्य को स्वीकार किया है कि भारत में ईसाइयत का प्रचार धर्म की अपेक्षा अन्य (राजनैतिक) दृष्टिकोण से अधिक महत्वपूर्ण रहा हैं। आपके शब्द हैं:—

"Future of christianity was of some importance apart from it's spiritual aspect."

पादरी लोग सन्तुष्ट नहीं

पाठकों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि भारत में पधारे सभी मिशनरी अपनी इस मन्द गति पर अति ही लज्जित हैं। उनका कहना है कि संसार के इतिहास में ईसाई मिशनरी यदि कहीं असफल हुए हैं तो भारत भूमि में। वे अब तक यहां की जनता का केवल दो प्रतिशत भाग ही अपने चंगुल में फंसा सके हैं और वह भी यहां का दलित वर्ग। आश्चर्य तो इस बात का है कि यहां के उच्च वर्ग ने इन्हें घास तक नहीं डाली। डालते भी कैसे जब कि धार्मिक दृष्टि से उनके पास देने को कुछ था ही नहीं। यहां की सामाजिक कुरीतियों, छूत छात, गरीबी या तलवार का सहारा लेकर ही वे अपनी सफलता को चार चांद लगा सकते थे, जैसा कि उनके

समरूपी मुसलमानों ने किया; और जैसा स्वयं उन्होंने अंग्रेजों की छत्र-छाया में आदिवासियों के अन्दर तथा दक्षिण में किया। इनका सब से बड़ा दुर्भाग्य यह रहा कि यहां महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज ने इनके कहीं पैर ही नहीं जमने दिये।

स्वतन्त्रता संग्राम के शत्रु

यों तो सिद्धान्ततः, सुदृढ़ राष्ट्रीयता के निमित्त राष्ट्रके निवासियोंमें एक भाषा, संस्कृति, धर्म तथा सभ्यता का होना परमावश्यक है, परन्तु धार्मिक विश्वास भिन्न हो जाने पर भी यदि लोगों में अन्य बातों की एकता बनी रहे तब भी बहुत खतरा रहता है, परन्तु इसके सर्वथा विपरीत ईसाई तथा मुसलमान दोनों ने ही यहां के लोगों का धर्म परिवर्तन ही नहीं किया अपितु उन्हें प्रत्येक दृष्टि से भारत राष्ट्र का शत्रु बना दिया। यही कारण था कि यहां स्वतन्त्रता संग्राम में दोनों ने ही कोई सहयोग नहीं दिया। मुसलमान तो सौदेबाजों की भांति अंग्रेजों तथा कांग्रेसी नेताओं दोनों ही से अपने लाभार्थ समय २ पर सौदेबाजी करते भी रहे; परन्तु ईसाइयों ने तो अंग्रेजों को सजातीय जान उनके राज्य को अपना ही राज्य समझा और यहां का गया गुजरा हरिजन ईसाई भी अपने को यहां का राजा ही अनुभव करता था और स्वतन्त्रता संग्राममें वह अपनी मृत्यु देखता था। अतः वह यहां के देश-प्रेमियों का शत्रु ही नहीं रहा, अपितु उसने यहां अंग्रेजों की गुप्तचरी का सफल कार्य किया। असेम्बली भवन में जब भारत के सपूत श्री पूज्य मालवीय जी, श्री स्व० विट्ठल भाई पटेल, आदि देश के हित के लिये लड़ते थे तो ये देश-द्रोही ईसाई सदैव अंग्रेजों के पक्ष का समर्थन किया करते थे। इन्हें स्वप्न में भी यह विश्वास नहीं था कि अंग्रेज कभी भारत को छोड़ भी सकेंगे।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात्

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् जब स्वतन्त्रता की चिन्गारियां देश-रत्न श्री सुभाष बाबू के द्वारा यहां की फौजों तक में फैलादी गईं तो यहां की गोरी चमड़े वालों ने, यहां अधिक दिन शासन करने की बात तो दूर रही, यहां से सुरक्षित इंग्लैंड पहुंचने को ही अपना परम सौभाग्य समझना प्रारम्भ कर दिया; क्योंकि उनको कलुषित आत्मायें अपने द्वारा किए गए अत्याचारों को स्मरण कर कम्पायमान हो उठीं थीं और उन्हें भारतीयों के अन्दर प्रतिशोध की भावना के भड़क उठने का प्रत्येक क्षण भय लगने लगा था। इसी भय से ग्रसित पादरी लोगों ने भी अपना बिस्तर-बोरिया बांधना प्रारम्भ कर दिया था। बड़े २ मिशनों की सम्पत्तियां नीलाम होने लगीं। उदाहरणार्थ आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० सात्वलेकर जी ने इन्हीं दिनों लगभग एक लाख रु० में पारडी (सूरत) के एक मिशन के विशाल भवनों को खरीदा। नीलामी का यह क्रम प्रारम्भ ही हुआ था कि लार्ड माउंट बेटन की कृपा से उन्हें यहां की समस्या का शांतिपूर्वक ढंग से समाधान होता हुआ दिखलाई देने लगा। अतः पादरियों ने यहां कुछ समय प्रतीक्षा करने में ही भलाई समझी।

सन् १९४७ ई० में स्वतन्त्रता की प्राप्ति के पश्चात् जब भारत में धर्म निरपेक्ष राज्य की घोषणा हुई और भारत ने कामन वैल्थ में ही रहने का निश्चय किया तो मिशनरी लोगों के बंधे बंधाए बिस्तरे पुनः खुल गए।

प्रधान मन्त्री श्री नेहरू का आशीर्वाद

अपने कुकर्मों एवं कुवृत्तियों से आच्छादित मिशनरियों की कलुषित आत्मायें उस दिन खिल उठीं और बेलगाम बन गईं जिस दिन कि देश के सर्वेसर्वा श्री पं० जवाहरलाल जी नेहरू ने उनकी

राष्ट्र विरोधी मनोवृत्ति की ओर लेश मात्र भी संकेत न करते हुए ईसाई धर्मको देशके लिए एक ईश्वरीय देन बतलाया और भारतके गत उज्ज्वल इतिहास में अन्य धर्मों की भांति इसका भी महत्वपूर्ण सहयोग बतलाया। जब देश के प्रधान मन्त्री से ही आशीर्वाद प्राप्त हो गया तो फिर इन्हें यहां टोकने वाला कौन था। अतः इस आशीर्वाद का इतना कुपरिणाम हुआ कि प्रान्तीय सरकारों ने इनकी गति विधियों पर दृष्टि रखने के स्थान पर इन्हें उलटा सहयोग प्रदान किया और पादरी लोगों ने नये सिरे से अपनी कुचालों को चलाना प्रारम्भ कर दिया। प्रमाण स्वरूप निम्न वक्तव्य को पढ़िये :—

श्री ठेवल उरांव द्वारा रहस्योद्घाटन

छोटा नागपुर के संसद के भूतपूर्व सदस्य श्री ठेवल उरांव ने उस क्षेत्र में मिशनरियों की अनुचित हरकतों की ओर संकेत करते हुए श्री प्रधान जी को एक पत्र लिखा, जिसका समाचार पटना से निकलने वाले आर्यावर्त के ता० २६-११-५३ के अंक में प्रकाशित हुआ। आपने अपने पत्र में आश्चर्य प्रकट किया कि उक्त मिशनरियों को सरकार सहायता के रूप में अब भी लाखों रुपया दे रही है। उन्होंने कहा कि ४ लाख ईसाइयों के निमित्त सरकार २८ लाख रुपया वार्षिक सहायता देती है। बिहार के जन-कार्य मन्त्री के कथन का हवाला देते हुए श्री ठेवल उरांव ने कहा कि एक ओर तो सरकार स्वीकार करती है कि उक्त मिशनरी लोग धर्म-परिवर्तन का कार्य करते हैं और दूसरी ओर वह उन्हें सहायता देती जा रही है।

श्री उरांव ने बतलाया कि ब्रिटिश शासन काल में स्कूलों में बाइबिल की शिक्षा अनिवार्य कर दी गई थी, किन्तु विरोध किए जाने पर उस पर रोक लगा दी गई। परन्तु आज पुनः देहाती क्षेत्रों में बाइबिल को अनिवार्य कर दिया गया है। यह कहना अनुचित न होगा कि बाइबिल की अनिवार्य शिक्षा ईसाई धर्म का प्रचार करना है।

श्री उरांव जी के पत्र के समर्थन में इस समाचार पत्र के इसी अंक का समाचार है कि छोटा नागपुर के सिमडेगा क्षेत्र में किसी रोमन मिशन के शिक्षक ने किसी हिन्दु छात्र की शिखा काट ली।

ईसाई मिशन कांग्रेसी चोले में

भारत में कांग्रेस की तूती बोलते ही मिशनरियों ने अपना चोला बदल डाला और जीवन भर जिन लोगों को कोसते २ [illegible] गले सूख गये थे, उन्हीं की अब इन्होंने प्रशंसा के पुल बांधने प्रारम्भ कर दिये। कांग्रेस के भी सिर पर इस समय अपने को सैक्यूलर सिद्ध करने का भूत सवार था, और अधिक से अधिक वोट बटोरने की धुन उसे लगी थी। अतः उसने स्वार्थवश इनके असली स्वरूप की उपेक्षा कर इन्हें अपना मित्र बना लिया। परिणाम स्वरूप ट्रावनकोर-कोचीन में कांग्रेस के सहयोग से ईसाइयों ने अपनी सरकार बना ली और गुप्त रूप से इसे ईसा स्थान बनाना आरम्भ कर दिया।

स्वतन्त्रता से पूर्व ट्रावनकोर-कोचीन के प्रधान मन्त्री श्रीसर सी०पी० रामास्वामी एय्यर ने जब यह देखा कि मिशनरियों ने राज्य के शिक्षा-क्षेत्र पर अपना पूर्ण अधिकार जमा लिया है और सरकार की ओर से १२ लाख रु० वार्षिक सहायता इनकी उन शिक्षा संस्थाओं को दी जा रही है जहां आर्य बच्चों को ईसाई बनाने के षडयन्त्र रचे जाते हैं तो उन्होंने राज्य को इनके षडयन्त्र से मुक्त करने की दृष्टि से वहां सरकारी स्कूल-कालिजों की स्थापना कराई और धीरे २ ईसाइयों को दी जाने वाली सरकारी सहायता बन्द कर दी।

परन्तु अपनी सरकार बनते ही ईसाइयों ने श्री रामास्वामी जी के समस्त प्रयत्नों पर पानी फेर दिया। ईसाई स्कूल कालिजों को पुनः सहायता दी जाने लगी और साथ ही निश्चित आबादी के लिए स्कूलों की संख्या निश्चित करदी और इस प्रकार पुराने स्कूलों को प्राथमिकता दे दी गई। इसका परिणाम यह हुआ कि नये स्कूल बन्द कर दिए गए

और आर्य बच्चों को पुनः ईसाइयों के जाल में जाने को बाधित कर दिया गया। आर्य जनता ने इस नीति का विरोध भी किया परन्तु उस की एक न सुनी गई। कम्युनिष्टों ने आर्य जनता में उत्पन्न प्रतिशोध की भावना से लाभ उठाकर अपना उल्लू सीधा करना प्रारम्भ कर दिया और देखते ही देखते हजारों आर्य युवक उनके चंगुल में फंस गये।

पिछड़ी जाति के नाम पर ईसाइयों की सहायता

ट्रावनकोर कोचीन की सरकार के अर्थ मन्त्री ने अपना बजट पेश करते हुए पिछड़ी जातियों को सहायता देने की घोषणा की तो ईसाई बनारागरा समस्त लोगों को पिछड़ी जातियों में सम्मिलित करते हुए वह समस्त सुविधायें उन्हें देने की घोषणा की। उनकी घोषणा का वह भाग निम्न पंक्तियों में दिया जाता है—

पिछड़ी जातियों के उद्धार के लिए एक पृथक विभाग का निर्माण किया गया है। वह निम्नलिखित बातों को दृष्टिगोचर रखता हुआ इन जातियों के लिये प्रयत्नशील होगा—

(१) खेती बाड़ी के लिए भूमि प्रदान करना।

(२) उनके निवास के लिए बस्तियां तथा इनके धर्म स्थानों का निर्माण।

(३) रोग चिकित्सा।

(४) सफल पाठशालाओं तथा शिल्प विद्यालयों की स्थापना तथा मार्गों का बनवाना।

(५) उनका उद्धार करने वाली संस्थाओं की आर्थिक सहायता करना।

(६) उनकी बस्तियों में प्रकाश तथा जल का प्रबन्ध करना।

(७) छात्र वृत्तियों तथा पारस्परिक सहायक समितियों का निर्माण करना।

अर्थ मन्त्री के वक्तव्यानुसार प्रत्येक पिछड़ी जाति के विद्यार्थी को मिडिल में २५) रु० मासिक की छात्र-वृत्ति दी जा रही है और हाई स्कूल में ४०) मासिक दिया जा रहा है। तीन लाख रुपया वर्ष में १२०० विद्यार्थियों पर व्यय करने का निश्चय किया गया है। आगामी वर्ष में भी इतना ही रुपया व्यय किया जायगा।

विद्यार्थियों की उक्त गणना में ३८५ बालक हरिजन, ४५६ बालक पिछड़ी जाति के और १३० ईसाई बनारागरा लोगों के हैं। छात्र-वृत्तियों के अतिरिक्त उक्त जातियों के बालकों को शिल्प तथा अन्य शिक्षालयों में प्रत्येक बालक को ५०) से लेकर ७०) तक पुस्तकों के लिए तथा छात्रावास में मासिक व्यय के लिए ४५) से ५०) तक सहायता दी जा रही है।

विदित हो कि पंजाब में ३४ पिछड़ी तथा हरिजन जातियों में वहां की ईसाई बनारागरा लोगों की गणना वहां की सरकार ने नहीं की है, जबकि ट्रावनकोर कोचीन में करली गई है।

इस प्रकार कितनी अतुल धन-राशि वहां की ईसाई सरकार ने ईसाइयों की सहायतार्थ दी इसका अनुमान पाठकगण स्वयं लगायें। यही कारण है कि वहां की सरकार स्थाई नहीं बन सकी और उप-चुनावों में कांगरेस को बुरी तरह हार खानी पड़ी।

श्री जयपाल सिंह जी आदिवासियों के नेता बने

कांगरेस सरकार की उदार नीति का लाभ उठा कर श्री जयपाल सिंह जी ईसाई, जिन्होंने झारखण्ड प्रांत बनाने की आवाज उठाई है, आदिवासियों के नेता बन बैठे और केन्द्र द्वारा दी जाने वाली आदिवासियों की आर्थिक सहायता उन्हीं की सम्पत्ति पर आधारित हो गई। आप ने ईसाइयों को भी आदि वासियों की गणना में सम्मिलित करा दिया। इस के विरोध में

एक प्रतिनिधि मण्डल राष्ट्रपति श्री डा० राजेन्द्र बाबू जी से भी मिला कि जो आदिवासी ईसाई बन गए हैं उन्हें आदिवासियों में सम्मिलित न किया जाय, क्योंकि वे ईसाइयों द्वारा पहले से ही बहुत सहायता पाकर खुशहाल व सुशिक्षित बन गए हैं; और यदि यह सहायता भी उन्हीं को दी गई या उनके द्वारा ही उन्हें दी गई तो आदिवासियों पर इसका बड़ा भारी कुप्रभाव पड़ेगा और इससे उनके ईसाई बनने में ही सहयोग मिलेगा, परन्तु खेद है कि उनकी इस न्याययुक्त मांग पर कोई ध्यान नहीं दिया गया।

अमेरिकन षडयन्त्र

गत विश्व युद्ध के परिणाम स्वरूप इङ्गलैंड का सूर्यास्त तथा अमरीका का सितारा चमका और संसार रूस तथा अमेरिका के नेतृत्व में एक दूसरे के कट्टर विरोधी दो समूहों में बंट गया। यहां के धार्मिक तथा राजनैतिक विचारों के आधार पर अमरीका को दृढ़ विश्वास था कि स्वतन्त्रता की प्राप्ति के पश्चात् भारत उनके गुट में सम्मिलित होगा। परन्तु उसकी आशा के विपरीत भारत ने तटस्थ रहने में ही अपना तथा विश्व का कल्याण समझा। परन्तु भारत की जिस विशाल जन-संख्या के संकेत मात्र पर संसार का भाग्य बदल सकता है तथा भावी विश्व युद्ध की हार-जीत जिसके निर्णय पर आधारित है और भौगोलिक स्थिति के कारण जो रूस के विरुद्ध अति ही उपयोगी तथा सुरक्षित अड्डा बन सकता है उसे भला अमेरिका अछूता कैसे छोड़ सकता था। यहां यह बतलाना परमावश्यक है कि भारत की महत्ता रूस की दृष्टि में भी कभी कम नहीं हुई और उसने भी इसे अपने पक्ष में लाने के अनेकों षडयन्त्र रचे जिनका इस पुस्तक से सम्बन्ध न होने के कारण हम वर्णन न कर सकेंगे और अपने को अमेरिका गुट तक ही सीमित रखेंगे।

अतः अमेरिका ने भारत को अपने पक्ष में घसीटने के निमित्त

अनेकों चालें चलीं और अब भी चल रहा है। उसने साम, दाम, दंड, भेद आदि सभी नीतियों का बड़ी ही चतुराई के साथ सहारा लिया है। श्री पं० जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तत्व तथा राजनीतिज्ञता की समय २ पर प्रशंसा और उन्हें अपने देश में आमन्त्रित कर उनका भव्य स्वागत करना, लाखों मन गेहूं तथा करोड़ों रुपया सहायता एवं ऋण स्वरूप भारत को प्रदान करना, यहां के किसान, डाक्टर, विद्यार्थियों, नाई, सम्पादक आदि को अपने व्यय पर अपने देश की उन्नति एवं समृद्धि से प्रभावित करना आदि बातें उसकी ऊपर वर्णित मनोवृत्ति तथा नीति के ही भिन्न २ स्वरूप मात्र हैं।

परन्तु इतना सब कुछ करने पर भी जब अमेरिका श्री पं० जवाहर लाल जी नेहरू की नीति में परिवर्तन नहीं करा पाया, तो उसने भयंकर कूट नीति का सहारा लिया, जिसके अनुसार उसने पाकिस्तान के द्वारा समस्त मुस्लिम राष्ट्रों को संगठित कर भारत का बहिष्कार कराने तथा एशिया में बढ़ते इसके प्रभाव को समाप्त कराने की चेष्टा की। शेरे काश्मीर शेख अब्दुल्ला के कान में आजाद काश्मीर बनाने का मन्त्र फूंका और भारत में राष्ट्र विरोधी तत्वों तथा संस्थाओं को गुप्त आर्थिक सहायता देकर प्रोत्साहन दिया ताकि नेहरू सरकार असफल हो यहां अमेरिका की कठपुतली सरकार बन जाय जैसा कि इसने ईरान में वहां के प्रधान मन्त्री मुसादिक के विरुद्ध किया। परन्तु दुर्भाग्यवश अमेरिका की यह चाल भी व्यर्थ सिद्ध हुई और अन्त में उसने छिपि-याकर इसकी पीठ में छुरा भोंकने का दृढ़ निश्चय किया और साथ ही उसने पाकिस्तान को फौजी सहायता प्रदान कर भारत को भयभीत करने की भी चेष्टा की है।

वर्तमान विषय से सम्बन्धित न होने के कारण मैं अमेरिका द्वारा दी जा रही पाकिस्तान को फौजी सहायता के सम्बन्ध में पाठकों का अधिक समय न लेता हुआ संकेत स्वरूप इतना ही कह देना यथेष्ट

अनेकों चालें चलीं और अब भी चल रहा है। उसने साम, दाम, दंड, भेद आदि सभी नीतियों का बड़ी ही चतुराई के साथ सहारा लिया है। श्री पं० जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व तथा राजनीतिज्ञता की समय २ पर प्रशंसा और उन्हें अपने देश में आमन्त्रित कर उनका भव्य स्वागत करना, लाखों मन गेहूं तथा करोड़ों रुपया सहायता एवं ऋण स्वरूप भारत को प्रदान करना, यहां के किसान, डाक्टर, विद्यार्थियों, भाई, सम्पादक आदि को अपने व्यय पर अपने देश की उन्नति एवं समृद्धि से प्रभावित करना आदि बातें उसकी ऊपर वर्णित मनोवृत्ति तथा नीति के ही भिन्न २ स्वरूप मात्र हैं।

परन्तु इतना सब कुछ करने पर भी जब अमेरिका श्री पं० जवाहर लाल जी नेहरू की नीति में परिवर्तन नहीं करा पाया, तो उसने भयंकर कूट नीति का सहारा लिया, जिसके अनुसार उसने पाकिस्तान के द्वारा समस्त मुस्लिम राष्ट्रों को संगठित कर भारत का बहिष्कार कराने तथा एशिया में बढ़ते इसके प्रभाव को समाप्त कराने की चेष्टा की। शेरे काश्मीर शेख अब्दुल्ला के कान में आजाद काश्मीर बनाने का मन्त्र फूंका और भारत में राष्ट्र विरोधी तत्वों तथा संस्थाओं को गुप्त आर्थिक सहायता देकर प्रोत्साहन दिया ताकि नेहरू सरकार असफल हो यहां अमेरिका की कठपुतली सरकार बन जाय जैसा कि इसने ईरान में वहां के प्रधान मन्त्री मुसादिक के विरुद्ध किया। परन्तु दुर्भाग्यवश अमेरिका की यह चाल भी व्यर्थ सिद्ध हुई और अन्त में उसने खिसियाकर इसकी पीठ में छुरा भौंकने का दृढ़ निश्चय किया और साथ ही उसने पाकिस्तान को फौजी सहायता प्रदान कर भारत को भयभीत करने की भी चेष्टा की है।

वर्तमान विषय से सम्बन्धित न होने के कारण मैं अमेरिका द्वारा दी जा रही पाकिस्तान को फौजी सहायता के सम्बन्ध में पाठकों का अधिक समय न लेता हुआ संकेत स्वरूप इतना ही कह देना यथेष्ट

समझता हूँ कि इस सहायता के पीछे पाकिस्तान की मृत्यु अपने अवसर की बाट जोह रही है। इस सहायता की वही दशा होगी जो कि उस सहायता की हुई थी जो कि इसी धूर्त राज ने चीन के तानाशाह चांगकाई शेक को दी थी। पाकिस्तान के वर्तमान तानाशाह यदि चांग की भी अवस्था प्राप्त कर लें तो यह इनका बड़ा भारी सौभाग्य होगा। परन्तु खेद तो इस बात का है कि भारतीय नेता, समाचार-पत्र तथा राजनैतिक संस्थाओं का ध्यान एक मात्र इसी सहायता के विरोध में लग रहा है। उस ओर इन्हें दृष्टिपात करने तक की आवश्यकता अनुभव नहीं हो रही है, जहां कि अमेरिका गुप्त द्वार से हमारे घर में आग लगा रहा है।

याद रहे ! धर्मपरिवर्तन की जो ज्वाला अमेरिका तथा उसके मित्र देशों द्वारा यहां जलाई जा रही है उसकी भयंकरता इन टैंकों-बमों से लाख गुना अधिक है। टैंकों तथा बमों के रौंदे राष्ट्र अवसर तथा शक्ति पाकर फिर अपने पूर्व अस्तित्व को प्राप्त कर लेते हैं; परन्तु शीत युद्ध की भट्टी में पड़कर आज तक कोई राष्ट्र नहीं बच सका है। न जाने कितने राष्ट्रों का अस्तित्व इन्हीं भोले-भाले पादरियों की मीठी वाणी ने देखते २ समाप्त कर दिया है। इसकी भयंकरता के दर्शन हमको भी तो पाकिस्तान के रूप में हो चुके हैं। बस ठीक इस मुस्लिम पाकिस्तान की भांति भारत में मिशनरियों ने अनेकों ईसाई पाकिस्तान निर्माण करने तथा यहांकी राष्ट्रीयताको समाप्त कर इसे बल्कान राष्ट्रों की भांति अनेक छोटे २ भागों में विभाजित कर देने की ठानी है ताकि यहां की संगठित शक्ति तथा आत्म निर्भरता का विनाश हो। इसमें एशिया का नेतृत्व करने की सामर्थ्य न रहे और यह अमेरिका के विरुद्ध किसी भी अवस्था में सिर न उठा सके। यदि दुर्भाग्यवश कभी यह सिर उठा भी बैठे तो यहां के करोड़ों ईसाई इसके विरुद्ध देश-व्यापी बगावत कर इसे झुकने पर विवश कर दें।

अमेरिकन षड़यन्त्र की भयंकरता

इस दूषित मनोवृति की पूर्ति के निमित्त अमेरिका यहां क्या कर रहा है इसका पता यहां की जनता को तो क्या यहां की सरकार तक को तब चला जब कि गत चुनावों के अवसर पर आसाम की नागा जाति के लोगों ने अपने स्वतन्त्र राष्ट्र की मांग करदी। इस मांग से भी हमारे कर्णधारों का ध्यान इस मांग के पीछे छिपे षड़यन्त्रकारियों की ओर नहीं गया। इनकी आंखें तो तब खुलीं जब कि हमारे देश के प्रधान मन्त्री श्री पं० जवाहरलाल जी से आसाम के दौरे के समय नागाजाति का एक प्रतिनिधि मण्डल अपनी मांग उनके सन्मुख रखने के निमित्त मिला। उनकी मांगों को आद्योपांत पढ़कर हमारे प्रधान मन्त्री भौंचक्के रहगये और उन्हें विवश होकर यह कहना पड़ा कि उन मांगों का स्वरूप तथा उनके पीछे दीगई दलीलें नागा लोगों की नहीं अपितु विदेशियों द्वारा निर्मित की गई हैं।

इसकी वास्तविकता देश के सन्मुख तब आई जब कि पिछले दिनों भारतीय संसद में देश के गृहमन्त्री श्री डा० कैलाशनाथ जी काटजू ने एक प्रश्न के उत्तर में बतलाया कि १९५०-५२ तक के आंकड़ों के अनुसार इस समय भारत में १७६८ विदेशी धर्म प्रचारक आये हुए हैं। इन प्रचारकों में राष्ट्र मण्डलीय देशों (इंगलैंड, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि) से आये मिशन के प्रचारक सम्मिलित नहीं हैं क्योंकि उन पर वे नियम लागू नहीं होते। उक्त विदेशी धर्म प्रचारकों में १०२८ अमेरिकन १६८ इटालियन, १३० स्पेनिश तथा ४४२ अन्य देशों के प्रचारक हैं। इन ३२ देशों के ईसाई प्रचारकों के अतिरिक्त ब्रिटेन आदि देशों के भी हजारों प्रचारक यहां कार्य कर रहे हैं। श्री काटजू को स्वीकार करना पड़ा है कि ये ईसाई प्रचारक शिक्षा, सेवा एवं चिकित्सा आदि के कार्यों के अतिरिक्त धर्मप्रचार एवं धर्मपरिवर्तन का भी कार्य करते हैं।

इसके अतिरिक्त देश के उप गृहमन्त्री श्री दातारजी ने राज्यपरिषद् में एक प्रश्न का उत्तर देते हुये बतलाया कि भारत में वर्तमान समय विदेशी ईसाई पादरियों की ६५ कैथोलिक और ५० प्रोटेस्टेन्ट संस्थायें काम कर रही हैं, और ५ नई संस्थाओं ने यहां कार्य करने की आज्ञा मांगी है। इनमें से एक ब्रिटेन तथा चार अमेरिकन संस्थायें हैं।

वास्तविक चित्र

श्री माननीय गृहमंत्री जी ने केवल १९५०-५२ की ही संख्या से संसद् को अवगत् कराया है, परन्तु वास्तविक स्थिति इससे कहीं अधिक भयंकर है। इस का अनुमान निम्न आंकड़ो से लगाया जा सकता है :—

अगस्त सन् १९४७ ई० तक पहिले ५५ वर्षों में बिहार में ५४ विदेशी पादरी थे। इनमें १६ अमेरिकन थे। सन् १९४७ ई० के पश्चात् के पांच वर्षों में यह संख्या २१३ होगई; जिनमें से १३६ अमेरिकन थे। सन् १९४२ ई० से लेकर सन् १९४७ ई० तक समस्त देश में २०७१ विदेशी पादरी होगये। इनमें प्रोटेस्टैंट १४५१ और कैथोलिक ६२० थे। अगले ५ वर्षोंमें प्रोटैस्टैंट पादरियोंकी संख्या २८१४ होगई और कैथोलिकों की संख्या १८६८ होगई। इस प्रकार पादरियों की कुल संख्या ४६८२ होगई।

यह संख्या भी केवल सन् १९५२ ई० तक की है। पिछले दो वर्षों में यह संख्या कितनी बढ़ गई है यह अभी अज्ञात है। इसके अतिरिक्त इस संख्या में उन हजारों वैतनिक भारतीय पादरियों की संख्या सम्मिलित नहीं है जो कि जयचन्द बनकर हमारे लिये इन पादरियों से भी अधिक घातक सिद्ध हो रहे हैं।

पादरियों के अतिरिक्त इनके स्कूलों, कालेजों, अस्पतालों, अनाथालयों, होटलों, क्लबों, कार्यालयों तथा अन्य संस्थाओं में काम कर रहे ईसाई प्रचारकों की संख्या का अनुमान लगाते ही रोंगटे खड़े

होजाते हैं। इन ईसाई प्रचारकों का सही चित्र मस्तिष्क में लाने के निमित्त मैं पाठकों से अनुरोध करता हूँ कि सन् १९२२-२४ ई० के दिये आंकड़ों के आधार पर वे इनकी वर्तमान् स्थिति का अनुमान लगायें।

इन विदेशी एवं भारतीय पादरियोंके अतिरिक्त यहां हजारोंकी संख्या में वेतन-भोगी ईसाई प्रचारक तथा महिलायें भी कार्य कर रही हैं, जो कि एडवांस गार्ड (अग्रिम दस्ता) का कार्य करते हैं; और इन विदेशी पादरियों को, यहां की जनता, वातावरण तथा अन्य गुप्त भेदों से परिचित कराते हैं। ये लोग ईसामसीह के स्थान पर इन सफेद चमड़ी वाले पादरियों की बुद्धिमत्ता, दयालुता, सेवा तथा चमत्कारों की प्रशंसा करते फिरा करते हैं। जिस प्रकार जंगली हाथियों को पालतू हाथी दिखला कर ही फंसाया तथा दास बनाया जाता है, ठीक उसी प्रकार पैसों के दास इन चापलूसों द्वारा इनके ही भाइयों को धर्म भ्रष्ट कराया जाता है।

पादरियों के शिक्षण केन्द्र

भारत के भिन्न २ भागों की भिन्न-भिन्न जातियों में कार्य करने के लिये पादरियों को यहां के भूगोल, परिस्थिति, भाषा, रीति रिवाज, अन्ध विश्वास वेश—भूषादि से पूर्णतः परिचित कराने के निमित्त अमेरिका, यूरुप, इंगलैण्ड तथा भारत में बड़े बड़े शिक्षण केन्द्र हैं। यहां से शिक्षण प्राप्त कर ये मिशनरी लोग अपने क्षेत्र में जाते तो वहां के निवासियों के साथ इस प्रकार घुल-मिल जाते हैं कि जैसे बीसियों वर्षों से वे वहां रह रहे हों। अपने क्षेत्र के आदिवासियों के सम्बन्ध में जितना उन्हें पहिले से ही परिचय होता है उतना वहां के पड़ौसी भारतीय लोगों को भी नहीं होता। उस क्षेत्र की जन-संख्या, वहां की सड़कें, वहां के प्रमुख नगर तथा प्रमुख जातियों के सहीमानचित्र उनकी जेबों में अपने धर्म ग्रन्थों की भांति रक्खे रहते हैं।

होजाते हैं। इन ईसाई प्रचारकों का सही चित्र मस्तिष्क में लाने के निमित्त मैं पाठकों से अनुरोध करता हूँ कि सन् १६२२-२४ ई० के दिये आंकड़ों के आधार पर वे इनकी वर्तमान् स्थिति का अनुमान लगायें।

इन विदेशी एवं भारतीय पादरियोंके अतिरिक्त यहां हजारोंकी संख्या में वेतन-भोगी ईसाई प्रचारक तथा महिलायें भी कार्य कर रही हैं, जो कि एडवांस गार्ड (अग्रिम दस्ता) का कार्य करते हैं; और इन विदेशी पादरियों को, यहां की जनता, वातावरण तथा अन्य गुप्त भेदों से परिचित कराते हैं। ये लोग ईसामसीह के स्थान पर इन सफेद चमड़ी वाले पादरियों की बुद्धिमत्ता, दयालुता, सेवा तथा चमत्कारों की प्रशंसा करते फिरा करते हैं। जिस प्रकार जंगली हाथियों को पालतू हाथी दिखला कर ही फंसाया तथा दास बनाया जाता है, ठीक उसी प्रकार पैसों के दास इन चापलूसों द्वारा इनके ही भाइयों को धर्म भ्रष्ट कराया जाता है।

पादरियों के शिक्षण केन्द्र

भारत के भिन्न २ भागों की भिन्न-भिन्न जातियों में कार्य करने के लिये पादरियों को यहां के भूगोल, परिस्थिति, भाषा, रीति रिवाज, अन्ध विश्वास वेश—भूषादि से पूर्णतः परिचित कराने के निमित्त अमेरिका, यूरुप, इंगलैण्ड तथा भारत में बड़े बड़े शिक्षण केन्द्र हैं। यहां से शिक्षण प्राप्त कर ये मिशनरी लोग अपने क्षेत्र में जाते ही वहां के निवासियों के साथ इस प्रकार घुल-मिल जाते हैं कि जैसे बीसियों वर्षों से वे वहां रह रहे हों। अपने क्षेत्र के आदिवासियों के सम्बन्ध में जितना उन्हें पहिले से ही परिचय होता है उतना वहां के पड़ौसी भारतीय लोगों को भी नहीं होता। उस क्षेत्र की जनसंख्या, वहां की सड़कें, वहां के प्रमुख नगर तथा प्रमुख जातियों के सहीमानचित्र उनकी जेबों में अपने धर्म ग्रन्थों की भांति रक्खे रहते हैं।

स्त्रियों को विशेष महत्व दिया जाता है

प्रचार-कार्य को अत्यधिक आकर्षक बनाने के निमित्त प्रचारकों की सेना में अधिक से अधिक संख्या में सुन्दर तथा नवयुवती महिलाओं का अधिक सहारा लिया जाता है। नगर के मनचले नवयुवकों तथा व्यक्तियों को आकर्षित करने के लिये प्रत्येक रविवार को इन सुन्दरियों द्वारा नगर की प्रमुख सड़कों पर परेड करायी जाती है अर्थात वहां से उन्हें गिरजाघर लेजाया जाता है। परिणाम स्वरूप अनेकों नवयुवक इनके सहारे चर्चों में मनोरंजनार्थ चले जाते हैं; जहां उन्हें फंसाने के निमित्त पादरी लोग पहिले से ही जाल बिछाये बैठे रहते हैं। इस प्रकार बहुत से नवयुवक प्रत्येक सप्ताह इनके चंगुल में फंस जाते हैं।

भारत का अमेरिकेनाइजेशन

इस विशाल ईसाई सेना के अतिरिक्त यहां अमेरिका ने एक ऐसा विचित्र नया ढंग इस देश की नौका को डुबोने का निकाला है कि जिसके अनुसार यहां की सरकार स्वयं अपने हाथोंसे उस नौका के तले में सूराख कर रही है। गत विश्वयुद्ध में अमेरिका ने भारत को अड्डा बना, यहां अतुल मात्रा में युद्ध सामग्री एकत्रित की थी; और युद्ध की समाप्ति पर उसने इसमें से बची असंख्य वस्तुओं को यहां की सरकार को ही नीलाम के रूप में दे दिया था; और इससे उनका मूल्य डालर में नहीं अपितु यहां की करैंसी में ही लिया था। इस प्रकार प्राप्त अरबों रुपयों को अमेरिका ने यहां अपने सांस्कृतिक प्रचार के निमित्त जमा कर दिया है। इस रुपये से यहां United State's Educational Foundation in India नामक संस्था की स्थापना कर अमरीकी प्रोफेसरों तथा विद्वानों द्वारा शिविर लगाये जा रहे हैं, जहां भारत राष्ट्र के निर्माता प्रोफेसर तथा अध्यापक लोग जाकर शिक्षा प्राप्त करते हैं। इन शिविरों

में पश्चिमी भोगवादी संस्कृति, वहां की सामाजिक तथा आर्थिक व्यवस्था तथा ईसाई धर्म की अच्छाइयों की छाप इनपर डाली जाती है। तीन मास तक लगने वाले शिविरों के खान-पान, रहन-सहन, बोल-चाल, अभिवादन तथा विचारों को देखकर कोई यह नहीं कह सकता कि यह भारतीय शिविर है अथवा यहां के निवासी भारतीय हैं। केवल लोगों की काली चमड़ी ही एक मात्र भारतीयता का परिचय देती है।

इस प्रकार का एक थ्योलौजिकल (Theological) शिविर अभी जबलपुर में लगाया गया जहां लगभग समस्त प्रांतों के सैंकड़ों प्रोफेसर तथा हैडमास्टर सम्मिलित हुये। शिविर में आर्यसमाज के एक विद्वान् श्री भूदेव जी शास्त्री को भी भाग लेने का अवसर मिला। शिविर से लौटकर उन्होंने जो वहां का नग्न चित्र मेरे सन्मुख रक्खा तो मैं अवाक् रह गया; और मुझे अपनी सरकार तथा यहां के कर्णधारों की बुद्धि पर बड़ी दया आई। श्री शास्त्री जी ने बतलाया कि इन शिविरों में अमेरिकन लोग ऐसा वातावरण उत्पन्न करते हैं कि इन तीन मास के अन्दर २ लगभग सभी लोग अपने आचरण, तथा विचारों में पिछत्तर प्रतिशत ईसाई बन जाते हैं। जब बाड़ ही खेत को खाने लगे तब भला खेत की रक्षा किस प्रकार हो सकती है अर्थात् जब राष्ट्र के निर्माता (अध्यापक) ही इस प्रकार पथ-भ्रष्ट कर दिये जायंगे तब यहां की क्या अवस्था होगी इसका पाठक-गण स्वयं अनुमान लगालें।

बाइबिल का पत्र व्यवहारिक स्कूल

अमरीकी सांस्कृतिक शिविरों के अतिरिक्त यहां एक विचित्र जाल की रचना की गई है जिसके द्वारा शिक्षित वर्ग को फंसाया जाता है—वह है "वाइस आफ प्राफेसी" या "भविष्यवाणी की आवाज" नामक बाइबिल की परिक्षायें, जो कि पत्र-व्यवहार द्वारा दी जाती है। इस का प्रधान केन्द्र पूना में है। परीक्षार्थी को केवल एक कार्ड लिखकर भेजना होता है,

तत्पश्चात् केन्द्र से तुरन्त निःशुल्क बाइबिल का पाठ तथा उस पाठ से सम्बन्धित प्रश्न-पत्र भेज दिया जाता है। दो पर्चे भरकर भेजने पर उसे बाइबिल का विद्यार्थी बना दिया जाता है, और उसका रजिस्ट्रेशन नम्बर भेज दिया जाता है। बाइबिल का स्नातक बनने के लिये इस प्रकार ३२ परीक्षा पत्र भरकर भेजने होते हैं। प्रत्येक परीक्षा का फल अगले पर्चे के साथ आजाता है। छः परीक्षा-पत्र भरकर भेजने पर केंद्र से एक पुस्तक "प्रेम की श्रेष्ठता" (बाइबिल सम्बन्धी) निःशुल्क दी जाती है। इस प्रकार बीच २ में केंद्र द्वारा पुस्तकें दीजाती रहती हैं।

३२ परीक्षायें पास करने के पश्चात् विद्यार्थी को स्नातक बना दिया जाता है और उसे डिग्री प्राप्त करने के निमित्त एक विशेष अवसर पर पूना बुलाया जाता है। पूना तक आने-जाने तथा भोजनादि का व्यय मिशन की ओर से दिया जाता है। पूना में उनकी बड़े २ पादरियों के साथ भेंट कराई जाती है, और उनकी बड़ी आवभगत की जाती है। वहां पादरियों तथा ईसाई नवयुवतियों द्वारा उन्हें ईसाई बनाने के जो षड्यन्त्र रचे जाते हैं वे अवर्णनीय हैं।

परीक्षा देते समय भी पादरी लोग धीरे २ परीक्षार्थी की मनोवस्था का पता उसके द्वारा भेजे जाने वाले उत्तरों से करते रहते हैं। शंका-समाधान कर दे उसके विचारों की भिन्नता को समाप्त कर उसे अपने अनुकूल बनाने की चेष्टा करते हैं। उसके सम्पर्क में आकर उसे अपने घर चाय-पार्टी पर पधारने को आमंत्रित करते हैं। जहां परीक्षार्थी एक बार उनकी मायानगरी में पहुँचा नहीं कि वह फिर मकड़ी के जाल में मक्खी की भांति फंसा नहीं। उनका सभ्यतापूर्ण मीठा व्यवहार तथा महिलाओं में स्वतंत्रता पूर्वक मिश्रण उसे फंसाने के निमित्त यथेष्ट शक्ति रखते हैं।

अन्य प्रलोभन

नवयुवक-नवयुवतियों को अधिक से अधिक संख्या में आकर्षित

करने के निमित्त मिशनरी लोग बड़े ही घृणित उपायों का आश्रय लेते हैं जो निम्न प्रकार हैं :—

(१) परीक्षा पास करने के पश्चात् विद्यार्थी को मिशन कहीं न कहीं अवश्य नौकरी दिला देगा।

(२) बाइबिल का स्नातक बन जाने पर उसका विवाह करा दिया जायगा।

(३) अन्तिम परीक्षा में उत्तीर्ण होजाने पर विद्यार्थी को बम्बई, पूना आदि नगरों की सैर करायी जायगी।

(४) पादरियों का प्रेम-पात्र बनजाने पर उसे विदेश जाने की भी सुविधा दी जा सकती है।

(५) विद्यार्थी को पढ़ाई के लिये छात्रवृत्ति भी दी जा सकती है।

इन प्रलोभनों को पढ़कर पाठकगण स्वयं अनुमान लगाएं कि भारत की गरीबी, अज्ञानता, तथा अन्य कमजोरियों का लाभ किस प्रकार उठाया जा रहा है। इस प्रकार लाखों विद्यार्थी प्रतिवर्ष इन परीक्षाओं के द्वारा ईसाइयत के दल-दल में फंसाये जा रहे हैं, और करोड़ों रुपया प्रतिवर्ष मिशनों द्वारा इन परीक्षाओं पर व्यय किया जा रहा है। कुछ वर्ष पूर्व तक ये परीक्षायें केवल बड़े २ नगरों तक सीमित थी, परन्तु अब इनका विस्तार बड़ी तीव्र गति से गांवों में भी हो रहा है।

परीक्षा-पत्रों में सेवा, प्रेम, अहिंसा; दया आदि सर्वमान्य बातों के अन्दर किस प्रकार ईसाई धर्म का विष विद्यार्थी के मस्तिष्क में डाला जाता है इसके कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं :—

"ईश्वरीय सच्चाई का अन्वेषण"

पहिला पाठ

"........बाइबिल के चालकगण यह विश्वास करते हैं कि जो पवित्र पुस्तक बाइबिल के नाम से अभिहित है उसी में ईश्वरीय शक्ति का प्रमाण है। इनका विश्वास है कि यह सत्य

का सोता है, जो हमें सत्य के परमेश्वर के पास पहुँचायेगा। यदि बाइबिल ईश्वरीय अधिकार की वाणी है तो हमें इसी में ईश्वरीय प्रेरणा मिलने की आशा रखनी चाहिये.......... ।" पत्र में अन्य शीर्षक इस प्रकार हैं—"एक संसार-एक पुस्तक"—"बाइबिल एक विशाल ग्रन्थ"—"बाइबिल के उद्देश्य"—"अन्धकार जगत में प्रकाश"—'बाइबिल अविनाशी है'– संसार की सर्वोत्तम पुस्तक'। इन शीर्षकों के अन्तरगत जो बातें लिखी हैं वे आद्योपान्त भ्रान्ति पूर्ण हैं।

दूसरा पाठ

"ईसाई धर्म ही एक ऐसा धर्म है जिसने यह दावा रखने का साहस किया है कि भविष्यवाणी ईश्वर प्रेरित है। ....यह इतिहास, प्राचीन शिल्प विद्या, विज्ञान तथा सर्व प्रकार की मानवीय विद्याओं को एक प्रकार से चुनौती देता है, और एक भी ऐसा उदाहरण दिखाने के लिये ललकारता है जिससे इसकी भविष्य-वाणी असफल हुई हो। इस अपील में ईश्वरीय निडरता है।"

ये विचार तो प्रारम्भिक पाठों में है। अगले पाठों में जो विष उगला गया है उसे पढ़कर आप भौंचक्के रह जायंगे। सैक्यूलर स्कूलों अथवा लार्ड मैकाले द्वारा स्थापित ईसाई-धर्मप्रचार केन्द्रों में पढ़ने वाले हमारे अबोध बच्चे भला इन बातों की सत्यता को किस प्रकार आंक सकते हैं जब कि धर्म के नाम से उनका मस्तिष्क सर्वथा अनभिज्ञ है। साप्ताहिक सत्संगों, वार्षिक उत्सवों तथा कीर्तनों तक ही जिन्होंने अपने धर्म प्रचार की इतिश्री समझ ली है मैं उन व्यक्तियों, नेताओं तथा संस्थाओं से पूछना चाहता हूं कि वे इस ठोस, मूक तथा प्रलयंकारी आक्रमण से किस प्रकार अपनी जाति अथवा राष्ट्र की रक्षा कर सकेंगे।

मारेल रिआमर्मैंट

नयी बोतल में एक नये लेबिल के साथ ईसाइयत का विष गत् वर्ष (सन् १९५३ ई०) भारत में लाया गया है।

इस नये षडयन्त्र का नाम है मारेल रिआर्मामैंट। कहने को इस संस्था का निर्माण कम्युनिज्म का विरोध करने के मिमित्त किया गया है। परन्तु भारत में इसे अमेरिका केवल ईसाई धर्म के प्रचार की दृष्टिकोण से लाया है और करोड़ों रुपया प्रति वर्ष इसको सहायता-स्वरूप वह दे रहा है। इस संस्था का प्रधान केन्द्र पश्चिमी जर्मनी अथवा राइन नदी की घाटी है।

इस संस्था के प्रचारकों का एक बहुत बड़ा दल गत् वर्ष भारत सरकार का मेहमान बनकर नई देहली आया, और कान्स्टीट्यूशन क्लब तथा रीगल सिनेमा में महीनों अपने नाच-गानों, नाटकों तथा भाषणों का प्रदर्शन करता रहा। उनका एक भी कार्य-क्रम ऐसा नहीं था, कि जिसमें ईसाई धर्म के प्रचार की गन्द न आती हो अर्थात दबे शब्दों में वे यहां ईसाइयत का प्रचार करते रहे। जब इस प्रचारक मण्डल के नेता श्री बूचर साहब से यह पूछा गया कि "भारत तो स्वयं शान्ति प्रिय देश है और सेवा, प्रेम, परोपकार आदि की भावना यहां सर्वत्र ओत-प्रोत है, तो फिर आपने यहां पधारने का क्यों कष्ट किया है"। तो उन्होंने झेंपते हुये यही उत्तर दिया कि इस बात का उत्तर उन्हें आमन्त्रित करने वाले ही दे सकते हैं। जब आमन्त्रित करने वालों का नाम उनसे पूछा गया तो वे मौन धारण कर गये।

इस संस्था की आज भारत में सर्वत्र शाखायें स्थापित करने की चेष्टायें की जा रही हैं। इसके सदस्यों को प्रचारार्थ अथवा भ्रमणार्थ विदेशों में संस्था अपने व्यय पर भेज रही है। भारतीय नवयुवकों के हृदयों में विदेश-यात्रा का ऐसा भूत सवार हुआ है कि किसी भी मूल्य पर वे इस प्रलोभन को त्यागने के लिये तैयार नहीं। अतः इसी उद्देश्य को सन्मुख रख आज नित्य हजारों नवयुवक इस संस्था के कार्यालयों पर मक्खियों की भाँति चक्कर काटते रहते हैं और अनजाने में ईसाई धर्म के जाल में फंसते रहते हैं।

वाई० एम० सी० ए०
Y. M. C. A.

सेवा के आधार पर खड़ी इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था ने भी अब भारत में ईसाई धर्म का प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया है। भाषण, खेल, फिल्म आदि प्रलोभनों के द्वारा यह जनता को अपनी ओर आकर्षित करके उन्हें ईसाइयत की ओर धकेलने की चेष्टा करती है। इसके क्लबों तथा होटलों में ईसाई नवयुवतियां बहुत बड़ी संख्या में अपने धर्म का बड़ी लगन के साथ प्रचार करती हैं। इस प्रकार हजारों नवयुवक प्रति वर्ष ईसाई बन जाते हैं। आज भारत का कोई कोना ऐसा नहीं है कि जहां पर वाई० एम० सी० ए० संस्था किसी न किसी रूप में कार्य न कर रही हो।

काबे में कुफ्र

सूर्य के प्रकाश की भांति यह बात सर्वविदित है कि इस्लाम तथा ईसाई मत मूर्ति-पूजा के सिद्धान्तः घोर विरोधी हैं, और इनके अनुयायियों ने असंख्य मूर्ति-पूजकों का बड़ी ही निर्दयता से वध किया है, और उनकी मूर्तियों को तोड़ने में ये बड़ा भारी गर्व अनुभव करते रहे हैं। परन्तु घोर आश्चर्य की बात है कि दोनों ही मतानुयायी अब भारत में बड़े कट्टर मूर्ति पूजक बन रहे हैं।

जो मुसलमान एक दिन हिन्दुओं की छोटी २ सुन्दर मूर्तियों को देख कर आग-बबूला हो जाता था वह आज बिना सिर पैर के मिट्टी के ढेरों, कब्रों, मज़ारों, पीरों तथा विशाल मकबरों पर फूल चढ़ाता है और उन पर माथा रगड़ता फिरता है। हिन्दुओं के तीर्थ-स्थानों की भांति आज उनके भी अजमेर शरीफ, प्रानकिलियर आदि तीर्थ-स्थान बन गये हैं जहां प्रति वर्ष मेले लगते हैं।

इसी प्रकार अब ईसाई पादरियों ने जंगल के अपढ़ तथा निर्धन लोगों में बड़े २ मन्दिर बनवाने प्रारम्भ किये हैं। इनमें मरियम माता

में ईसामसीह की मूर्तियां स्थापित की जाती हैं, जिनके सन्मुख चौबीसों सदैव दीपक जलता रहता है, और ईसाई लोग इन पर फूल पैसे चढ़ाते हैं। मुख्यतः मरियम की मूर्ति को प्रधानता दी जाती है, क्योंकि उसके एक में दोनों का पूजन हो जाता है, अर्थात् मरियम की गोद में ईसा को बच्चे के रूप में रक्खा जाता है। मरियम के बारे में ईसाई लोगों ने यह भ्रान्ति फैला दी है कि इसके पूजन से बांझ स्त्रियों तक के बच्चे होने लगते हैं। हमें तो डर है कि कहीं मरियम की भांति क्वारी कन्याओं के बच्चा पैदा न होने लगे, क्योंकि जिसकी पूजा की जाती है उसके कुछ गुण भक्तों में आ जाना स्वाभाविक ही हैं। शोक कि इस आकर्षण से स्त्रियां बड़ी संख्या में इसका पूजन करने आती हैं। स्थिति ऐसी भयानक बन गई है कि ईसाइयों के अतिरिक्त हजारों हिन्दू नर-नारी नित्य इन मूर्तियों के पूजनार्थ आते हैं। इन मन्दिरों में ठीक पण्डे-पुजारियों की भांति ईसाई पादरी चरणामृत के रूप में पानी देते हैं, जादू टौने करते हैं तथा इसी प्रकार के अनेकों पाखण्ड रचते हैं।

अब यहां यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि मूर्ति-पूजा के कट्टर विरोधी भारत में मूर्ति-पूजक कैसे बन गये? क्या इस्लाम तथा ईसाई मत दोनों के दोनों भारत में उन्हीं के अनुयायियों द्वारा दफ़ना दिये गये? क्या हिन्दू धर्म का अजगर इनको भी निगल गया? परन्तु बात इसके सर्वथा विपरीत है। यह उसी प्रकार से है जैसे कि कोई बिल्ली भगत बनने का ढोंग कर हाथ में माला लेकर चूहों के सन्मुख उपस्थित हो। ठीक उसी प्रकार यह मूर्ति-पूजा नहीं, अपितु हिन्दुओंको फंसाने के लिये भयंकर जाल है। हां यह हो सकता है कि ढोंग करते-करते ये स्वयं ही कहीं इस जाल में न फंस जायं न और तेली के बैल की भांति फिर चक्कर काट कर अपनी पूर्वावस्था, को ही पहुँच जायं। परन्तु हमारी यह कल्पना भविष्य के गर्भ में छिपी है और जो हमारे सन्मुख प्रत्यक्ष रूप में हो रहा है उसी को हमें सत्य मान कर चलना चाहिये।

प्रत्यक्ष सत्य तो यह है कि इन जालों के आधार पर मुसलमानों ने हमारे करोड़ों हिन्दुओं को मुसलमान बनाया, लाखों हमारी बहिनों को भगाया तथा अनेकों बच्चों को माताओं की गोद से सदैव के लिये अलग कर दिया। ठीक उसी प्रकार आज ईसाई लोग जंगली लोगों में यह लूट-कार्य कर रहे हैं। जब तक हिन्दू लोग इनके मन्दिरों का सामूहिक रूप से बहिष्कार नहीं करेंगे तब तक इस खतरे से बचना सरल नहीं है। शोक कि आज विज्ञान के इस युग में भी अधिकांश हिन्दु जनता न जाने क्यों ढोंग तथा अन्ध विश्वास की ओर आंख मींच कर भागती है और अपने भले-बुरे का भी ध्यान नहीं करती।

प्रचार में अतुल धन व्यय हो रहा है

डिस्पोजल के फौजी सामान द्वारा प्राप्त अरबों रुपये के अतिरिक्त अमेरिका तथा उसके अन्य साथी राष्ट्र यहां करोड़ों रुपया प्रति वर्ष अपने २ मिशनों पर व्यय कर रहे हैं। इस धन के बल पर यहां पादरी लोग आज भारत के प्रत्येक कोने में मिशन की स्थापनार्थ भूमि खरीद रहे हैं। विद्यार्थियों को छात्र-वृत्तियां दे रहे हैं तथा गरीबों को ऋण दे रहे हैं। मिशन के प्रत्येक केन्द्र पर कई २ जीप गाड़ियां, मोटरें, मोटर साइकिलें यथेष्ठ मात्रा में उपस्थित रहती हैं ताकि उनके द्वारा ये देश के दूरस्थ स्थानों तक प्रचारार्थ जा सकें और साथ ही यहां की निर्धन जनता पर अपना प्रभाव जमा सकें। परिणाम स्वरूप भारत की निर्धन तथा अपढ़ जनता मुख्यतः हरिजन तथा आदिवासी ग़रीबी के दबाव में परवस इनके चंगुल में फंसती चली जा रही है। उदाहरणार्थ अकेले मथुरा जिले में जो कि भौगोलिक तथा धार्मिक दोनों ही दृष्टि से प्रधानता रखता है और सीधा भारत की राजधानी तथा आर्यसमाज के प्रधान गढ़ देहली की नाक के नीचे है, पादरियों ने केवल एक मास के अन्दर ६०० व्यक्तियों को ईसाई बनाया जिसका विवरण ता० ७-१-५४

के नव भारत टाइम्स में इस प्रकार छपा .... कि नौकरी और पैसे का प्रलोभन देकर अब तक ६०० हिन्दुओं को ईसाई बनाया जा चुका है और देहातों में तीन पक्के गिरजे भी बनवा दिये गये हैं। यह सारा धन अमरीका मिशन के पादरी खर्च कर रहे हैं। इतना ही नहीं, जब वहां की जनता तथा आर्यसमाज ने इनका विरोध किया तो अपने षडयन्त्र को विफल होते देख इन्होंने वहां के बाईस व्यक्तियों पर झूठा केस लगा उन्हें अपने धन के बल पर उन्हें हवालात में बन्द करा दिया, जिन्हें जमानत पर ता० ६-२-५४ को मथुरा की जेल से छुड़ाया गया है।

साक्षी

साक्षी स्वरूप एक छोटी सी झलक 'नेशनल क्रिश्चियन रिव्यू' नामक पत्र में प्रकाशित हुई है जिसमें स्वयं एक अमेरिकन पादरी ने इस तथ्य को स्वीकार किया है। उसका कहना है कि अकेली 'ओ' जाति के प्रचार, शिक्षा और साहित्य-निर्माण का वार्षिक बजट ३० हजार रुपये रहता है। आसाम के इस भाग में 'अमेरिकन बैपटिस्ट फारेन मिशन' के ६ केन्द्र हैं। प्रत्येक केन्द्र पर मिशनरियों के वेतन के अतिरिक्त चालीस हजार रुपया वार्षिक व्यय होता है। प्रचार और शिक्षा के अतिरिक्त मिशन की ओर से एक अस्पताल और एक कृषि उप निवेश की भी व्यवस्था है।

धर्म परिवर्तन के लिए २० लाख डालर

पता लगा है कि रायगढ़ जिले के जशपुर क्षेत्र में आदि वासियों को ईसाई बनाने के लिये ईसाई मिशनरियों को बीस लाख डालर की सहायता पहुंची है। जशपुर की जन संख्या २ लाख ६६ हजार की है जिसमें एक लाख पचास हजार लोगों का धर्म परिवर्तन हो गया है। संत तुकडोजी महाराज का कहना है कि ईसाई

मिशनरी आदिवासियों को ऋण देकर सामूहिक धर्म परिवर्तन करा रहे है।

पुस्तक विस्तार के भय से यहां मैं भारत के प्रत्येक प्रान्त से, आर्य समाज की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में प्राप्त उन अनेक समाचारों को देना उचित नहीं समझता जिनमें इन भिन्न २ मिशनों द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् बनाये गए बहुत से गिरजाघरों, स्कूलों, अस्पतालों तथा धर्म परिवर्तनों का वर्णन है। यहां मैं इतना ही कह देना यथेष्ट समझता हूँ कि आसाम की केवल एक 'ओ' जाति पर अमेरिका द्वारा व्यय किए जा रहे धन से ही आप अनुमान लगा लें कि भारत में अकेला अमेरिका किस प्रकार अपने धन को पानी की भांति बहा रहा है : इसी प्रकार १२ राष्ट्रों की अतुल धन-राशि यहां हमें विषपान कराने में प्रयुक्त की जा रही है।

क्षेत्र-विस्तार

जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं कि प्रारम्भ में ईसाई मिशनरियों ने भारत के सवर्ण कहे जाने वाले व्यक्तियों को ही ईसामसीह की शरण में लाना चाहा। परन्तु कुछ मुट्ठी भर उन ब्राह्मणों को छोड़ जो कि राजा जमोरिन की सभा के सदस्य थे और वास्कोडिगामा द्वारा बात-चीत करने के लिए जहाज पर आमन्त्रित किए गए थे, जहां से बलात् उन्हें पुर्तगाल ले जाकर छल-कपट से ईसाई बना दिया था और बाद को उन्हें यहां लाकर उनके परिवार को भी ईसाई बना दिया गया था, बाकी यहां के मिशनरी अपने उद्देश्य में बुरी तरह असफल रहे। विवश होकर इन्होंने हरिजनों को ही अपना लक्ष्य बनाया। परन्तु महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज ने उन्हें इस लक्ष्य पर भी न पहुंचने दिया। अन्त में इन्होंने अंग्रेज सरकार की सहायता से पर्वतीय निवासियों को अपना शिकार बनाया और अंग्रेजों

के यहां से चले जाने तक इन्होंने अपने को बहुत कुछ वहीं तक सीमित रक्खा ।

परन्तु स्वतन्त्रता की प्राप्ति के पश्चात् हमारी उदारनीति तथा अमेरिकन षड्यन्त्र एवं सहयोग के परिणाम स्वरूप ईसाइयों का क्षेत्र इतना विशाल हो गया है कि आज भारत का कोई भाग, नगर तथा गांव ऐसा नहीं रह गया है जहां ईसाई मिशनरियों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपना आक्रमण न कर दिया हो । इसके अतिरिक्त इन्होंने भारत के सभी निवासियों को किसी न किसी प्रकार अपने चंगुल में फंसाने का निश्चय कर लिया है । वर्तमान समय देश में मिनिस्टरों के पश्चात् मिशनरी लोगों की ही जीपों, कारों, मोटरों, मोटर साइकिलों, घोड़ों की गड्डियों तथा शाही ठाट-बाट से जनता चकाचौंध हो रही है। कभी २ वह इनकी गर्वोक्तियों को सुन कर यहां तक भ्रम में पड़ जाती है कि कहीं पुनः गोरी चमड़ी वालों का यहां आधिपत्य तो नहीं हो गया है या होने वाला है।

सारांश में आज भारत के प्रत्येक भाग को ईसाई बनानेकी योजना बनाली गई है और आबादी की दृष्टि से भिन्न २ मिशनों को क्षेत्र, धन तथा पादरियों की संख्या भी निश्चित कर दी गई है। भारत का कोई भाग ऐसा नहीं है जो कि किसी मिशन के अन्तर्गत न आ गया हो। जहां अंग्रेजी काल में ईसाइयों का नाम तक नहीं था, वहां अब ईसाई हजारों बीघा जमीन खरीद कर नए गिरजाघर, मिशन, स्कूल आदि बना रहे हैं। भारत के प्रत्येक नगर तथा कस्बों में अड्डे बनाकर गांवों में प्रवेश करने की इनकी योजना है।

अत्याचारों का पुनः बोलबाला

इनका यहां तक साहस बढ़ता जा रहा है कि ये गांवों में जाकर वहां की अपढ़, भोली-भाली तथा गरीब जनता पर शासकों की भांति रौब जमाने की चेष्टा करते हैं; और कहीं कहीं तो अत्याचार करने पर भी उतारू हो जाते

हैं। इनकी मनोवृत्ति ठीक इन पठानों की भांति बनती जा रही है जो कि गरीब लोगों में कुछ रुपया ऋण स्वरूप देकर फिर उसकी वसूली में उनका पग-पग पर अपमान करते हैं। भारत ने अमेरिका से करोड़ों रुपयों का ऋण लिया है; अतः अपने को ऋणदाता समझ उसके मस्तिष्क में यह भ्रान्ति उत्पन्न हो गई है कि उनके अन्याय-अत्याचार को रोकने की जब भारत सरकार में ही शक्ति नहीं, तो बेचारी जनता भला उनका क्या बिगाड़ सकती है। समाचार पत्रों तथा संसद भवनों में की गई घोषणाओं को छोड़ कर इन विदेशी मिशनरियों की राष्ट्र-घातक गतिविधियों के विरुद्ध सरकार जब कोई प्रतिबन्ध अथवा कार्यवाही नहीं करती है तो मिशनरियों की बात तो दूर रही, जनता तक के मस्तिष्क में यही भ्रान्ति उत्पन्न होनी प्रारम्भ हो जाती है कि सरकार ऐसा करते हुए अमेरिका से डरती है, अन्यथा सरकार इस प्रकार की राष्ट्र-विरोधी प्रवृत्तियों को किस प्रकार सहन कर रही है। प्रमाण स्वरूप इनकी काली करतूतों के कुछ उदाहरण देखिए—

(१) पूर्णियाँ (बिहार) जिले के किशनगंज का १६ नवम्बर सन् ५४ ई० का समाचार है कि वहां के मजिस्ट्रेट की अदालत में दो ईसाई मिशनरियों के विरुद्ध दफा २९५ और ४२६ के आधीन अभियोग प्रारम्भ हुआ है। उन पर धार्मिक भावनाओं को भड़काने तथा उपद्रव करने के आरोप लगाए गए हैं।

(२) इस्लामपुर (बिहार) के रोमन कैथोलिक मिशन के अध्यक्ष रि० लाफरला और उनके शिष्य भारतीय ईसाई पैक्र के विरुद्ध अभियोग यह है कि इन दोनों ने शंकर महादेव और महात्मा गांधी के चित्रों को जलाया और किशनगंज तहसील के श्यामगढ़ी ग्राम के ६ हरिजन बच्चों की चोटियां काटीं।

(३) हैदराबाद स्टेट के वारंगल आदि जिलों से यह समाचार आ रहे हैं कि वहां पादरियों ने बड़ा आतंक मचा रक्खा है। यह भी ज्ञात

हुआ है कि वारंगल जिला तालुका मधिरा के ग्राम 'वनिगराडला पाडु' आदि गांवों में ईसाई वहाँ की अशिक्षित ग्रामीण हरिजन जनता पर खुले आम अत्याचार कर रहे हैं। स्थानीय ईसाई अधिकारी एडीशनल कलक्टर मि० वट तथा डिप्टी कलक्टर मि० खान जेकर जान्सन तथा डी० वाई० एस० पी० आदि से उन्हें सहयोग प्राप्त हो रहा है। इन्हीं डी० वाई० एस० पी० के एक भाई जो कि पादरी हैं लोगों को भय दिखला कर ईसाई बनाते हैं।

(४) हैदराबाद के नलगुण्डा, आदिलाबाद, करीमनगर, मेदक, सिकन्दराबाद, बुलारम आदि स्थानों पर भी इसी प्रकार के अत्याचारों का सहारा लेकर मिशनरी लोग वहां के निवासियों का धर्म-परिवर्तन कर रहे हैं और वहां के ईसाई अधिकारियों से उन्हें सहयोग प्राप्त हो रहा है। बीदर जिला में तो यहां तक समाचार मिला है कि वहां के कलक्टर महोदय स्वयं ईसाई मत का प्रचार करते हैं और अपने अधीनस्थ अधिकारियों को भी ऐसा करने को कहते हैं।

(ईसाइयों का प्रचार—ले० श्री पं० नरेन्द्र जी एम० एल० ए०)

(५) ट्रावनकोर-कोचीन में ईसाइयों ने हिन्दुओं के लगभग ४० मन्दिरों को तोड़ दिया। जब वहां की आर्य जनता ने विरोध प्रकट किया और भारत के समाचार पत्रों में इसकी सूचना प्रकाशित हुई तो मिशनरियों ने मन्दिरों को तोड़ने वाले ईसाइयों को कम्युनिस्ट बताया। परन्तु कितना सफेद झूंठ था उनका यह; क्योंकि यह बात सर्व विदित है कि वहां कम्युनिष्ट, ईसाइयों के विरुद्ध आर्य जनता का पक्ष ले रहे हैं। ऐसी स्थिति में वे भला उनके मन्दिरों को तोड़ने की मूर्खता कैसे कर सकते हैं? यदि मन्दिर तोड़ना कम्युनिष्टों के पुरोगम का अंग होता तो वे ऐसा अन्य प्रान्तों में भी करते। परन्तु सत्य बात यह है कि यह ईसाइयों के उसी पुरोगम का एक अङ्ग है जो कि उनके पूर्वजों ने रोम के आदेश पर अन्य देशों में किया है।

(१) गत उपचुनावों में ट्रावनकोर-कोचीन के दौरे पर जब प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के नेता श्री आचार्य कृपलानी जी गये तो वहां के ईसाइयों ने इनकी कार पर पत्थर मारे। उस समय आचार्य जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि वह इस बात से भली भांति परिचित हैं कि कांग्रेस की आड़ में ईसाई लोग ही यह गुण्डागर्दी कर रहे हैं। जब श्री कृपलानी जैसे प्रतिष्ठित एवं त्यागी नेता की ये पगड़ी उछाल सकते हैं तो भला वहां की निर्धन आर्य जनता की इनके द्वारा क्या गति बन रही होगी, वह सचमुच विचारणीय बात है।

गो मांस भक्षण प्रचार

भारत में मुसलमानों की सफलता में गो-मांस भक्षण का चमत्कार देखते हुये अब पादरी लोगों ने भी इसके प्रचार को प्रधानता देना प्रारम्भ करदिया है। ऐसा कर वे एक तीरसे कई शिकार खेलना चाहते हैं—प्रथम यह कि गो-मांस भक्षण करते ही एक व्यक्ति हिन्दुओं से स्वतः प्रथक हो जायगा या उनके द्वारा बहिष्कृत कर दिया जायगा। इसके अतिरिक्त एक हिन्दु जब गुप्त रूप से भी गो-मांस खा लेता है तो उसकी समस्त धार्मिक भावनायें लड़खड़ाकर चूर २ हो जाती हैं और वह बिना पतवार की नौका के समान बन जाता है, जिसे फिर ईसाई बनाना बड़ा सरल [illegible] जाता है। दूसरे इसके भक्षण करने से ईसाई तथा हिन्दुओं के बीच एक ऐसी गहरी खाई खुद जायगी कि वह फिर ईसाइयों को आर्यों के समीप नहीं आने देगी। तीसरे इससे गो-वंश का ह्रास हो यहां की खाद्य-स्थिति बिगड़ जायगी, जिसके परिणाम स्वरूप भारत को अमेरिका का मुंह ताकना ही पड़ेगा।

गो मांस-भक्षण को प्रोत्साहन

इस नीच मनोवृति को लक्ष्य बना कर ही आज मिशनरी लोग आसाम, उड़ीसा, मनीपुर, त्रिपुरा, छोटानागपुर आदि स्थानों के जंगली लोगों में गो-मांस भक्षण का प्रचार कर रहे हैं।

तथा वर्तमान् समय में पादरी लोग अपने धन से उन्हें गो मांस भक्षण करा रहे हैं और साथ ही प्रचार कर रहे हैं कि हिन्दु लोग आप लोगों को नीच समझते हैं और कानूनन गोवध बन्द कराना चाहते हैं।

इस प्रचार का परिणाम यह हुआ है कि इन भागों में आज बहुत बड़ी संख्या में गो बध हो रहा है और जंगली लोग अनुभव करने लगे हैं कि हिन्दु लोग उनके शत्रु हैं और गोमांस भक्षी होने के कारण वे हिन्दुओं से सर्वथा अलग हैं। उनके इन विचारों की पुष्टि उन मूर्ख हिन्दुओं द्वारा हो रही है जो कि इनको पतित समझ इनके हाथ का पानी तक पीना पाप समझते हैं।

इस प्रकार पादरियों ने कई जंगली जातियों को ऐसी स्थिति में खड़ा कर देने का षडयन्त्र रचा है कि उनके सामने ईसाई या मुसलमान बनने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग नहीं रह जायगा।

जंगली जातियों के अतिरिक्त ईसाइयों ने अपने द्वारा चालित स्कूल तथा कालेजों में भी आर्य बच्चों को गो-मांस खिलाना प्रारम्भ कर दिया है। देहरादून के एक प्रसिद्ध ईसाई कालेज में जहां सैकड़ों आर्य बच्चे पढ़ते हैं गो-मांस खिलाये जाने का समाचार पाकर जब उनसे पूछा गया, तो उत्तर मिला कि गो-मांस नहीं भैंस तथा भैंसे का मांस खिलाया जाता है। हमें विशेष सूत्र द्वारा यहां तक समाचार प्राप्त हुये हैं कि पादरी लोग आर्य बच्चों को गो मांस खिलाने के निमित्त बड़े षडयन्त्र रचते हैं और प्रलोभन देते हैं।

परन्तु खेद के साथ कहना पड़ता है कि हमारे धनी-मानी तथा प्रतिष्ठित परिवारों के बच्चे ही इन स्कूल-कालेजों में पढ़ने जाते हैं। अज्ञानी वे माता पिता ही जो पश्चिमी सभ्यता के पुजारी हैं और जिनकी दृष्टि में अंग्रेजी ही सभ्य लोगों की भाषा है, इन बूचड़ खानों में अपने बच्चों को भेजते हैं और उन्हें ईसाई अथवा ईसाई मनोवृत्ति का बनने को विवश करते हैं।

भारत विरोधी प्रचार

मिशनरियों की आन्तरिक मनोवृति क्या है, इसका ठीक २ परिचय इनकी उन बातों से मिलता है जो कि ये भारत की अपढ़ तथा भोली-भाली जनता के बीच जाकर करते हैं। इनकी बातों का सार निम्न प्रकार है :—

(१) नेहरू सरकार देश की गरीबी, बेकारी, भुखमरी तथा भ्रष्टाचार को दूर करने में असमर्थ रही है। अमेरीका यदि इसकी सहायता न करता तो देश में तबाही मच जाती।

(२) वर्तमान सरकारी अधिकारियों तथा शासक वर्ग को चरित्रहीन सिद्ध करते हुये ये अंग्रेजी सरकार के गुण-गान करते हैं।

(३) इनका कहना है कि रूस तथा चीन भारत पर आक्रमण करने की योजनायें बना रहे हैं। ऐसी स्थिति में अमरीका भारत की सहायता करने को तैयार है; परन्तु श्री पण्डित जवाहरलाल जी नेहरू इस सहायता को स्वीकार न कर देश को फिर दासता की ओर ले जा रहे हैं।

(४) अंग्रेजों ने नेहरू सरकार को कुछ समय के लिये ही राज्य, परीक्षा स्वरूप दिया है और इनके असफल होजाने पर वह पुनः यहां आजायेंगे।

(५) हरिजनों को वे कहते हैं कि हिन्दु रहते वे कदापि मनुष्यों की कोटि में नहीं पहुँच सकते हैं। ईसाई बनते ही उन्हें यहां की जनता तथा सरकार दोनों ही सम्मान की दृष्टि से देखेंगे।

(६) आदि वासियों को वे अपना स्वतन्त्र राज्य बनाने के लिये प्रोत्साहित करते हैं; और बोलते हैं कि उनकी मांग को भारत सरकार ठुकरा नहीं सकती है। क्योंकि यदि उसने ऐसा करने का साहस किया तो इंग्लैंड तथा अमरीका उसे ऐसा नहीं करने देंगे। और काश्मीर की भांति यू० एन० ओ० में उनका विषय पेश कर दिया जायगा।

प्रबल प्रमाण

(अ) आसाम प्रान्त के मुख्य मंत्री श्री विष्णुराम मेधी ने विधान सभा में १० मार्च सन् १९५४ ई० को, वहां के राज्यपाल के भाषण पर हुई बहस का उत्तर देते हुये, ईसाई मिशनों के षड्यन्त्रों का रहस्योदघाटन किया। श्री मेधी जी ने कहा कि ये ईसाई मिशनरी लोग विदेशी षड्यन्त्र में सहायक होकर नागा पहाड़ी क्षेत्र को भारत से अलग करना चाहते हैं। भारत के स्वतन्त्र होने पर ब्रिटेन के अनुदार दलो तत्वों ने पहाड़ी क्षेत्रों में पैर जमाये रखने का निश्चय किया था। उस क्षेत्र के कुछ अंग्रेज अधिकारी भी उस चक्र में सम्मिलित थे। नागा पहाड़ी क्षेत्र पर बैप्टिस्ट मिशन का पूरा प्रभाव है। बेप्टिस्ट मिशन वाले स्कूलों में भारत विरोधी भावनाओं को उकसाते हैं। यह कहना गलत है कि स्वर्गीय सर अकबर हैदरी ने नागाओं को स्वतन्त्रता देने की बात मानली थी।

नागा नेशनल कौंसिल

श्री मेधी जी ने नागा कौंसिल द्वारा प्रसारित उस विज्ञप्ति की तस्वीर दिखलाई, जो स्कूल के अध्यापकों को भेजी गयी थी। उस विज्ञप्ति में अध्यापकों से स्वतन्त्रता दिवस के समारोहों का वहिष्कार करने को कहा गया था। नागा कौंसिल तो उसी तरह निकृष्ट कार्य कर रही है जैसे अन्य साम्प्रदायिक संस्थायें।

(ब) दूसरे स्पष्ट प्रमाण यह है कि भारत की इच्छा एवं हितों के विरुद्ध अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को दी जा रही सहायता के विरुद्ध जब कि भारत का प्रत्येक बच्चा व संस्था चिन्तित हो अपना विरोध प्रकट कर रही है, तो ये ईसाई मिशन मौन धारण क्यों किये बैठे हैं ? इससे स्पष्ट प्रकट होता है कि ये भारतके घोर शत्रु एवं विदेशोंके एजैन्ट हैं। ऐसे देश-द्रोहियों की उपस्थिति सहन करना किसी भी राष्ट्र तथा सरकार को शोभनीय प्रतीत नहीं होता।

(ख) नैपाल राज्य के प्रधान मन्त्री श्री मातृका प्रसाद जी कोइराला ने इन विदेशी ऐजैन्टों को चेतावनी देते हुये कहा कि नैपाल में वे लोग जो भारत के विरुद्ध प्रचार कर रहे हैं जो किसी भी अवस्था में सहन नहीं किया जायगा।

घृणित गठबन्धन

पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि इन विदेशी तत्वों के साथ उचित कार्य-वाही करने के स्थान पर हमारे कर्णधार स्वार्थवश इनके साथ गठबन्धन करते हैं। अभी ट्रावन-कोर कोचीन में काँग्रेस ने इन मिशनों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चुनाव लड़ा है। चुनाव में मिशनरी लोंगों ने, जो कि अपने को केवल धार्मिक प्रचारक घोषित करते हैं, खुलकर भाग लिया।

प्रमाण स्वरूप ता० २०-२-५४ को हिन्दुस्तान टाइम्स में प्रकाशित समाचारानुसार कम्युनिष्ट पार्टी के प्रधान मंत्री श्री अजयघोष जी ने एक प्रैस कान्फ्रेंस में उस सरक्यूलर की फोटो कापी दिखलाई जो कि वैरापोली के आर्कविषप (प्रधान पादरी) के हस्ताक्षर से ट्रावनकोर कोचीन के समस्त ईसाइयों, पादरियों तथा गिरजाघरों को भेजी गई थी। इस विज्ञप्ति के अनुसार उन्होंने समस्त ईसाइयों पर धार्मिक प्रतिबन्ध लगाया कि वह कांग्रेस को ही वोट दें। उन्होंने यह भी बतलाया कि ट्रावनकोर-कोचीन में कैथोलिक मिशन का ही प्रभाव है; और वह खुलकर चुनाव में भाग ले रहा है।

सम्भवतः संसार के इतिहास की यह प्रथम घटना होगी कि किसी स्वतंत्र कहे जाने वाले देश में विदेशी लोग दिन-दहाड़े उसके विरुद्ध विनाशकारी षड्यन्त्र रचें तथा प्रचार करें और वहां की सरकार केवल दिखावे मात्र को घोषणायें करे और गुप्त द्वार से उनके साथ मित्रता करे। इस आक्षेप का हमारी सरकार एक उत्तर दे सकती है कि मित्रता उसने नहीं कांग्रेस ने की है। परन्तु वर्तमान समयकांग्रेस और सर-

तो केवल देखने मात्र को ही दो हैं अन्यथा उनमें कोई अन्तर नहीं। मैं पूछना चाहता हूँ कि यदि सरकार की ईसाई सम्बन्धी घोषणायें सत्य हैं तो उसने उन मिशनरियों अथवा मिशन को क्या दण्ड दिया है कि जिन्होंने यहां देश-द्रोह की ज्वाला को जन्म देने का पाप किया है।

धर्म प्रचारकों पर प्रतिबन्ध लगाना अनुचित है, यह मैं स्वीकार करता हूँ; परन्तु धर्म प्रचार की आड़ में देश-द्रोह करना कौन से धर्मान्तर्गत आता है? और कौनसा ऐसा कानून है कि जो ऐसे व्यक्तियों को क्षम्य सिद्ध कर सकता है? जहां तक इनके साथ गठबन्धन का प्रश्न है? सो मैं अपने कर्णधारों को भारतीय इतिहास की उस कलंकित घटना की याद दिलाना चाहता हूँ; जब कि इसी प्रकार स्वार्थान्ध जयचन्द ने देश के शत्रु मौहम्मद गौरी के साथ गठजोड़ किया था; और उसका जो परिणाम हुआ था वह भी सर्व विदित है। अतः मुझे तो उसकी पुनरावृत्ति होती दिखलाई दे रही है।

हर्ष की बात है कि हमारे गृहमंत्री माननीय श्री डा० काटजू जी ने अभी १९ मार्च को रायपुर (उ० प्र०) में भाषण देते हुए ईसाई मिशनरियों पर कुछ प्रतिबन्ध लगाया है। इससे प्रतीत होता है कि सम्भवतः सरकार अपनी भूल का सुधार करले। यदि ऐसा हो गया तो इसे मैं देश का परम सौभाग्य ही समझता हूं, परन्तु अब तक का अनुभव तो यही है कि हमारे नेतागण आवेश में आकर कभी २ मंच पर बहुत अच्छी घोषणायें कर जाते हैं; परन्तु जब उनके क्रियात्मक रूप देने का समय आता है तो बहुधा उनके विपरीत ही आचरण होता है।

संसार की आंखों में धूल झोंकते हैं

अपनी दूषित मनोवृत्ति तथा चालों को छिपाने के निमित्त पादरी लोग भारत तथा विदेशों के समाचार पत्रों तथा मासिक-पत्रिकाओं में इन पर्वतीय

जातियों के सम्बन्ध में बड़ी ही मन घड़न्त बातें प्रकाशित करते हैं; और दुनियां के सामने सिद्ध करते हैं कि इन जंगली लोगों के कल्याणार्थ ही वे हजारों मील समुद्र पार कर यहां आये और जंगलों में त्याग-तपस्या का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इनका कहना है कि ये लोग अज्ञानी, अन्ध विश्वासी, शराबी, अफीमची, नर-भक्षी, देवी-देवताओं के उपासक तथा दुराचारी होते हैं और अब उनके प्रचार से धीरे २ उनका जीवन सुधर रहा है। इसी प्रकार भारत के हरिजनों के सम्बन्ध में ये सफेद देवता ऐसा चित्रण उपस्थित करते हैं कि संसार की दृष्टि में भारत शराबियों, दुराचारियों, अत्याचारियों तथा असभ्यों का देश सिद्ध हो जाता है।

अपने को भारत के उद्धारक घोषित करने वालों से मैं एक बात पूछना चाहता हूं कि क्या उन्होंने कभी अपनी आस्तीनों में भी मुंह डाल कर देखा है—अर्थात् क्या उन्होंने कभी अपने देशों की दयनीय अवस्था को भी देखने का कष्ट किया है? यदि वे ऐसा करते तो उन्हें ज्ञात हो जाता कि आज संसार में शराबियों, दुराचारियों, अत्याचारियों, हिंसकों तथा शोषकों के सब से बड़े अड्डे यदि कहीं हैं तो वे अमेरिका तथा यूरुप में हैं। इन्हीं के कारण आज संसार भर की मानव जाति अशांति की भट्टी में जा पड़ी है, जहां नर संहार का ताण्डव नृत्य अपनी चरम सीमा को पार कर गया है। ऐसी अवस्था में अपने घर की गन्ध को साफ किये बिना भारत को सभ्य बनाने की घोषणा करना केवल ढोंग तथा धूर्तता मात्र है।

मैं यह दृढ़ता के साथ कह सकता हूँ कि भारत में विदेशियों के पदार्पण के पश्चात् ही मद्यपान, चोरी, विलासिता, स्वार्थपरता आदि दोषों में अधिक वृद्धि हुई है अन्यथा आज भी उन पर्वतीय स्थानों में, जहां कि मुसलमानों तथा गोरी चमड़ी वालों अथवा इनके शिष्यों के चरण कमल नहीं पड़े हैं, वहां सचाई, निष्कपटता; निःस्वार्थता तथा सदाचार का बोल बाला है। वहां आज भी लोग घरों में ताले नहीं

जातियों के सम्बन्ध में बड़ी ही मन घड़न्त बातें प्रकाशित करते है; और दुनियां के सामने सिद्ध करते हैं कि इन जंगली लोगों के कल्याणार्थ ही वे हजारों मील समुद्र पार कर यहां आये और जंगलों में त्याग-तपस्या का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इनका कहना है कि ये लोग अज्ञानी, अन्ध विश्वासी, शराबी, अफीमची, नर-भक्षी, देवी-देवताओं के उपासक तथा दुराचारी होते हैं और अब उनके प्रचार से धीरे २ उनका जीवन सुधर रहा है। इसी प्रकार भारत के हरिजनों के सम्बन्ध में ये सफेद देवता ऐसा चित्रण उपस्थित करते हैं कि संसार की दृष्टि में भारत शराबियों, दुराचारियों, अत्याचारियों तथा असभ्यों का देश सिद्ध हो जाता है।

अपने को भारत के उद्धारक घोषित करने वालों से मैं एक बात पूछना चाहता हूं कि क्या उन्होंने कभी अपनी आस्तीनों में भी मुंह डाल कर देखा है—अर्थात् क्या उन्होंने कभी अपने देशों की दयनीय अवस्था को भी देखने का कष्ट किया है? यदि वे ऐसा करते तो उन्हें ज्ञात हो जाता कि आज संसार में शराबियों, दुराचारियों, अत्याचारियों, हिंसकों तथा शोषकों के सब से बड़े अड्डे यदि कहीं हैं तो वे अमेरिका तथा यूरुप में हैं। इन्हीं के कारण आज संसार भर की मानव जाति अशांति की भट्टी में जा पड़ी है, जहां नर संहार का ताण्डव नृत्य अपनी चरम सीमा को पार कर गया है। ऐसी अवस्था में अपने घर की गन्ध को साफ किये बिना भारत को सभ्य बनाने की घोषणा करना केवल ढोंग तथा धूर्तता मात्र है।

मैं यह दृढ़ता के साथ कह सकता हूँ कि भारत में विदेशियों के पदार्पण के पश्चात् ही मद्यपान, चोरी, विलासिता, स्वार्थपरता आदि दोषों में अधिक वृद्धि हुई है अन्यथा आज भी उन पर्वतीय स्थानों में, जहां कि मुसलमानों तथा गोरी चमड़ी वालों अथवा इनके शिष्यों के चरण कमल नहीं पड़े हैं, वहां सचाई, निष्कपटता; निःस्वार्थता तथा सदाचार का बोल बाला है। वहां आज भी लोग घरों में ताले नहीं

लगाते, वहां के लोग झूठ बोलना तथा दूसरों को धोखा देना पाप समझते हैं, व्यभिचारी वहां जीवित नहीं रह सकता, वहां की नवयुवतियां निडर होकर जंगलों में घूमती रहती हैं तथा वहां सुख दुःख में एक दूसरे का साथ देने की भावना आज भी उनके हृदयों में निवास करती है। हां इतना अवश्य है कि वहां के निवासियों के पास बड़ी २ कोठियां, सूट, कार, सोफा-सैट आदि नहीं हैं, जो कि इन दस्युओं की दृष्टि में सभ्यता की एक मात्र कसौटी हैं। अतः मेरी इन महापुरुषों से कर जोड़ प्रार्थना है कि वे हमें हमारी अवस्था पर छोड़ अपने घर की उस गन्ध को ही साफ करने की कृपा करें; जो युद्धाग्नि उत्पन्न कर आज संसार के अस्तित्व को ही समाप्त करने का कारण बन रही है, और जिसकी बदबू से आज समस्त संसार नरक समान बन गया है।

ईसाई प्रचार की तीव्रता

मिशनरियों की यह विशाल सेना भारत में क्या २ रंग और कितने समय में खिलायेगी यह तो भविष्य के गर्भ में ही छिपा है; परन्तु बुद्धिमान् लोगों के अनुमान लगाने के निमित्त इनका भूत तथा वर्तमान काल यथेष्ट सहायक बन सकते हैं। परन्तु शोक कि आर्य जाति के मस्तिष्क को व्यक्तिवाद, साधुवाद, मायावाद तथा धर्म निर्पेक्षवाद ने इतना कुण्ठित कर दिया है कि इसकी बुद्धि इस दिशा में कुछ सोचना तक अपना अपमान समझती है। भला जो व्यक्ति इस संसार तथा स्वयं अपने को ही मिथ्या समझता है, जो धर्म की चर्चा मात्र से अपने को अराष्ट्रीय बन जाना मानता है तथा पूंजी ही जिसका एक मात्र धर्म तथा ईश्वर बन गया है, उसे कौन किस प्रकार अपनी तथा अपने राष्ट्र की हत्या करने से रोक सकता है। आत्म-हत्या करने पर उतारू व्यक्ति को आत्म-रक्षा का पाठ कहां तक रुचिकर हो सकता है इसका आप स्वयं अनुमान लगा लें।

यदि आर्य नवयुवकों की यह दयनीय अवस्था न होती तो क्या

उनके देखते २ यहां बाहर से आये मुट्ठी भर मुसलमान नौ करोड़ की संख्या बन यहां पाकिस्तान बना सकते थे ? और क्या यहां विदेशी पादरी निर्भय होकर हमारे घर में आग लगाने का दुस्साहस कर सकते थे ? क्या ईसाई प्रचार की निम्न तीव्रता कोई भी जीवित राष्ट्र सहन कर सकता था ?

(१) नागा प्रदेश—केवल सन् १९५० ई० में ७६,२२२ की संख्या में नागा लोग ईसाई बनाए गये हैं।

(२) हैदराबाद—सन् १९५१ ई० की जनगणनानुसार हिन्दुओं की संख्या सन् १९४१ की अपेक्षा २'८ प्रतिशत घटी और ईसाइयों की संख्या पूर्वापेक्षा ३२ प्रतिशत बढ़ गई है।

(३) ईसाइयों की सन् १९२१ ई० में संख्या ३६ लाख थी जब कि सन् १९५१ ई० में इनकी संख्या एक करोड़ के लगभग होगई है।

(४) मिशनरियों के प्रचार की तीव्र गति का सब से बड़ा प्रमाण यह है कि अब प्रत्येक प्रान्त में ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य भी बहुत बड़ी संख्या में ईसाई बन रहे हैं। आज यह सर्वत्र बात फैल गई है कि ईसाई बन जाने पर खूब आर्थिक सहायता मिलेगी। यहां यह बात स्मरणीय है कि अब तक ईसाई प्रचार की मन्दगति का कारण यह था कि इन्होंने अपने को केवल हरिजनों तक सीमित कर दिया था, और हरिजन उच्चवर्ग के लोगों के भय से ईसाई बनते हुए डरते थे। परन्तु अब जब कि उच्चवर्ग के लोग ही ईसाई बनने लगे तो फिर हरिजनों का तो कहना ही क्या है। अवस्था यहां तक बिगड़ गई है कि बहुत से लोभी तथा अज्ञानी प्रचारक तथा संन्यासी भी गुप्त रूप से मिशनों के साथ सम्पर्क बनाने लगे हैं और अनुशासन तथा चरित्र हीनता सम्बन्धी त्रुटि के लिये जहां किसी व्यक्ति के साथ कड़ाई की कि वह तुरन्त ईसाई बन जाने की धमकी देता है।

ईसा-स्थान के नये नक्शे

स्वतन्त्र नागा राज्य तथा झारखण्ड प्रान्त के निर्माण की बातों को सुनकर आज समस्त भारत चकाचौंध हो गया है; परन्तु जनता इस बात से सर्वथा अनभिज्ञ है कि यह तो बारूद के उस विशाल भण्डार के केवल एक कोने में चिनगारी मात्र लगाने की चेष्टा की गई है, जो कि इन्होंने भारत के भिन्न २ भागों में बिछा दी है या दिन-रात बिछाने में लग रहे हैं। इसका संकेत रेवरेन्ड जोजेफ बाक्स, डायोसिसन सेमिनरी परेल, बम्बई द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित (सम्पादित) पत्रिका "प्रवेश···" में मिलताहै कि जिसमें एक मानचित्र छापा गया है, जिसके अनुसार दक्षिण में मदुरा । से लेकर बड़ौदा राज्य की मही नदी तक ईसा-स्थान बनाने का वर्णन है। इस प्रकार न जाने कहां २ के मानचित्र इन्होंने बना डाले हैं इसे तो भगवान ही जान सकता है।

इसके अतिरिक्त इनके इस नये नक्शे के अनुसार इन्होंने भारत के प्रत्येक प्रान्त में अपना प्रभुत्व जमाने की एक विचित्र चाल चली है। वह यह कि प्रत्येक प्रान्त की जनसंख्या का तिहाई भाग किसी भी प्रकार शीघ्र से शीघ्र ईसाई बना दिया जाय। इसका जो परिणाम हो सकता है वह ट्रावनकोर-कोचीन में स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है कि जहां की ६० लाख जन-संख्या में केवल २० लाख ईसाइयों का सर्वत्र बोल-बाला है; क्योंकि उनके सहयोग के बिना वहां कोई सरकार अधिक दिन नहीं ठहर सकती है। प्रत्येक प्रान्त के हरिजन तथा आदिवासियों के ईसाई बन जाने मात्र से ही उनका यह लक्ष्य पूरा हो जाता है कि जिसके लिये वे सिर तोड़ परिश्रम कर रहे हैं।

इस प्रकार समस्त भारत के राजनैतिक वातावरण पर शीघ्र छा जाने के निमित्त बनाये मानचित्रों को बगल में दबाये मिशनरी लोग आज सर्वत्र घूम रहे हैं और सभी अपने लक्ष्य के प्रति सजग हैं।

सरकार की अदूरदर्शिता

अदूरदर्शिता से हमारी सरकार का कितना घनिष्ट सम्बन्ध है यह तो इस पुस्तक की प्रत्येक पंक्ति संकेत कर रही है; परन्तु इसकी भी एक सीमा होती है। सुना करते थे कि काठ की हांडी एक बार चढ़ती है, परन्तु हमारी अदूरदर्शिता ने इस कहावत को भी असत्य सिद्ध कर दिया है। यहां एक नहीं अनेकों काठ की हांडियां बार २ चढ़ती चली जा रही हैं और कब तक चढ़ती रहेंगी इसे कोई नहीं बतला सकता है। उदाहरणार्थ मुसलमानों ने जिस हांडी को हमारे चूल्हे पर सन् १६२१ ई० में चढ़ाया, वह लगातार आज तक चढ़ती चली जा रही है और उसमें आंच तक नहीं आई। इसी प्रकार विदेशी ईसाई मिशनों ने अंग्रेजी काल में जिस हांडी को चढ़ाया, वह आज तक ज्यों की त्यों सुरक्षित है।

सुरक्षित भी क्यों न रहे, क्योंकि जब कभी इसमें आग लगने का अवसर आता है तो हमारी अदूरदर्शिता इसे साफ बचा ले जाती है। उदाहरणार्थ जब ट्रावनकोर-कोचीन से ईसाइयों के अत्याचारों तथा अन्यायों के विरुद्ध आर्य जनता ने आवाज उठाई तो हमारी सरकार ने इसकी जांच के निमित्त एक ईसाई उच्च पदाधिकारी को ही वहां भेजा। दूध की रखवाली पर बिल्ली को छोड़ने का जो परिणाम होता है वही इस जांच का हुआ। इसी प्रकार भारत के अन्य भागों से आई ईसाई सम्बन्धी चेतावनियों को या तो हमारी सरकार ने ठुकरा दिया, या मौन धारण कर लिया या इसी प्रकार की जांच का ढोंग करके अपने आपको तथा जनता को धोखा दे दिया। भला उस मरीज का कौन इलाज कर सकता है जो कि दवा की शीशीको ही तोड़ कर फैंकदेता है।

घर का भेदी लंका ढावे

विदेशी मिशनरियों के षडयन्त्र द्वारा लगाई जा रही देश में आग को हम किस प्रकार बुझा सकेंगे, जब कि

अपने ही व्यक्ति गुप्त रूप से उसे हवा दे रहे हैं या उस पर घी डालने की चेष्टा कर रहे हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण निम्न है:—

ता० १६-२-५४ को आसाम प्रान्त का दौरा करते हुए राष्ट्रपति श्रद्धेय श्री डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने वहां के जंगली निवासियों के बीच भाषण देते हुए ईसाई मिशनरियों के लिये कहा कि वे प्रसन्नतापूर्वक भारत में सेवा-कार्य तथा ईसाई धर्म का प्रचार कर सकते हैं, परन्तु यह सब कार्य यहां के लोगों का धर्म परिवर्तन करने की भावना से उत्प्रेरित नहीं होना चाहिये। परन्तु इसके ठीक दूसरे दिन ता० २०-२-५४ को वैलोर हस्पताल के एक सर्जरी वार्ड का उद्घाटन करते हुए भारत की स्वास्थ्य मन्त्राणी श्रीमती राजकुमारी अमृतकौर ने ईसाई लोगों के बीच एक भाषण दिया, जिसमें उन्हें उनके कार्य के लिये प्रोत्साहन देते हुए कहा कि स्वतन्त्रता के पश्चात् उत्पन्न हुए असहिष्णुता के वातावरण तथा उनके सन्मुख आई कठिनाइयों से वह पूर्णतः परिचित हैं, परन्तु उन्हें धैर्य के साथ इसे सहन करते हुए मनुष्यों के हृदयों में ईसा का सन्देश पहुँचाने की चेष्टा करनी चाहिये। उन्होंने कहा कि भारत में ईसाइयत की वर्तमान समय में परीक्षा हो रही है और किसी प्रकार का भय न करते हुए उन्हें अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिये। आपने अपने भाषण में ईसाइयों के बलात् धर्म-परि वर्तन के कार्य की ओर कोई संकेत न किया।

धर्म परिवर्तन के बाद भी हरिजन

११ मार्च सन् १९५४ ई० को हैदराबाद के स्थानीय शासन मन्त्री श्री गोपाल राव एकबोटे ने एक प्रश्न के उत्तर में बतलाया कि राज्य न्यायविभाग के अनुसार यदि कोई परिगणित जाति का व्यक्ति ईसाई धर्म अपना लेता है तब भी वह परिगणित जाति का सदस्य होने के नाते प्राप्त लाभों से वंचित नहीं होगा। मदिरा तालुके की एक पंचायत में एक हरिजन सदस्य नामजद किया गया। वहां की जनता ने यह अपील की

कि वह हरिजन न होकर ईसाई है। इस अपील को विभाग के निर्णय पर ठुकरा दिया गया।

अब मैं अपनी सरकार से पूछना चाहता हूँ कि क्या उसकी इस घातक नीति के परिणाम स्वरूप देश के समस्त हरिजन ईसाई बनने को प्रोत्साहित नहीं होंगे? क्योंकि इस प्रकार अमेरिका तथा सरकार दोनों से ही उन्हें आर्थिक सहायता मिल सकेगी। मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि प्रयत्न करने पर भी मैं आज तक अपनी सरकार की आन्तरिक मनोवृत्ति को नहीं समझ पाया, क्योंकि गत चुनावों के अवसर पर इसी सरकार ने उन महानुभावों को जो कि जन्म से हरिजन थे, परन्तु आर्य समाज की कृपा से ब्राह्मणों की कोटि में आ गये थे, हरिजन सीट के लिये योग्य उम्मीदवार तब तक स्वीकार नहीं किया जब तक कि उन्होंने स्पष्ट रूप से अपने को शुद्ध हरिजन घोषित नहीं कर दिया। उदाहरणार्थ हैदराबाद राज्य में ही गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक श्री शंकरदेव जी अपने को हरिजन घोषित करने के पश्चात् ही चुनाव के लिये खड़े हो सके, जिसका उन्हें तथा आर्य समाज दोनों को हार्दिक खेद रहा। परन्तु महान् आश्चर्य की बात है कि वह नियम अब ईसाइयों के लिये न जाने कैसे ढीला हो गया। क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता कि या तो सरकार स्वयं देश द्रोहियों को अनुचित प्रोत्साहन दे रही है या उसके अन्दर ऐसे व्यक्ति घुस आये हैं जो अमेरिका के एजेन्ट और उसके शत्रु हैं।

क्या यह धर्म-परिवर्तन न्याय-युक्त है?

धर्म प्रचार में राज्य द्वारा हस्तक्षेप न करने का जब से सर्वमान्य सिद्धान्त बना है तब से अनेकों कुटिल राजनीतिज्ञों ने इसी को अपनी धूर्त लीला का माध्यम बना लिया है। उदाहरणार्थ भारत के मुस्लिम नेताओं ने इसी आड़ में पाकिस्तान का निर्माण किया और अब अमेरिका ने यहां इसी नीति का सहारा लिया है।

मैं मानता हूँ कि प्रजातन्त्र में प्रत्येक नागरिक को अपने विचार प्रकट करने और अपने मतानुयायी बनाने का अधिकार है और होना चाहिये। परन्तु इस अधिकार को भी सर्वथा निरंकुश रखना संकट से रहित नहीं है। भला जो व्यक्ति अपने विचारों को बलात् दूसरों पर थोपना चाहे अर्थात् अपने विचारों को क्रियात्मक रूप देने के निमित्त शक्ति अथवा हिंसा का प्रयोग करे, उसे सहन करना किस प्रकार उचित कहा जा सकता है। जो राष्ट्र ऐसे व्यक्तियों की उपेक्षा करता है, उसका अस्तित्व अधिक दिन टिक सकेगा इसमें मुझे सन्देह है। शोक कि हमारा राष्ट्र और हमारे राष्ट्रीय कर्णधार इसी भूल को अपना रहे हैं।

जिस प्रकार नया मुसलमान अल्ला ही अल्ला चिल्लाता है, उसी प्रकार प्रजातन्त्र के नये शिष्य हमारे शासकों ने इसके जन्मदाता ब्रिटेन, अमेरिका, रूस आदि देशों को भी मात कर इनसे भी आगे निकल गये हैं। इन्हें राजनीतिज्ञ कहें या धर्मात्मा यही समझ में नहीं आता। अपने प्रत्येक विरोधी को गोली से उड़वा देने का तो मैं भी पक्षपाती नहीं हूं, परन्तु विरोधी की गोली द्वारा स्वयं उड़ जाना भी तो बुद्धिमत्ता नहीं। ऐसी दूषित मनोवृत्ति वाले विरोधी को तो उसके गर्भ में ही समाप्त कर देने में बुद्धिमत्ता है।

भारत के मिशनरी लोग ऐसे ही विरोधियों में से एक हैं जो साम, दाम, दण्ड, भेद आदि सभी उपायों द्वारा इस राष्ट्र की लाश पर ईसाई-धर्म का झण्डा खड़ा कर इसे अमेरिका, ब्रिटेन आदि राष्ट्रों का पिछलग्गू बना देना चाहते हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या रुपयों की थैलियों तथा तलवार के बल पर दूसरों को पथ-भ्रष्ट करने वालों को किसी भी अवस्था में धर्म-प्रचारक कहा जा सकता है और इस प्रकार बलात् किये धर्म-परिवर्तनों को कोई सभ्य सरकार सहन कर सकती है? देश विभाजनके समय हुए भारतमें हुए बलात धर्म-परिवर्तनोंको अस्वीकार कर हमारी सरकार ने बुद्धिमत्ता का परिचय दिया था, परन्तु जब

मैं मानता हूँ कि प्रजातन्त्र में प्रत्येक नागरिक को अपने विचार प्रकट करने और अपने मतानुयायी बनाने का अधिकार है और होना चाहिये। परन्तु इस अधिकार को भी सर्वथा निरंकुश रखना संकट से रहित नहीं है। भला जो व्यक्ति अपने विचारों को बलात् दूसरों पर थोपना चाहे अर्थात् अपने विचारों को क्रियात्मक रूप देने के निमित्त शक्ति अथवा हिंसा का प्रयोग करे, उसे सहन करना किस प्रकार उचित कहा जा सकता है। जो राष्ट्र ऐसे व्यक्तियों की उपेक्षा करता है, उसका अस्तित्व अधिक दिन टिक सकेगा इसमें मुझे सन्देह है। शोक कि हमारा राष्ट्र और हमारे राष्ट्रीय कर्णधार इसी भूल को अपना रहे हैं।

जिस प्रकार नया मुसलमान [illegible] ही अल्ला चिल्लाता है, उसी प्रकार प्रजातन्त्र के नये शिष्य हमारे शासकों ने इसके जन्मदाता ब्रिटेन, अमेरिका, रूस आदि देशों को भी मात कर इनसे भी आगे निकल गये हैं। इन्हें राजनीतिज्ञ कहें या धर्मात्मा यही समझ में नहीं आता। अपने प्रत्येक विरोधी को गोली से उड़वा देने का तो मैं भी पक्षपाती नहीं हूं, परन्तु विरोधी की गोली द्वारा स्वयं उड़ जाना भी तो बुद्धिमत्ता नहीं। ऐसी दूषित मनोवृत्ति वाले विरोधी को तो उसके गर्भ में ही समाप्त कर देने में बुद्धिमत्ता है।

भारत के मिशनरी लोग ऐसे ही विरोधियों में से एक हैं जो साम, दाम, दण्ड, भेद आदि सभी उपायों द्वारा इस राष्ट्र की लाश पर ईसाई-धर्म का झण्डा खड़ा कर इसे अमेरिका, ब्रिटेन आदि राष्ट्रों का पिछलग्गू बना देना चाहते हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि क्या रुपयों की थैलियों तथा तलवार के बल पर दूसरों को पथ-भ्रष्ट करने वालों को किसी भी अवस्था में धर्म-प्रचारक कहा जा सकता है और इस प्रकार बलात् किये धर्म-परिवर्तनों को कोई सभ्य सरकार सहन कर सकती है ? देश-विभाजनके समय हुए भारतमें हुए बलात धर्म-परिवर्तनोंको अस्वीकार कर हमारी सरकार ने बुद्धिमत्ता का परिचय दिया था, परन्तु जब

वह ईसाइयों के सम्बन्ध में मौन धारण कर गई, तब ज्ञात हुआ कि इसकी वह सभ्यता केवल हिन्दुओं को ही दबाने तक सीमित थी।

बहुत से महानुभाव मेरी इस बात पर आपत्ति उठाते हुए कह सकते हैं कि जब ईसाई लोग यहां तलवार का प्रयोग ही नहीं करते तब किस प्रकार सरकार उन्हें अन्यों का धर्म-परिवर्तन करने से रोक सकती है। परन्तु श्रीमान् याद रहे ! तलवार की मार से पेट की मार अधिक भयंकर होती है। तलवार की मार करने वाला संसार की दृष्टि में तो गिर ही जाता है, परन्तु स्वयं उसका जीवन भी सदैव संकट में रहता है। इसके विपरीत धन की मार, शांत, घातक तथा प्रशंसा का पात्र होती है। अतः किसी की शारीरिक अथवा आर्थिक निर्बलताओं का लाभ उठाने वाला व्यक्ति किसी भी अवस्था में धर्म प्रचारक नहीं कहा जा सकता है।

आज अमेरिका द्वारा प्रदत्त थैलियों को लिये मिशनरी लोग भारत जैसे निर्धन देश और मुख्यतः यहां की निर्धनतम जाति आदिवासियों तथा हरिजनों में पागल भेड़ियों की भांति निर्भय होकर घूम रहे हैं और भूख, प्यास, बीमारी, सर्दी, गर्मी तथा अविद्या के सताये हजारों व्यक्ति इन्हें भगवान समझ नित्य इनके पेट में समा जाते हैं। क्या यह धर्म-परिवर्तन किसी भी अवस्था में न्याय संगत कहा जा सकता है ? यह धर्म-परिवर्तन नहीं, अपितु गरीबों पर अन्याय—अत्याचार है। प्रमाण स्वरूप यदि इनके धर्म में कुछ आकर्षण होता और इनके धर्म परिवर्तन में सत्यता होती तो ये पादरी लोग उल्लुओं की भांति जंगलों में अपना मुंह न छिपा कर यहां के धर्म-प्रिय लोगों में सर्वप्रथम प्रचार करते। परन्तु यह बात ध्रुव सत्य है कि सदियों से लगातार प्रचार करने के पश्चात भी ये धर्मावतार मुट्ठी भर समझदार लोगों को भी अपनी ओर न खींच सके। जो कुछ इनके चंगुल में फंसे भी वे केवल किसी न किसी बाह्य प्रलोभन के वशीभूत होकर ही ईसाई बने, बुद्धि तथा आत्मा की आवाज पर नहीं।

सरकार उत्तरदायी है

अतः मैं अपनी सरकार से सविनय प्रार्थना करना चाहता हूं कि देश की समृद्धि तथा निर्धनता का पूर्ण उत्तरदायित्व सरकार पर होता है। अतः यदि यहां के लोग गरीब हैं तो इसकी जिम्मेवार वह है। ऐसी अवस्था में गरीबों की शारीरिक तथा सांस्कृतिक रक्षा का उसे ही विशेष ध्यान रखना चाहिये। यदि वह ऐसा नहीं करती तो वह सरकार कहलाने योग्य नहीं। यदि हमारी सरकार सही रूप में अपने कर्तव्य का पालन करे तो उसे आदिवासियों तथा हरिजनों के धर्म-परिवर्तन को सर्वथा अवैध घोषित कर देना चाहिये। यदि वह ब्रिटिश काल में हुए धर्म-परिवर्तनों पर विचार करने में अपने को असमर्थ समझे तो कम से कम स्वतन्त्रता के पश्चात्, जिस काल की जिम्मेवारी उस पर है उसमें हुए इनके धर्म-परिवर्तनों को अवैध घोषित कर देना चाहिये और भविष्य के लिये इस सम्बन्धी कानून बना दे कि जब तक हरिजनों तथा आदिवासियों की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति ठीक नहीं हो जाती तब तक उनमें सिवाय वैदिक धर्मी प्रचारकों के अन्य प्रचारक प्रचार नहीं कर सकते हैं।

यदि हमारी सरकार ने ऐसा नहीं किया, जैसा कि इसकी वर्तमान साधु नीति से संकेत मिलता है तो उसका ही अस्तित्व नहीं, अपितु इस देश की स्वतन्त्रता तथा संस्कृति दोनों ही संकट में पड़ जायंगी। आशा है हमारे नेता अपनी नीति पर पुनर्विचार करने का कष्ट करेंगे।

उपसंहार

मैं पाठकों को अधिक समय न लेता हुआ यह कहना चाहता हूं कि आज भारतीय राष्ट्र को समाप्त करने अथवा इसे अपना क्रीत दास बनाने के निमित्त मुसलमानों, कम्युनिस्टों तथा ईसाइयों द्वारा यहां भयंकर षडयन्त्रों की रचना हो रही है जिनमें से मैंने केवल मिशनरियों की कुचालों की ओर संकेत मात्र किया है।

इनके भूतकाल पर दृष्टिपात कराते हुए मैंने यह बतलाने की चेष्टा की है कि इनकी भोली-भाली सूरत, इनकी सेवा तथा प्रेम के पीछे एक अति ही दूषित मनोवृत्ति छिपी है कि जिसने संसार के अनेकों राष्ट्रों को निगल लिया और अब भारत को अपना ग्रास बनाना चाहती है।

मैं देश प्रेमियों और मुख्यतः आर्य जाति के सपूतों को चेतावनी देना चाहता हूँ कि वे केवल नदियों को बांधने, नहरें निकालने, पहाड़ों को तोड़ने तथा बड़े २ कल-कारखाने लगाने में ही मस्त न रहें, अथवा उनकी खुशी में इतने पागल न बनें कि उन्हें अपने घर में लगाई जा रही आग ही दृष्टिगोचर न हो, अन्यथा जिस समय वे इन नदियों के बांध बांधकर घर लौटेंगे, तो उन्हें अपना घर ही भस्मीभूत हुआ मिलेगा और फिर स्वयं भी उसी अग्नि में जलकर मर जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग उनके सन्मुख न रह जायगा।

यह शीत युद्ध है जो कि विदेशियों ने यहां प्रारम्भ किया है। इस युद्ध की तीव्रता एटम बमों की मार से भी हजारों गुना अधिक होती है। एटम बम जहां चलता है वहां राख के ढेर के सिवाय कुछ नहीं छोड़ता, परन्तु जहां शीत युद्ध का आक्रमण होता है वहां सब कुछ ज्यों का त्यों रहता हुआ भी अपना अस्तित्व खो बैठता है अर्थात् उस राष्ट्र की समस्त चहल-पहल ज्यों की त्यों बनी रहती है, और वहां के लोग प्रसन्नता पूर्वक स्वतः अपनी राष्ट्रीयता की अन्त्येष्टि कर उसके स्थान पर विदेशी राष्ट्रीयता की ध्वजा फहरा देते हैं, या दीमक की भांति शीत युद्ध की मार से वह राष्ट्र इतना जर्जर हो जाता है कि फिर एक जरा सा हवा का झोंका उसके समस्त ढांचे को चूर-चूर करने में समर्थ हो जाता है। यदि शीतयुद्ध की करुण कहानी आपको सुननी है तो युरुप तथा मध्य एशिया की उन कब्रों, स्तूपों तथा प्राचीन अवशेषों से जाकर सुनो, जिन्होंने बड़े २ शक्तिशाली राष्ट्रों को इसकी गोद में बिना रक्त बहाये विलीन होते देखा है। स्वयं आर्य जाति का

इतिहास इसका प्रबल साक्षी है और पाकिस्तान इसी युद्ध का चमत्कार है।

असली दोषी कौन

भारत में विधर्मियों तथा विदेशियों द्वारा चलाये जा रहे इन कुचक्रों का पूर्ण उत्तरदायित्व सरकार के मत्थे मढ़ देना भी एक भयंकर भूल है। वास्तव में देखा जाय तो इन षडयन्त्रों का मूलाधार हैं हमारी सामाजिक कुरीतियां अर्थात् हमारा अन्ध-विश्वास, रूढ़िवाद, छूत आदि अवगुण हैं। इन्हीं के कारण हमारे लाखों हरिजन भाई प्रतिवर्ष विधर्मी बन जाते हैं। तानाशाही शासनकाल में तो लोग विवश होकर इस प्रकार के अन्याय-अत्याचारों को सहन कर लेते थे, परन्तु अब जब कि प्रजातन्त्र का सर्वत्र बोलबाला है और प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्र का निर्माता बन गया है, तो इस प्रकार के घृणित तथा अपमानजनक जीवन को भला कोई व्यक्ति किस प्रकार सहन कर सकता है। सारांश में हमारी निर्धनता की अपेक्षा ये हमारी सामाजिक कुरीतियां ही हमारा अधिक सर्वनाश कर रही हैं, और इनके रहते कोई भी नेता, सरकार अथवा कानून हमारी रक्षा न कर सकेगा। अतः इन्हीं को दूर करने पर हमें अपनी पूरी शक्ति लगानी चाहिये।

अपने पौराणिक भाइयों से

इन सामाजिक कुरीतियों को बन्दरी के बच्चे की भांति अपने गले का हार बनाने वाले अपने पौराणिक भाइयों से सविनय प्रार्थना करना चाहता हूं कि सिद्धान्ततः अन्धविश्वास, रूढ़िवाद तथा छूत-छात संसार के किसी भी मनुष्य, जाति अथवा राष्ट्र की उन्नति का शत्रु होता है, परन्तु यदि आप इन्हें किसी भी अवस्था में छोड़ने को तैयार नहीं है तो फिर मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि आप कपिल, कणाद, व्यास आदि महर्षियों का ही अन्धानुकरण करें, कि जिन्होंने हमारे स्वर्णिम इतिहास का निर्माण

किया। परन्तु शोक ! आपने तो अन्धानुकरण भी उन व्यक्तियों का किया है कि जो स्वयं हमारे पतन काल की उपज थे, और जिनकी अदूरदर्शिता ने बाहर से पधारे लंगड़े-लूले यवन आक्रान्ताओं के सन्मुख हमारे वीर योद्धाओं की तलवारों को कुण्ठित कर देश के स्वाभिमान तथा स्वतन्त्रता को उनके द्वारा पादाक्रान्त करा दिया।

मुझे आश्चर्य है कि आपको अपने उन प्रातः स्मरणीय पूर्वजों की याद क्यों नहीं आती जो किसी दिन देश की सीमाओं को पार कर विदेशों में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ गये, और वहां जाकर उन्होंने यवनों को आर्य बनाया ! जिनके के पुरुषार्थ के फल स्वरूप आर्य जाति ने एक दिन संसार में चक्रवर्ती राज्य की स्थापना की। यदि यह इतिहास अति प्राचीन होने के नाते आपके मस्तिष्क में नहीं आता तो आपको बौद्धकालीन इतिहास की ही याद कर लेनी चाहिये कि जब आपके पूर्वज बौद्ध भिक्षु बन कर एशिया के कौने २ में छा गये और उन्होंने समस्त एशियायी देशों को बुद्ध के चरणों में लाकर खड़ा कर दिया। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि उस समय हमारी बहिनें भी एक बड़ी संख्या में प्रचारक बन विदेशों को गईं। कुछ समय पश्चात् जब बाल ब्रह्मचारी शंकराचार्य जी महाराज ने बौद्धों को वैदिक धर्म के विपरीत जाते देखा तो उन्होंने ऐसा शुद्धि का बिगुल बजाया कि भारत के समस्त बौद्ध देखते २ पुनः आर्य बनकर खड़े हो गये।

आपको विदित होना चाहिये कि इन महापुरुषों को शुद्धि की प्रेरणा उस समय महर्षि दयानन्द अथवा आर्य समाज से नहीं मिली थी, अपितु सत्य सनातन वैदिक धर्म से ही मिली थी। परन्तु आश्चर्य इस बात का है कि आप अपने को इनका भक्त बतलाते हुए भी इनके विपरीत आचरण कर रहे हो। इस आचरण ने हमारे लगभग ग्यारह करोड़ आर्यों को तो मुसलमान तथा ईसाई बना दिया, और अब बारह करोड़ हरिजन तथा ढाई करोड़ आदिवासी हम से अलग होने की स्थिति में हैं। इनके अलग हो जाने पर जो देश की स्थिति होगी,

उसके स्मरण मात्र से हृदय कांप उठता है, क्योंकि उस समय पचास प्रतिशत जनसंख्या विधर्मी होगी।

आज शुद्धि की तो बात दूर रही अपनों को ही अपने साथ बनाये रखने की जटिल समस्या हमारे सम्मुख है, परन्तु खेद के साथ कहना पड़ता है कि राजनीति का यह मोटा प्रश्न भी रामराज्य परिषद के नेता श्री करपात्री जी की समझ में नहीं आया, अन्यथा वह १७ फरवरी सन् १९५४ को काशी के विश्वनाथ जी के मन्दिर में हरिजन प्रवेश पर सत्याग्रह कर गिरफ्तार होने की भूल न करते। श्री करपात्री जी को पता होना चाहिये कि हरिजनों का मन्दिर प्रवेश तो इस गम्भीर समस्या के समाधानार्थ एक अति ही नगण्य उपाय है। ऐसा हो जाने पर यदि इसका समाधान हो जाय तो यह हम सबका सौभाग्य ही होगा, परन्तु ऐसा होता प्रतीत नहीं होता।

अतः मैं अपने पौराणिक भाइयों से कर जोड़ प्रार्थना करता हूं कि वे समय तथा स्थिति को पहिचान कर अपने कर्त्तव्य का निर्धारण करें, और वही करें जो कि उनके पूर्वजों ने इन पतन काल के पांच हजार वर्षों से पूर्व किया था।

आपत्ति का सामना करना सीखो

संसार के प्रत्येक व्यक्ति, धर्म, संस्था, जाति एवं राष्ट्र के सम्मुख किसी न किसी रूप में ऐसे संकट काल आते ही हैं कि जब उनका अस्तित्व ही संकट में पड़ जाता है। ऐसी अवस्था में जो व्यक्ति अथवा जाति रूढ़िवाद के बोझे को फैंक देश, काल, परिस्थिति के अनुकूल उससे संघर्ष करने का दृढ़ निश्चय कर लेती है, वह जीवित रह जाती है, अन्यथा वह काल की गोद में विलीन हो जाती है।

आपत्ति का सामना किस प्रकार किया जाता है इसका प्रत्यक्ष उदाहरण तब मिलता है जब कि मलेरिया, हैजा आदि बीमारी मनुष्य पर

आक्रमण करती हैं। जिस प्रकार इनसे बचने के लिए समझदार मनुष्य अपने नित्य कर्मों को छोड़ उपवास, चारपाई, दवा आदि का सहारा लेता है और स्वस्थ हो जाने पर पुनः अपने पूर्व जीवन-कार्यों को धारण कर लेता है, ठीक उसी प्रकार राजनैतिक तथा धार्मिक संस्थाओं को करना होता है। ईसाई तथा मुसलमान इस कला में अति ही प्रवीण हैं, परन्तु शोक कि आर्य जाति के लोगों ने इस कला को बिल्कुल भुला दिया है और रूढ़िवाद के दल-दल में फंस गई है। यही है हमारे पतन का मूल कारण। अतः जब तक आर्य जाति के नवयुवक इस कला में अपने पूर्वजों की भांति विशेषज्ञ न बनेंगे तब तक ईसाई, मुसल-मान, हरिजन आदि समस्यायें प्रत्येक क्षण उसकी मृत्यु की घण्टी बजाती ही रहेंगी।

आर्य जनों से

आर्य जनों से मैं एक बात विशेष रूप से कहना चाहता हूँ कि उन्हें अपने मस्तिष्क से यह बात निश्चित रूप से निकाल देना चाहिये कि स्वतन्त्रता की प्राप्ति के पश्चात् अब उनका भार कुछ कम हो गया है। उन्हें विदित होना चाहिये कि उनका भार कम नहीं हुआ अपितु पहिले से कई गुना बढ़ गया है, कारण कि दासता काल में तो विधर्मियों के अत्याचारों से आर्य जाति में धर्म-प्रेम की भावना सदैव जागृत रहती थी परन्तु स्वतन्त्रता की प्राप्ति के पश्चात् अब उस उत्प्रेरक शक्ति का अभाव होगया है और साथ ही यहां धर्मनिर्पेक्ष राज्य की स्थापना होगई है। धर्मनिर्पेक्षता का कुप्रभाव केवल आर्य जाति पर पड़ रहा है अर्थात् इसके नवयुवक बड़ी तीव्र गति से नास्तिक, तथा अधार्मिक बनते चले जा रहे हैं। इनकी स्थिति बिना पतवार की नौका के समान बनती जा रही है। ऐसी स्थिति में यदि आर्य समाज ने जागरूक होकर अपने कर्तव्य का पालन न किया तो भारतीयता के विलीन हो जाने का भयंकर संकट अवश्यम्भावी है।

इसके अतिरिक्त ईसाई, मुसलमान तथा कम्युनिष्टों की समस्याओं का समाधान, जो कि आज हमारी राष्ट्रीयता को सीधी चुनौती दे रही हैं, आर्यसमाज के अतिरिक्त किसी भी राष्ट्रीय संस्था की शक्ति से बाहर है। इस सत्य को आज लगभग सभी व्यक्ति अनुभव कर रहे हैं और वह टकटकी लगाकर आर्यसमाज की ओर देख रहे हैं अर्थात् आर्यसमाज के पिछले इतिहास को देखते हुये देश इसकी विशेष घोषणा तथा योजना की बड़ी बेचैनी से प्रतीक्षा कर रहा है।

अतः मैं अपने आर्य वीर बन्धुओं से पूछना चाहता हूं कि वे अब कब तक इन अराष्ट्रीय तत्वों के विध्वंस कार्यों को सहन करते रहेंगे। याद रहे ! धैर्य की भी कोई सीमा होती है और अब वह पार हो चुकी है। इससे आगे अब मौन रहने में प्रत्येक क्षण हमारे विनाश की ही भूमिका बन रही है। इसलिये हमें तुरन्त अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिये और तब तक शान्ति से नहीं बैठना चाहिये कि जब तक देश का धार्मिक तथा राजनैतिक वातावरण पूर्णतः शुद्ध न हो जाय।

हरिजन भाईयों से

हरिजन तथा आदिवासी भाईयो ! आपने अपने को उच्च वर्ण का समझने वाले व्यक्तियों के अन्यायों, अत्याचारों से उत्पन्न घृणित तथा असह्य वातावरण में भी जिस धैर्य तथा प्रेम का परिचय दिया और पशुओं से भी गिरा जीवन व्यतीत करते हुये आप ने वैदिक धर्म के प्रति जो अटूट आदर्श प्रेम का प्रदर्शन किया उसके लिये आर्य जाति आप की सदैव आभारी रहेगी और आपके इस त्याग तथा बलिदान की अनुपम कहानी इसके इतिहास सदैव में स्वर्णिम अक्षरों में सुशोभित होगी। अपने काले कारनामों को स्मरण कर उच्च वर्ण के लोग कभी आपके सन्मुख सिर उठा सकेंगे इसमें मुझे सन्देह है।

परन्तु महान् आश्चर्य की बात है कि अनेक भंवरों तथा तूफानों से टक्कर लेती हुई जब आपकी धर्म-नैया किनारे के समीप पहुंची तो आपने साहस बिसारना प्रारम्भ कर दिया। आज तो आपका त्याग तथा बलिदान सुन्दर प्रभात के रूप में आप के स्वागतार्थ फूलों की मालायें लिये खड़ा है और सर्वत्र ही आपके स्वागत-समारोहों की तैयारियां हो रही हैं। ऐसे समय पर हिम्मत हारना बुद्धिमत्ता का कार्य कदापि नहीं कहा जा सकता है।

मुसलमानों तथा अंगरेजोंके समय आपके मुसलमान तथा ईसाई बनने की बात कुछ समझ में आती थी क्योंकि इससे आपको राज्याधिकारियों द्वारा कुछ लाभ पहुँचने की सम्भावना थी; परन्तु आज तो वातावरण ही सर्वथा उलटा बन गया है। आज तो विशेष सुविधायें मुसलमानों तथा ईसाइयों को नहीं अपितु हरिजनों तथा आदिवासियों को मिल रही हैं। मुसलमानों तथा ईसाइयों की ईमानदारी पर तो आज सरकार तथा जनता दोनों को ही सन्देह होने लगा है, क्योंकि इनमें बहुतों के हृदय तथा मस्तिष्क विदेशों के साथ हैं। भारतीय जनता ऐसे लोगों को कदापि सम्मान की दृष्टि से नहीं देख सकती है। अतः सदियों तक अपमान सहन करने के पश्चात् आज फिर जान-बूझ कर अपमान तथा सन्देह के विदेशी गड्ढे में गिरना आप की अदूरदर्शिता का ही परिचायक होगा।

पर्वतीय क्षत्रिय वीरों से

अपने पर्वतीय क्षत्रिय आर्य वीरों से मेरी प्रार्थना है कि वे आर्य जाति के ही सम्माननीय अङ्ग थे, हैं और रहेंगे। आपको आदिवासी बना कर यहां की बहुसंख्यक आर्य जनता से अलग करनेका अंगरेजोंने एक षडयन्त्र रचा था; जो स्वतन्त्रताके पश्चात्‌किसी भी अवस्था में सहन नहीं किया जा सकता है। विदेशी तथा विधर्मी आक्रान्ताओं के प्रभाव से दूर रहकर आपने आर्य संस्कृति की अनेकों

अच्छी परम्पराओं को आज तक सुरक्षित रक्खा है जिसके लिये आप धन्यवाद के पात्र हैं।

आप अपनी नग्नावस्था को देख कर निराश न हों और न अपने को कुछ का कुछ विचारें। आप आदित्य ब्रह्मचारी वीर वर हनुमान, धनुर्धारी एकलव्य, कुशल इंजीनियर जामवन्त व नील, भक्त प्रहलाद संसार के प्रथम महाकवि बाल्मीकि ऋषि आदि महापुरुषों की सन्तान हैं। संकट काल में मर्यादा पुरुषोत्तम राम को जो चिर स्मर्णीय सह योग आपके पूर्वजों ने दिया, क्या वह किसी भी अवस्था में भुलाया जा सकेगा। आज कौन ऐसा आर्य है जो इस बात से परिचित नहीं है कि महाबलि भीम ने आपकी कन्या हिडम्बा से विवाह किया था।

अतः आपको अपने अतीत कालिक महान् गौरवपूर्ण इतिहास पर अभिमान कर अपने को आर्यावर्त के निर्माताओं में से एक समझना चाहिये। मिशनरी लोग असभ्य, जंगली दुराचारी कह कर आपको संसार में बदनाम कर रहे हैं और आपके इस गौरवमय अतीतकाल पर पानी फेरने की चेष्टा कर रहे हैं। अतः आपको सजग रहकर इनसे अपनी रक्षा करनी चाहिये और इनसे स्पष्ट कह देना चाहिये कि जब हजारों वर्षों की कड़ी यन्त्रणायें तथा कठोर जंगली जीवन उनके धार्मिक विश्वास को न डगमगा सका, तो उनके चन्द चांदी के टुकड़े भला किस प्रकार उन्हें पथ-भ्रष्ट कर सकते हैं अर्थात् वे आर्य हैं और आर्य ही बन कर रहेंगे।

मिशनरियों को सुसम्मति

अन्त में मैं भारत में पधारे अपने विदेशी मिशनरी भाइयों से सविनय प्रार्थना करना चाहता हूं कि वे महर्षि कपिल, कणाद, जैमनि तथा दयानन्द की जन्म-भूमि में पधारने के लिए अपना अहोभाग्य समझें और अपनी बुद्धि तथा शक्ति को राजनैतिक षड्यन्त्र अथवा अन्ध विश्वास में व्यर्थ नष्ट न कर इसका सदुपयोग

36 Church of God mission.
37 Christian Literature Society.
38 Christian and missionary Alliance.
39 Cambridge mission (Delhi).
40 Christian mission in many Lands.
41 Church missionary Society.
42 Church of the Nazarene.
43 Church of England.
44 Church of Scotland mission.
45 Sisters of the Church.
46 Community of S. John the Baptist.
47 Community of S. Mary the Virgin.
48 Community of Saint Stephen (Delhi).
49 Children's Special Service mission.
50 Church of Sweden mission.
51 Ceylon & Indian General mission.
52 Disciples of Christ India mission.
53 Danish Church mission.
54 Danish missionay Society.
55 Danish Tent mission.
56 Dublin University mission.
57 Evangelical National missionary Society of Stockholm.
58 Presbyterian Church of England mission.
59 Evangelical Synod of North America.
60 Free Church of Finland mission.

भारत में कार्य कर रही

मिशनरी सोसायटीज़

और

ईसाई संस्थायें

क्रम सं०	नाम
1	American Advent Mission.
2	American Arcot Mission.
3	American Baptist Foreign Mission Society.
4	American Baptist Foreign Mission Society (Bengal Orissa).
5	American Board of Commissioners for Foreign Missions.
6	American Baptist Foreign Mission Society (Assam).
7	American Baptist Foreign Mission Society (Telugu).
8	American Churches of God Mission.
9	American Evangelical Lutheran Mission.
10	American Friend's Mission.
11	Assemblies of God Mission.
12	All Saint's Sisterhood.

अच्छी परम्पराओं को आज तक सुरक्षित रक्खा है जिसके लिये आप धन्यवाद के पात्र हैं।

आप अपनी नग्नावस्था को देख कर निराश न हों और न अपने को कुछ का कुछ विचारें। आप आदित्य ब्रह्मचारी वीर वर हनुमान, धनुर्धारी एकलव्य, कुशल इंजीनियर जामवन्त व नील, भक्त प्रह्लाद संसार के प्रथम महाकवि बाल्मीकि ऋषि आदि महापुरुषों की सन्तान हैं। संकट काल में मर्यादा पुरुषोत्तम राम को जो चिर स्मरणीय सहयोग आपके पूर्वजों ने दिया, क्या वह किसी भी अवस्था में भुलाया जा सकेगा। आज कौन ऐसा आर्य है जो इस बात से परिचित नहीं है कि महाबलि भीम ने आपकी कन्या हिडम्बा से विवाह किया था।

अतः आपको अपने अतीत कालिक महान् गौरवपूर्ण इतिहास पर अभिमान कर अपने को आर्यावर्त के निर्माताओं में से एक समझना चाहिये। मिशनरी लोग असभ्य, जंगली दुराचारी कह कर आपको संसार में बदनाम कर रहे हैं और आपके इस गौरवमय अतीतकाल पर पानी फेरने की चेष्टा कर रहे हैं। अतः आपको सजग रहकर इनसे अपनी रक्षा करनी चाहिये और इनसे स्पष्ट कह देना चाहिये कि जब हजारों वर्षों की कड़ी यन्त्रणायें तथा कठोर जंगली जीवन उनके धार्मिक विश्वास को न डगमगा सका, तो उनके चन्द चांदी के टुकड़े भला किस प्रकार उन्हें पथ-भ्रष्ट कर सकते हैं अर्थात् वे आर्य हैं और आर्य ही बन कर रहेंगे।

मिशनरियों को सुसम्मति

अन्त में मैं भारत में पधारे अपने विदेशी मिशनरी भाइयों से सविनय प्रार्थना करना चाहता हूं कि वे महर्षि कपिल, कणाद, जैमनि तथा दयानन्द की जन्म-भूमि में पधारने के लिए अपना अहोभाग्य समझें और अपनी बुद्धि तथा शक्ति को राजनैतिक षड्यन्त्र अथवा अन्ध विश्वास में व्यर्थ नष्ट न कर इसका सदुपयोग

करें। अन्यथा वे अपनी मूर्खता तथा अदूरदर्शिता से अपना, अपने देश का तथा समस्त मानव जाति का अहित ही करेंगे। उन्हें विदित होना चाहिये कि महर्षि दयानन्दकी कृपासे आर्य जाति जगग ई है और अब वह पहले वाली मूर्खता कदापि नहीं कर सकती है। अब तो वह ब्याज समेत अपने बिछुड़े हुये बन्धुओं को वापिस लेने के लिये आतुर है। ऐसी स्थिति में इसके नवयुवकों को पथ-भ्रष्ट करने के स्वप्न लेना अपनी अज्ञानता ही प्रकट करना है।

अतः मैं ईसाई पादरियों को उन्हीं के एक साथी रेवरन्ड आबट के जीवन तथा विचारों द्वारा ही उन्हें सुसम्मति देना चाहता हूँ। अमेरिकन पादरी रेवरन्ड आबट पूना में प्रचारार्थ पधारे थे। अपने प्रचार दारा उन्होंने बहुत से अज्ञजनों को ईसाई बनाया। यह देखकर पूना के एक आर्य विदान ने उनसे पूछा कि "क्या तुमने हिन्दू धर्म का अध्ययन किया है।" उसने कहा कि "नहीं"। फिर उसने रे० आबट से कहा कि जब वह हिन्दू धर्म को खराब और ईसाई धर्म को अच्छा बतलाते हैं तो उन्हें ऐसा कहने से पूर्व हिन्दू धर्म का अध्ययन करना चाहिये। इस पर आबट साहब ने हिन्दू धर्म का अध्ययन प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने संस्कृत तथा मराठी भाषा सीखी और उसने एकनाथ, ज्ञानेश्वर आदि सन्तों के ग्रन्थों का अध्ययन किया, उनके चरित्र भी अंगरेजी में प्रकाशित किये, उनके तत्व ज्ञान को अंगरेजी में प्रकाशित किया। ४-५ ग्रन्थ जब उन्होंने अंगरेजी में प्रकाशित कर दिये तब उनका मन बदल गया। उन्होंने अपने अमेरिका मिशन को जो पत्र लिखा वह प्रत्येक मिशनरी के लिये अनुकरणीय है। पत्र निम्न प्रकार था—

"यहां भारत में सैकड़ों ईसा (अर्थात् ईसा जैसे सन्त) हैं। यहां ईसाई प्रचारक एक ईसा को बतलाकर क्या करेंगे? इसलिये भारत में ईसाई धर्म प्रचार करने का कोई प्रयोजन नहीं है। भारत ने आज तक सैकड़ों और सहस्रों ईसा उत्पन्न किये हैं; और भविष्य में भी

भारत से अनेक ईसा पैदा होंगे। इस कारण भारत में ईसाई मत का प्रचार करने का कोई प्रयोजन नहीं है। यहां से ईसाई मत का प्रचार-कार्य एक दम बन्द करना चाहिये. मैं भारत में ईसाई मत का प्रचार करने आया था। यहां आकर मैंने यहां के सन्तों के ग्रन्थों का अध्ययन किया और जान लिया है कि यहां भारत में तो सत्य धर्म का अगाध समुद्र है। इसलिये भारतवर्ष में कोई ईसाई अपने मत का प्रचार न करे; परन्तु यहां से सत्य धर्म का ज्ञान प्राप्त करे। मैंने ईसाई मत का प्रचार बन्द किया है और मैं मिशन से त्याग-पत्र देता हूँ। आज के पश्चात् मैं ईसाई धर्म का प्रचार नहीं करूंगा। इतना ही नहीं, अपितु मेरी सम्पत्ति जो अमेरिका में है, वह लगभग ८ लाख रुपये की है, वह सब की सब मैं पूना के "भारत इतिहास संशोधक मण्डल" को देता हूँ। इस धन से भारतीय सन्त ग्रन्थों के अंगरेजी अनुवाद छपते रहें और यह कार्य भा० इ० सं० मण्डल संस्था करे।"

आशा है पादरी लोग रे० आबट के जीवन तथा सदुपदेश से लाभ उठाकर अपने जीवन को सफल बनायेंगे।

ईसाई षड़यन्त्र के मुख्य शिकार आदिबासी

क्र०सं०	प्रान्त	आदिबासियों की जाति संख्या	आदि बासियों की जन संख्या
१	विहार उड़ीसा	७६	७५,१५,३८२
२	आसाम	१८	२६,६७,१०३
३	दक्षिण भारत	३६	५, ६२,०३७
४	बम्बई प्रदेश	१६	१६,१४,२४८
५	हैदराबाद	१६	—
६	मध्य प्रदेश	३८	४४,३६,८३६
७	मध्य भारत	१२	—
८	राजस्थान	७	१६,४०,००५
९	उत्तर प्रदेश	१७	२, ८६,४२२

61 Fellowship of Heavenly way (Moradabad).

62 Free Methodist misson of North America.

63 General conference mennonite mission

64 Godaveri Delta mission.

65 Gossner Evangelical Lutheran Church

66 Gwalior Presbyterian mission.

67 Heart of India mission Band.

69 Hephzibah Faith missionary Association

69 Highways and Hedges mission (Madras)

70 India Christian mission.

71 Indo Danish mission.

72 Indian mission Churches of Christ in Great Britain.

73 Indian missionary Society of Tennevelly.

74 Indian Presbyterian Church.

75 Irish Presbyterian mission,

76 Jacobite Syrian Church.

77 Jungle Tribes mission of I. P. M.

78 Kunku and Central India Hill mission.

79 Kanrese Evangelical mission.

80 Keith-Falconer mission of U. F. C. M.

81 London missionary Society.

82 Lakher Pioneer mission.
83 Metropolitan Church Association.
84 Mission of the Aristocracy of India.
85 Missionary Association of S. Mary, S. John, & all Saint.
86 Madras Christian College.
87 Messouri Evangelical Lutheran Church
88 Methodist Episcopal Church.
89 Malabar Mission.
90 Methodist missionary Society of Australia.
91 Malankara Mar Thoma Syrian Christian Evangelistic Association.
92 Morovian mission.
93 Mourbhanj Evangelical mission.
94 Missionary Society of the Church of England.
95 Missionary Settlement for University Women.
96 Madras Yamil mission.
97 Mar Thoma (Reformed) Syrian Church
98 National Church of India.
99 North East India General mission.
100 Norwegian Evangelical mission.
101 Nashville mission of the churches of Christ.
102 National missionary Society of India

103 Newzealand Baptist missionary Society
104 ,, Presbyterian mission.
105 Old Church Hebrew mission (Calcutta)
106 Ohio Evangelical Lutheral mission.
107 Indian Order of the Holy Name (Poona).
108 Oxford mission to Calcutta.
109 Pentecost Bands of the World.
110 Presbyterian Church in India mission.
111 Poona and Indian village mission.
112 Peniel mission and Orphanage.
113 Regions Beyond missionary Union.
114 Reformed Episcopal church of America
115 Ramabai mukti mission-
116 Reformed Presbyterian mission.
117 Religious Tract & Book Society.
118 Salvation Army,
119 Swedesh Alliance mission.
120 Scandinavian Alliance missin of North America.
121 Strict Baptist mission.
122 Strict Baptist missionary Association (S. India.)
123 Serampore College.
124 Scottish mission Churches (Calcutta).
125 Seventh Day Adventist.
126 Scottish Episcopal Church mission.
127 South India United Church.
128 Sharannagar mission.
129 Santal mission of the Northern churches.

130 Society for Promoting Christian Knowledge.
131 Society for the Propagation of the Gospel.
132 Society of S. Faith.
133 Society of John the Evangelist.
134 Sisters of S. Margaret.
135 Saint Andrew's colonial homes.
136 Swedish Baptist mission.
137 Swedish mission.
138 Tehri Anjuman-i-Basharat.
139 Tanakpur Bible & medical mission.
140 Tamil coolie mission.
141 United Free church of Scotland mission
142 Women's Foreign mission of the United Free church of Scotland.
143 Union mission Tuberculosis Sanatorium.
144 United Original Secession church of Scotland.
145 United Theological college (Banglore).
146 Women's christian college (Madras).
147 Women's christian medical college,
148 Welsh calvinistic methodist Foreign mission.
149 Women's Foreign missionay Society.
150 Weleyan methodist missionary Society
151 Women's Union missionary Society of America.
152 Young men's christian Association.
153 Young women's christian Association.
154 Zenana Bible & medical mission.

सभा द्वारा प्रचारित पुस्तकें

१. कर्तव्य दर्पण (श्री पं० नारायण स्वामी जी महाराज) मू० ॥)

२. आर्य पर्व पद्धति १)

३. गोहत्या क्यों =)

४. चमड़े के लिए गोवध -)

५. प्रजा पालन)॥

६. गो करुणानिधि -)

७. सिनेमा मनोरंजन या सर्वनाश =)

८. भजन भास्कर १॥)

९. सनातन धर्म व आर्यसमाज ।=)

१०. दयानन्द सिद्धान्त भास्कर २)

११. राजधर्म ॥)

१२. योग रहस्य १)

१३. विद्यार्थी जीवन रहस्य ॥=)

१४. उपनिषद्
(श्री म० नारायण स्वामी जी)
ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक,
ट=) ॥) ॥) ।= ।≡)
माण्डयूक, ऐतरेय, तैत्तिरीय बृहदारण्यक
।) ।) १) ४)

१५. प्राणायाम विधि ≡)

१६. मांसाहार घोर पाप -)

१७. आत्मकथा २।)

१८. वैदिक योगामृत ॥=)

१९. मुक्ति से पुनरावृत्ति ।=)

२०. धर्म और उसकी आवश्यकता १)

२१. आर्ष योग प्रदीपिका २॥)

२२. उपनिषद् सुधासार २।)

२३. बौद्धमत और वैदिक धर्म १॥)

२४. महर्षि दयानन्द (जीवन) ॥=)

२५. सत्यार्थ प्रकाश ॥≡)

२६. संस्कार विधि ॥-)

२७. आर्याभिवि...

२८. विदुर प्रजा...

२९. नारद नीति...

३०. कणिक नी...

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, बलिदान ...

सार्वदेशिक प्रेस, पटौदी हाउस, दरियागंज देहली।

कुपात्रो को दान न देवे सुपात्रो को देवे.

ACCEPTED HERE

Scan & Pay Using PhonePe App

keshrinandan jha

आपके दान की हमे अत्यंत आवश्यकता हे.